Booklet - 05

ZONE TECH

ZONE TECH

Best Institute For Assistant & Junior Engineer

RPSC-AEn Mains

Work Book Solution

for

सामान्य हिंदी

iOS

Google Play

Visit Our Website

www.zonetech.in

DOWNLOAD NOW

https://zonetech.in/downloads

1. सन्धि विच्छेद

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 8): निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

1.	दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को क्या कहते है?	सन्धि
2.	सन्धि कितने प्रकार की होती है?	तीन
3.	स्वर सन्धि के कितने भेद होते हैं?	पाँच
4.	निम्नलिखित में से एक शब्द सन्धि की दृष्टि से अशुद्ध है, उस शब्द का चयन कीजिए?	तद्रूप
5.	निम्नलिखित में से कौनसा शब्द स्वर सन्धि का उदाहरण है?	मन्वन्तर
6.	इनमें कौनसा स्वर सन्धि का उदाहरण है?	देवालय
7.	निम्नलिखित में से कौनसा शब्द वृद्धि सँन्धि का उदाहरण नहीं है?	गुरुपदेश
8.	निम्नलिखित में से दीर्घ सन्धियुक्त पद कौनसा है?	दैत्यारि

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों में दिये गये शब्दों में प्रयुक्त उपयुक्त सन्धि का नाम निर्देश कीजिए:-

9.	पवित्र -	अयादि सन्धि
10.	दयानन्द	दीर्घ सन्धि
11.	रवीश	दीर्घ सन्धि
12.	सदैव	व्यंजन सन्धि
13.	भानूदय	दीर्घ सन्धि
14.	सूर्योदय	गुण सन्धि
15.	हरिश्चन्द्र	विसर्ग सन्धि
16.	उच्चारण	व्यंजन सन्धि
17.	अभ्युदय	यण सन्धि
18.	अधोगति	विसर्ग
19.	निस्सृतधनि:सृत	विसर्ग
20.	गवीश	अयादि
21.	पवन	अयादि
22.	विद्यार्थी	दीर्घ
23.	वयोवृद्ध	विसर्ग
24.	सुरेन्द्र	गुण सन्धि
25.	परमोत्सव	गुण सन्धि
26.	देवैश्वर्य	वृद्धि सन्धि
27.	अध्ययन	यण सन्धि
28.	गायन	अयादि सन्धि

ZONE TECH

29.	धनैषी	वृद्धि सन्धि
30.	विश्वैक्य	वृद्धि सन्धि
31.	मत्यनुसार	यण सन्धि
32.	जगदीश	व्यंजन सन्धि
33.	सदाचार	व्यंजन सन्धि
34.	देवालय	दीर्घ सन्धि
35.	दुरात्मा	विसर्ग सन्धि
36.	मात्रानन्द	यण सन्धि
37.	पुरस्कार	विसर्ग सन्धि
38.	वाग्धारा	व्यञ्जन सन्धि
39.	श्रवण	अयादि सन्धि
40.	देव्युक्ति	यण सन्धि
41.	अभ्युत्थान	यण सन्धि
42.	भावुक	अयादि सन्धि
43.	तृष्णा	व्यञ्जन सन्धि
44.	महोपदेश	गुण सन्धि
45.	मातर्णि	अयादि सन्धि
46.	अन्वेषण	यण सन्धि
47.	सदाशय	व्यञ्जन सन्धि
48.	महेश	गुण सन्धि
49.	पुष्पावली	दीर्घ सन्धि
50.	शिवालय	दीर्घ सन्धि
51.	जगद्बन्धु	व्यंजन सन्धि
52.	गिरीश	दीर्घ सन्धि
53.	नीरज	विसर्ग सन्धि
54.	चरणामृत	दीर्घ सन्धि
55.	निश्चय	विसर्ग सन्धि
56.	पर्यावरण	यण सन्धि
57.	निस्तार	विसर्ग सन्धि
58.	अभ्यर्थी	यण सन्धि
59.	मनस्ताप	विसर्ग सन्धि
60.	मूँछकटा	व्यंजन सन्धि
61.	व्यायाम	यण सन्धि
62.	वाग्जाल	व्यंजन सन्धि
63.	जयद्रथ	व्यंजन सन्धि

ZONE TECH

64.	निर्जन	विसर्ग सन्धि
65.	उद्गार	व्यंजन सन्धि
66.	पावक	अयादि सन्धि
67.	पितृणम्	स्वर सन्धि
68.	नमस्कार	विसर्ग सन्धि
69.	दन्तौष्ठ	वृद्धि सन्धि
70.	निराशा	विसर्ग सन्धि
71.	तदिच्छा	व्यंजन सन्धि
72.	निस्सन्तान	विसर्ग सन्धि
73.	पित्रनुमति	यण सन्धि
74.	विपज्जाल	व्यंजन सन्धि
75.	उपेन्द्र	गुण सन्धि
76.	उन्नति	व्यंजन सन्धि
77.	उद्योग	व्यंजन सन्धि
78.	एकैक	वृद्धि सन्धि
79.	सुवन्त	व्यंजन सन्धि
80.	सुरेश	गुण सन्धि
81.	संताप	व्यंजन सन्धि
82.	नीरज	विसर्ग सन्धि
83.	मनोविज्ञान	विसर्ग सन्धि
84.	आच्छादन	व्यंजन सन्धि
85.	दुष्कर	विसर्ग सन्धि
86.	अजन्त	व्यंजन सन्धि
87.	मात्राज्ञा	यण सन्धि
88.	तेजोमय	विसर्ग सन्धि
89.	व्याकरण	यण सन्धि
90.	निरपराध	विसर्ग सन्धि
91.	निष्ठुर	विसर्ग सन्धि
92.	तरुच्छाया	व्यंजन सन्धि
93.	दुर्द्धर्ष	व्यंजन सन्धि
94.	सच्चिदानन्द	व्यंजन सन्धि
95.	दुर्जन	विसर्ग सन्धि
96.	दुस्थकार	विसर्ग सन्धि
97.	प्रत्याभूति	यण सन्धि
98.	सदैक्य	वृद्धि सन्धि

ZONE TECH

99. दिग्ज्ञान	व्यजंन सन्धि
100. तथैव	वृद्धि सन्धि
101. वाग्वैभव	व्यंजन सन्धि
102. निष्कारण	विसर्ग सन्धि
103. निष्कपट	विसर्ग सन्धि
104. वागीश	व्यंजन सन्धि
105. मनोभाव	विसर्ग सन्धि
106. शस्त्रास्त्र	दीर्घ सन्धि
107. पित्रिच्छा	यण सन्धि
108. भाग्योदय	गुण सन्धि
109. पावक	अयादि सन्धि
110. स्वच्छ	यण सन्धि
111. कवीच्छा	दीर्घ सन्धि
112. वीरांगना	स्वर सन्धि
113. वाग्धरि/वाग्हरि	व्यंजन सन्धि
114. अनुच्छेद	व्यंजन सन्धि
115. संहार	व्यञ्जन सन्धि
116. निस्सन्देह / नि:सन्देह	विसर्ग सन्धि
117. तपोवन	विसर्ग सन्धि
118. स्वागत	यण सन्धि
119. दिगम्बर	व्यंजन सन्धि
120. गायक	अयादि सन्धि
121. यद्यपि	यण सन्धि
122. नायक	अयादि सन्धि
123. चन्द्रोदय	गुण सन्धि
124. यशोदा	विसर्ग सन्धि
125. अभ्युदय	यण सन्धि
126. नीरोग	विसर्ग सन्धि
127. नदीश	दीर्घ सन्धि

निर्देश: उपयुक्त सन्धि-विच्छेद का चयन कीजिए :-

128. ऊहापोह	ऊहा + आपोह
129. पुराण	पुरा + न
130. प्रमाण	प्र + मान
131. उन्मूलित	उत् + मूलित
132. सिन्धूर्मि	सिन्धु + ऊर्मि

ZONE TECH

133. रजोदर्शन	रजः + दर्शन
134. मनोनुकूल	मनः + अनुकूल
135. युववाणी	युवन् + वाणी
136. इत्यादि	इति + यादि
137. निरर्थक	निः + अर्थक
138. धरेश	धरा + ईश
139. निराशा	निः + आशा
140. महोष्ण	महा + ऊष्ण
141. आशीर्वाद	आशीः + वाद
142. महेश	महा + ईश
143. मनोयोग	मनः + योग
144. उल्लेख	उत् + लेख
145. अत्याचार	अति + आचार
146. दिगम्बर	दिक् + अम्बर
147. उड्डयनम्	उत् + डयनम
148. निर्विकार	निर् + विकार
149. सत्याग्रह	सत्या + आग्रह
150. श्रावण	श्रौ + अण
151. दुराग्रह	दुर् + आग्रह
152. अभिषेक	अभि + सेक
153. विकलांग	विकल + अंग
154. भूषण	भूष् + अन
155. दिनैक	दिन + एक
156. संगम	सम् + गम
157. संस्मरण	सम् + स्मरण
158. अद्यैव	अद्य + एव
159. सत्यासत्य	सत्य + असत्य
160. क्षेत्राभिरक्षक	क्षेत्र + अभिरक्षक
161. वर्णाश्रम	वर्ण + आश्रम
162. व्रजेश	व्रज + ईश
163. संधान	सम् + धान
164. क्षाराक्ष	क्षार + अक्ष
165. तदैव	तत् + एव
166. घुड़दौड़	घोड़ा + दौड़
167. विधूदय	विधु + उदय

ZONE TECH

168. शिलासन	शिला + आसन
169. निर्झर	निः + झर
170. परमौषध	परम + औषध
171. कुलटा	कुल + अटा
172. निश्चेष्ट	निः + चेष्ट
173. गणेश	गण + ईश
174. वाण्यूर्मि	वाणी + उर्मि
175. गुरुपदेश	गुरु + पदेश
176. उन्नयन	उत् + नयन
177. आपत्काल	आपद् + काल
178. उत्कृष्ट	उद् + कृष्ट
179. विपत्ति	विपद् + ति
180. निश्शब्द/नि:शब्द	निः + शब्द
181. निरीह	निः + ईह
182. मृत्यूपरान्त	मृत्यु + उपरान्त
183. नीरव	निः + रव
184. उपेक्षा	उप + ईक्षा
185. मनोराज्य	मनः + राज्य
186. दुर्दशा	दुः + दशा
187. मनोहर	मनः + हर
188. नवागत	नव + आगत
189. जगज्जननी	जगत् + जननी
190. निरेकीभाव	निः + एकीभाव
191. प्रत्येक	प्रति + एक
192. दुस्तर	दुः + तर
193. निष्पाप	निः + पाप
194. निरुत्तर	निर्+ उत्तर
195. उद्गम	उत्+ गम
196. अतीव	अति + इव
197. निर्लेप	निः + लेप
198. उद्धार	उत् + हार
199. पवित्र	पो + इत्र
200. निर्गुण	निः + गुण
201. निषेध	नि + सेध
202. सन्मति	सद् + मति

ZONE TECH

203. अन्वय	अनु + अय
204. निश्चल	निः + चल
205. सप्तर्षि	सप्त + ऋषि
206. प्रत्युपकार	प्रति + उपकार
207. गायक	गै + अक
208. तपोवन	तपः + वन
209. प्रत्येक	प्रति + एक
210. गिरीश	गिरि + ईश
211. वातानुकूल	वात + अनुकूल
212. व्यर्थ	वि + अर्थ
213. ब्रह्मास्त्र	ब्रह्म + अस्त्र
214. घुड़दौड़	घोड़ा + दौड़
215. उच्छ्वास	उत् + श्वाश
216. महोदय	महा + उदय
217. प्रत्युत्तर	प्रति + उत्तर
218. तन्मय	तत् + मय
219. संतोष	सम् + तोष
220. नमस्ते	नमः + ते
221. उद्धरण	उत् + हरण
222. उज्ज्वल	उत् + ज्वल
223. तेजोमय	तेजः + मय
224. विश्वामित्र	विश्वन् + मित्र
225. राकेश	राका + ईश
226. समागम	सम् + आगम
227. व्युत्पत्ति	वि + उत्पत्ति
228. दुष्फल	दुः + फल
229. अक्षौहिणी	अक्ष + ऊहिनी
230. यज्ञ	यज् + ञ
231. राजाज्ञा	राजन् + आज्ञा
232. अत्यन्त	अति + अन्त
233. प्राणीमात्र	प्राणिन् + मात्र
234. दिग्भ्रम	दिक् + भ्रम
235. दुश्शील	दुः + शील
236. एकेश्वर	एक + ईश्वर
237. करुणामृत	करुण + अमृत

ZONE TECH

238. व्याप्त	वि + आप्त
239. उद्घाटन	उत् + घाटन
240. राजर्षि	राज + ऋषि
241. उद्भव	उत् + भव
242. मृत्तिका	मृद् + तिका
243. वाग्जाल	वाक् + जाल
244. निरर्थक	निः + अर्थक
245. परिमाण	परि + मान
246. दुर्भाग्य	दुः + भाग्य
247. सन्निवेश	सम् + निवेश
248. वध्वेषण	वधू + एषण
249. दुष्ट	दुः + ट
250. अन्वर्थ	अनु + अर्थ
251. निर्यात	निः + यात
252. भावुक	भौ + उक
253. सन्तोष	सम + तोष
254. उन्मोचन	उद् + मोचन
255. उत्तीर्ण	उद् + तीर्ण
256. जयद्रथ	जयत् + रथ
257. याजन	याज् + अन
258. सूक्ति	सु + उक्ति
259. निष्क्रिय	निस् + क्रिय
260. सुषमा	सु + समा
261. स्वयंभूदय	स्वयं + भूदय
262. अत्यौदार्य	अति + औदार्य
263. मध्वालय	मधु + आलय
264. बहिष्कार	बहिः + कार
265. तिरस्कार	तिरः + कार
266. वाचस्पति	वाचः + पति
267. यशोधन	यशः + धन
268. भरण	भर् + अन
269. नीरन्ध्र	निर् + रन्ध्र
270. वेदान्त	वेद + अन्त
271. संहार	सम् + हार
272. यशोगान	यशः + गान

ZONE TECH

273. नवोढ़ा	नव + ऊढ़ा
274. प्रात:काल	प्रात: + काल
275. बहिर्गत	बहि: + गत
276. मनोज	मन: + ज
277. उद्विग्न	उत् + विग्न
278. सुषुप्त	सु + सुप्त
279. परन्तु	परम् + तु
280. षड्कोण	षट् + कोण
281. निस्सहाय	नि: + सहाय
282. भास्कर	भा: + कर
283. अनुषंगी	अनु + संगी
284. तिरोभूत	तिर: + भूत
285. प्रादुर्भूत	प्रादु: + भूत
286. पुनर्लेखन	पुन: + लेखन
287. तपश्चर्या	तप: + चर्या
288. निर्मम	निर् + मम
289. भगवद्गीता	भगवत् + गीता
290. चिरन्तन	चिरम् + तन
291. वहिस्थोडन	वहि: + थोडन
292. प्रयाण	प्र + यान

ZONE TECH

2. उपसर्ग

निर्देशः निम्नलिखित प्रश्नों में दिये गये शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग बताइए-

1.	अचल	अ
2.	अत्याधुनिक	अति
3.	अधिमानता	अधि
4.	अभिमान	अभि
5.	अधिकोष	अधि
6.	अवतार	अव
7.	अत्याचार	अति
8.	अनुचर	अनु
9.	अधीश	अधि
10.	अभिशंसा	अभि
11.	अवलोकन	अव
12.	अतिक्लान्त	अति
13.	अभिभावक	अभि
14.	अन्वेषण	अनु
15.	अध्ययन	अधि
16.	अभिलाषा	अभि
17.	अपहरण	अप
18.	आगमन	आ
19.	आहार	आ
20.	आरोहण	आ
21.	उल्लंघन	उत्
22.	उन्मेष	उत्/उद्
23.	उज्ज्वल	उत्/उद्
24.	उज्जयिनी	उत्
25.	उपासना	उप्
26.	उज्जयिनी	उत्
27.	दुर्जन	दुर्
28.	दुर्योधन	दुर्
29.	दुष्कृत्य	दुस्

ZONE TECH

30.	दुर्दिन	दुर्
31.	दुष्परिणाम	दुस्
32.	दुस्स्वप्न (दु:स्वप्न)	दुस्/दु:
33.	निरभिमान	निर्
34.	निपुण	नि
35.	नि:श्वास	नि:
36.	निस्तेज	नि:
37.	निबन्ध	नि
38.	निदर्शन	नि
39.	निरुपाय	निर्
40.	निर्यात	निर्
41.	निखिल	नि
42.	निराश्रय	निर्
43.	निस्तारण	निस्
44.	परिकीर्ण	परि
45.	परिभाषा	परि
46.	परिग्रह	परि
47.	पराभव	परा
48.	परामर्श	परा
49.	परिमाण	परि
50.	प्रकृति	प्र
51.	प्रतिबिम्ब	प्रति
52.	प्रत्यक्ष	प्रति
53.	प्रख्यात	प्र
54.	परिष्कृत	परि
55.	परितोष	परि
56.	प्रत्याघात	प्रति
57.	प्रतिस्पर्द्धा	प्रति
58.	प्रत्युपकार	प्रति
59.	विवेक	वि
60.	वितान	वि
61.	विपक्ष	वि
62.	प्रशान्त	प्र
63.	सहृदय	स
64.	सबल	स

ZONE TECH

65.	सरस	स
66.	सदाशय	सत्
67.	सत्कर्म	सत्
68.	सत्संग	सत्
69.	सद्गुण	सत्
70.	सज्जन	सत्
71.	सम्पादक	सम्
72.	संकलन	सम्
73.	समारोह	सम्
74.	समागम	सम्
75.	समाविष्ट	सम्
76.	स्वरचित	स्व
77.	स्वदेश	स्व
78.	स्वयंसेवक	स्वयं
79.	स्वावलम्बन	स्व
80.	अलबत्ता	अल
81.	अलमस्त	अल
82.	अलविदा	अल
83.	ऐनमौका	ऐन
84.	ऐनवक्त	ऐन
85.	कमसिन	कम
86.	कमजोर	कम
87.	बदकिस्मत	बद
88.	बदकार	बद
89.	बदनाम	बद
90.	बदहजमी	बद
91.	बाकायदा	बा
92.	बामुलहिजा	बा
93.	बिलाइरादा	बिला
94.	बरकरार	बर
95.	प्रख्यात	प्र
96.	प्रत्युत्पन्नमति	प्रति
97.	प्रतिकूल	प्रति
98.	अनुवाद	अनु
99.	निर्वाह	निर्

ZONE TECH

100. बरबाद — बर
101. बेडौल — बे
102. बेवफा — बे
103. बेलाग — बे
104. विज्ञान — वि
105. चिरायु — चिर
106. बेइंसाफी — बे
107. संस्कार — सम्
108. पुरोहित — पुरः
109. अनवनत — अन्

निर्देशः नीचे दिये गये वाक्यों/वाक्यांशों में एक शब्द कालांकित है, उस शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग को चिन्हित कीजिए-

110. पाश्चात्य देशों के **सम्पर्क** से भारत में आधुनिकीकरण की **प्रक्रिया** को बढ़ावा मिला है। — सम्, प्र
111. पुरानी राजनीतिक और सामाजिक **व्यवस्था** में **परिवर्तन** से भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला है। — वि, परि
112. भारत में सुधारों की प्रक्रिया सामाजिक **असमानताओं** और शोषण को दूर करने के लिए की गयी थी। — अ
113. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण वंशानुगत व्यवसायों की **संरचना** चरमरा गयी। — सं/सम्
114. भारत में जाति-व्यवस्था सामाजिक स्तर और श्रम विभाजन के साधन के रूप में **प्रचलित** थी। — प्र
115. जनजाति-समूह-द्वारा उत्पादित अतिरिक्त उत्पादन को अधिग्रहण कर लेने से भारत में सामन्तशाही की **मनोवृत्ति** को बढ़ावा मिला था। — मनः
116. कार्यालयों के मुद्रांकित पत्र **प्राधिकृत** व्यक्ति ही पढ़ते है। — प्र
117. ऋषि भारद्वाज का आश्रय **प्रयाग** में **अवस्थित** है। — प्र, अव
118. राजा जनक मिथिला के **अधीश्वर** थे। — अधि
119. **संस्कृत** में जल को जीवन कहा गया है। — सम्/सं

निर्देशः निम्नांकित वाक्यों में दिये गये **कालांकित** शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग की प्रकृति बताइए-

120. इन्दिरा गाँधी के मन्त्रिमण्डल में मोरारजी देसाई **उपप्रधानमंत्री** भी रह चुके थे। — तत्सम उपसर्ग
121. उनके **परदादा** कभी अंगरेजी सेना में सूबेदार हुआ करते थे। — तद्भव उपसर्ग
122. न्यायाधीशों को ज्ञात हो चल गया था कि पुलिस द्वारा लगाये सारे आरोप **बेबुनियाद** थे। — विदेशज् उपसर्ग
123. हिन्दी महीनों में कभी-कभी एक महीना बढ़ जाता है, जिसे **अधिमास** कहते हैं। — तत्सम उपसर्ग
124. **बेइमान** व्यक्ति अपनी बेइज्जती की भी परवाह नहीं करते। — विदेशज् उपसर्ग
125. भाई रजनीकान्त का रोग अब **लाइलाज** हो चुका है। — विदेशज् उपसर्ग
126. मीडिया-तन्त्र ने नेताओं के भ्रष्ट आचरण को बेपरदा कर दिया है। — विदेशज् उपसर्ग
127. **कुकर्मी, कुबुद्धि, कुसंगी, कुदासः, कुलाचारहीनः, कदाचारलीनः।** — तत्सम उपसर्ग
128. मनुष्य तो मनुष्य, इस हरे शाक को तो **चौपाये** तक नहीं खाते। — देशज् उपसर्ग
129. **अनकही** कहानी को लेकर काफी हो-हल्ला मचा था। — तद्भव उपसर्ग
130. मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि उनके मित्र के ठहरने का **बाकायदा** इन्तजाम किया जाएगा। — विदेशज् उपसर्ग
131. सीमा पढ़ाई-लिखाई के प्रति काफी **लापरवाह** है। — विदेशज् उपसर्ग

132. चौकीदार अपनी ड्यूटी में **गैरहाजिर** पाया गया था।	विदेशज् उपसर्ग
133. दोनों बहनें **हमउम्र** लगती हैं।	विदेशज् उपसर्ग
134. मुझे किसी को **बेतुकी** बातें अच्छी नहीं लगतीं।	विदेशज् उपसर्ग
135. जगदीशचन्द्र बसु ने **बेतार** के तार का आविष्कार तो किया था किन्तु उसका श्रेय कोई और ले गया।	विदेशज् उपसर्ग
136. सन्तान यदि **नालायक** निकल जाए तो माता-पिता का क्या कुसूर।	विदेशज् उपसर्ग
137. आज-कल देश की राजधानी दिल्ली अनेक अत्याधुनिक सुविधाओं से **परिपूर्ण** है।	तत्सम उपसर्ग
138. कठिन प्रतिस्पर्द्धा के बीच एक ही **सुयोग्य अभ्यर्थी** का चयन हो पाया था।	तत्सम उपसर्ग
139. ओलम्पिक में भारत के अभिनव ने **अभिनव उपलब्धि** अपने नाम की।	तत्सम उपसर्ग

ZONE TECH

3. प्रत्यय

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों में दिये गये शब्द के निर्माण में प्रयुक्त प्रत्यय -

1.	लेखक	अक
2.	पाठक	अक
3.	गायक	अक
4.	जातक	अक
5.	धावक	अक
6.	पावक	अक
7.	भुलक्कड़	अक्कड़
8.	घुमक्कड़	अक्कड़
9.	बुझक्कड़	अक्कड़
10.	टिकाऊ	आऊ
11.	तैराक	आक
12.	चढ़ाव	आव
13.	खिलाड़ी	ई
14.	गुजारा	आ
15.	पिटाई	आई
16.	खिंचाई	खींच
17.	चराई	आई
18.	चुनाव	आव्
19.	विलास	आस
20.	हुलास	आस
21.	बोली	ई
22.	लुटेरा	एरा
23.	दाता	ता
24.	ज्ञाता	ता
25.	त्राता	ता
26.	होनहार	हार
27.	राखनहार	हार
28.	पढ़नेवाला	वाला
29.	हँसनेवाला	वाला

ZONE TECH

30.	कर्त्तव्य	तव्य
31.	चिल्लाहट	आहट
32.	मन्थन	न
33.	बन्धन	न
34.	ढक्कन	अन
35.	गगरी	ई
36.	खिलौना	औना
37.	बिछौना	औना
38.	बाजारू	आरू
39.	झेंपू	एंपू
40.	लेखनी	नी
41.	ओढ़नी	नी
42.	भगोड़ा	ओड़ा
43.	हँसोड़ा	ओड़ा
44.	मिलनसार	सार
45.	रटन्त	अन्त
46.	भिड़न्त	अन्त
47.	उड़ान	आन
48.	पछतावा	आवा
49.	तनाव	आव
50.	बुलावा	आवा
51.	पुजापा	आपा
52.	चुनौती	ओती
53.	कटौती	औती
54.	समझौता	औता
55.	चर्मकार	कार
56.	गँवार	आर
57.	मुखिया	इया
58.	रसिया	इया
59.	मछुवा	उवा
60.	कठुवा	उवा
61.	बसेरा	एरा
62.	उच्चतम	तम
63.	अनुरूपता	ता
64.	गोपनीयता	ता

ZONE TECH

65.	रोंगटा	टा
66.	चाटी	टी
67.	खपरैल	एल
68.	कसैला	ऐला
69.	वनैला	ऐल
70.	श्यामला	ला
71.	दयावन्त	वन्त
72.	गुणवन्त	वन्त
73.	गुणवान	आन
74.	धनवान	वान
75.	जीवनहारा	हारा
76.	टुकड़ा	ड़ा
77.	सुनहरा	हरा
78.	बाँसुरी	री
79.	छतरी	री
80.	खुजली	ली
81.	रँड़ापा	आपा
82.	बेटवा	वा
83.	लालसा	सा
84.	रंगत	त
85.	संगत	त
86.	मधुरता	ता
87.	महीप	प
88.	नेतृत्व	त्व
89.	बन्धुत्व	त्व
90.	पठित	इत
91.	दृढ़तापूर्वक	पूर्वक
92.	विधिपूर्वक	पूर्वक
93.	बागीचा	ईचा
94.	गलीचा	ईचा
95.	मच्छरदानी	दानी
96.	हिन्दुस्तान	आन
97.	गुलशन	शन
98.	दसवाँ	वाँ
99.	जलमय	मय

ZONE TECH

100. पुत्रवत्	वत्
101. विधिवत्	वत्
102. दरबार	बार
103. ऊर्जस्वी	वी
104. मेधावी	वी
105. गौरवशाली	शाली
106. प्रतिभाशाली	शाली
107. अद्यतन	तन
108. अधुनातन	तन
109. बन्दरिया	इया
110. कात्यायन	आयन
111. रामायण	आयण
112. पत्रिका	इका
113. शतक	क
114. आत्मजा	जा
115. खतरनाक	नाक
116. खौफनाक	नाक
117. कमरबन्द	बन्द
118. दुकानदार	दार
119. जालसाज	साज
120. रिश्वतखोर	खोर
121. शर्मिन्दा	इन्दा
122. इलाहाबाद	आबाद
123. गुनहगार	गार
124. आलमगीर	गीर
125. तबलची	ची
126. कवित्व	त्व
127. सरकार	कार
128. सरदार	दार
129. नकाबपोश	पोश
130. सफेदपोश	पोश
131. हिन्दुस्तान	तान
132. मेजपोश	पोश
133. मोहरबन्द	बन्द
134. बख्तरबन्द	बन्द

ZONE TECH

135. शर्मसार	सार
136. बागवान	वान
137. रोजगार	गार
138. दरगाह	गाह
139. बन्दरगाह	गाह

ZONE TECH

4. विपरीतार्थक (विलोम) शब्द

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक शब्द के लिए एक विलोम शब्द का चयन कीजिए :

1.	अनिवार्य	ऐच्छिक और वैकल्पिक दोनों
2.	अतिथि	सतिथि / आतिथेयी
3.	अगम	सुगम
4.	अच्युत	च्युत
5.	अभिसरण	अपसरण
6.	अनुलोम	प्रतिलोम
7.	अवर	प्रवर
8.	अमर	मर्त्य
9.	इति	अथ
10.	अर्जन	व्ययन
11.	अनुरक्त	विरक्त
12.	अनुकूल	प्रतिकूल
13.	अनुज	अग्रज
14.	अँधेरा	उजाला
15.	अक्षत	विक्षत
16.	अतल	वितल
17.	अवनि	अम्बर
18.	अरुचि	सुरुचि
19.	सच	झूठ
20.	आयोजन	वियोजन
21.	परुष	कोमल
22.	गुप्त	प्रकट
23.	अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक
24.	कृत्रिम	स्वाभाविक
25.	अगम	सुगम
26.	मौखिक	लिखित
27.	क्रूर	दयालु
28.	उत्कर्ष	अपकर्ष
29.	सम्मुख	विमुख

ZONE TECH

30.	मन्द	द्रुत
31.	तृषा	तृप्ति
32.	कठिन	सरल
33.	उदार	अनुदार
34.	विस्तार	संक्षेप
35.	अनाथ	सनाथ
36.	आरोह	अवरोह
37.	निर्यात	आयात
38.	मिथ्या	सत्य
39.	ह्रास	विकास
40.	कीर्त्ति	अपकीर्त्ति
41.	दुराचार	कदाचार
42.	सुबह	शाम
43.	योगी	विलासी
44.	आरम्भ	अन्त
45.	गहरा	उथला
46.	क्रोध	क्षमा
47.	अभिशाप	वरदान
48.	उपमान	उपमेय
49.	आकर्षण	विकर्षण
50.	उत्साह	निरुत्साह
51.	सकारात्मक	नकारात्मक
52.	वृद्ध	युवा
53.	पराक्रम	भीरुता
54.	सघन	विरल
55.	यत्र	तत्र
56.	अपकार	उपकार
57.	भूषण	दूषण
58.	मृदुल	कठोर
59.	गरिमा	लघिमा
60.	मौखिक	लिखित
61.	चिरन्तन	क्षणिक
62.	उर्वर	ऊसर, बंजर, अनुर्वर
63.	कलुष	निष्कलुष
64.	ऋणात्मक	धनात्मक

ZONE TECH

65.	स्वकीया	परकीया
66.	विपन्न	सम्पन्न
67.	निवृत्ति	अवृत्ति/प्रवृत्ति
68.	व्यक्त	अव्यक्त
69.	शिष्ट	अशिष्ट
70.	विनाश	उत्पत्ति/सर्जन
71.	शुक्ल-पक्ष	कृष्ण-पक्ष
72.	ग्राह्य	त्याज्य
73.	शकुन	अपशकुन
74.	आवृष्टि	अनावृष्टि/अवृष्टि
75.	अपयश	यश/सुयश
76.	आमिष	निरामिष
77.	द्वेष-भाव	प्रेम-भाव
78.	विनीत	उग्र/अविनीत
79.	प्रशंसनीय	निन्द्य/निन्दनीय
80.	स्थूल	कृश
81.	प्रधान	गौण
82.	वादी	प्रतिवादी
83.	सरलता	कुटिलता
84.	ऐन्द्रिय	अतीन्द्रिय
85.	शीघ्र	विलम्ब
86.	ग्रहण	त्याग
87.	प्रतिक्रिया	क्रिया
88.	वन्द्य	निन्द्य
89.	देवता	राक्षस
90.	निरक्षर	साक्षर
91.	इहलोक	परलोक
92.	समृद्ध	विपन्न
93.	कौटिल्य	मृदुलता
94.	बुद्धिमान	निर्बुद्धि/बुद्धिहीन
95.	अपमान	मान/सम्मान
96.	आध्यात्मिक	भौतिक
97.	कमजोरी	तत्परता
98.	अभिजात	अवजात/अनभिजात
99.	सैद्धान्तिक	वास्तविक

ZONE TECH

100. अन्धकार	प्रकाश
101. शिथिलता	स्फूर्ति
102. कृतज्ञ	कृतघ्न
103. पूर्वाह्न	अपराह्न
104. मूक	वाचाल
105. अपेक्षा	उपेक्षा
106. व्यास (विस्तार)	समास
107. जड़	चेतन
108. प्रसार	संकोच
109. श्वेत	श्याम
110. दृश्य	अदृश्य
111. शत्रु	सुहृद/मित्र
112. सम्पदा	विपदा
113. शाप	वरदान
114. अक्षर	क्षर
115. समस्या	निराकरण
116. उद्दण्डता	विनीतता
117. परिचित	अनभिज्ञ/अपरिचित
118. सार्थक	निरर्थक
119. सिमटना	चालू रहना
120. समानता	असमानता
121. महान्	क्षुद्र
122. विपत्ति	सम्पत्ति
123. नीरस	सरस
124. अनागत	आगत
125. सृष्टि	प्रलय
126. मन्थर	द्रुत
127. बहिरंग	अन्तरंग
128. ब्रह्म	जीव
129. अति	अल्प
130. स्थावर	जंगम
131. संक्षपण	विस्तारण
132. आदि	अन्त
133. गणतन्त्र	राजतन्त्र
134. मानव	दानव

ZONE TECH

135. कृपण	दानी
136. सत्कार	तिरस्कार
137. कर्कश	सुशील
138. अधम	उत्तम
139. प्रछन्न	प्रकट
140. कोमल	कठोर
141. पश्चात्	पूर्व
142. वक्र	सरल
143. कायर	साहसी
144. सन्त	दुर्जन/असन्त
145. कोप	कृपा
146. नष्ट	सर्जन
147. एकाधिकार	अनेकाधिकार
148. उर्वरक	अनुर्वरक
149. गरल	अमृत
150. कुलक्षण	सुलक्षण
151. कल्पना	यथार्थ
152. सकाम	निष्काम
153. संयुक्त	विच्छिन्न/विभक्त
154. विधि	निषेध
155. पारलौकिक	सांसारिक/इहलौकिक
156. गृहीत	अर्पित
157. लौकिक	पारलौकिक
158. वक्र	ऋजु
159. ऋषि	संसारी
160. तीव्र	मन्द
161. बर्बर	उदार
162. शुक्ल	कृष्ण
163. आयात	निर्यात
164. तरुण	वृद्ध
165. ऋत	अनृत
166. रद्द	मंजूर
167. हर्ष	विषाद/शोक
168. श्रीगणेश	इतिश्री
169. इष्ट	अनिष्ट

ZONE TECH

170. अनागत	आगत
171. स्वीकार्य	अस्वीकार्य
172. अधिमान	अनभिमान
173. जीवन	मरण
174. धनाढ्य	अकिंचन
175. श्रेष्ठ	निकृष्ट
176. आकाश	पाताल
177. अर्पण	ग्रहण
178. सफल	विफल
179. आलोक	तिमिर
180. मरण	जीवन
181. इच्छा	अनिच्छा
182. साहचर्य	पार्थक्य
183. प्रलय	सृष्टि
184. अन्तरंग	बहिरंग
185. अपराजिता	पराजिता
186. अवतल	उत्तल
187. अभियुक्त	योगी
188. अग्र	पश्च
189. अकर्मक	सकर्मक
190. अनपत्य	पत्य
191. अंगीकरण	अनंगीकरण/स्वीकरण
192. असीम	ससीम
193. अधोगामी	ऊर्ध्वगामी
194. अकाल	सुकाल
195. अध	अनध/ऊर्ध्व
196. अबला	सबला
197. अनाधिकृत	अधिकृत
198. आभिजात्य	अनाभिजात्य
199. अवनत	उन्नत
200. अर्चन	अनादर
201. अतिवृष्टि	अनावृष्टि
202. अपटु	पटु
203. अवनति	उन्नति
204. आस्था	श्रद्धा

ZONE TECH

205. आदृत	अनादृत, निरादृत
206. आमिष/सामिष	निरामिष
207. पूजा	अनादर
208. आच्छादित	अनावृत्त
209. आवाहन/आह्वान	विसर्जन
210. आसक्त	अनासक्त
211. अभ्यन्तर	बाह्य
212. आर्ष	अनार्ष
213. आवृत्त	अनावृत्त
214. आरोही	अवरोही
215. आख्यात	अनाख्यात
216. आदिष्ट	निषिद्ध
217. आश्रित	निराश्रित/अनाश्रित
218. आविर्भाव	तिरोभाव
219. आतुर	अनातुर
220. आरोहण	अवरोहण/अनारोहण
221. आडम्बर	सादगी
222. आहार्य	अनाहार्य
223. आकर्षण	अनाकर्षण
224. आशीष	अभिशाप
225. आकीर्ण (संकीर्ण)	प्रकीर्ण
226. लंघ्य	दुर्लंघ्य
227. आहूत	अनाहूत
228. आगमन	निर्गमन
229. आत्मनिर्भर	अनुजीवी, परजीवी
230. इच्छा	अनिच्छा
231. इष्ट	अनिष्ट
232. आनन्द (हर्ष)	विषाद
233. आजादी	गुलामी
234. उदात्त	अनुदात्त
235. उपमेय	अनुपमेय
236. एकान्त	अनेकान्त
237. आशावादी	निराशावादी
238. ईहा	अनीहा (अनिच्छा)
239. एहतियात	लापरवाही

ZONE TECH

240. उन्मूलन	रोपण
241. इन्द्रियपरायण	जितेन्द्रिय
242. उत्कर्ष	अपकर्ष
243. दुराग्रह	आग्रह
244. उन्मत्त	अनुन्मत्त
245. आकाश	पाताल
246. इज्जत	बेइज्जत
247. आपत्ति	सम्मति/अनापत्ति
248. उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
249. उल्लास/हर्ष	विषाद
250. आचार	अनाचार
251. ईप्सित	अनीप्सित
252. उदयाचल	अस्ताचल
253. उदासीन	सक्रिय/स्फूर्त
254. उपसर्ग	प्रत्यय
255. उपगत	अनुपगत
256. उग्र	सौम्य
257. उपादेय	अनुपादेय
258. उत्तरायण	दक्षिणायन
259. उल्लंघन	अनुल्लंघन
260. उथला	गहरा
261. सूक्ष्म	स्थूल
262. उज्ज्वल	धूमिल
263. उन्मीलन	निमीलन
264. उऋण	ऋणी
265. उद्यम	आलस्य
266. पूर्णिमा	निशीथ
267. उपत्यका	अधिपत्यका
268. उपलब्ध	अनपलब्ध
269. उद्भव	अवसान
270. उदित	अस्त
271. उभार	धँसाव
272. आलसी	उद्यमी, कर्मठ, अध्वसायी
273. उत्तेजन	प्रशमन
274. उन्नयन	अवनति/अवनयन

ZONE TECH

275. उच्छ्वास	नि:श्वास
276. उद्धत	सौम्य
277. उपार्जित	अनुपार्जित
278. नूतन	पुरातन
279. उन्मुख	विमुख
280. उत्पादक	अनुत्पादक
281. उद्वेग	निरूद्वेग
282. उत्साह	निरुत्साह
283. उपरि	अध:
284. एकाधिकार	सर्वाधिकार/अनेकाधिकार
285. औद्धत्य	शिष्टता/विनयत्व
286. कपूत	सपूत
287. कुराज	सुराज
288. औदार्य	अनौदार्य
289. उषा	सन्ध्या
290. एकत्र	सर्वत्र
291. ऐक्य	अनैक्य/बहुत्व
292. कलंकित	पवित्र
293. ऐहिक	पारलौकिक
294. उच्छिष्ट	अनुच्छिष्ट
295. कानन	नगर/जनपद
296. एकल	बहुल
297. कायर	शूरवीर/साहसी
298. ऐश्वर्य	सादा
299. करुण	निष्ठुर
300. एकाकी	बहुल
301. उत्सुक	अनुत्सुक
302. औपचारिक	अनौपचारिक
303. ऊहापोह	निश्चित
304. एकाग्र	व्यग्र/चंचल
305. औचित्य	अनौचित्य
306. कर्मण्य	अकर्मण्य
307. उष्णता	शीतलता
308. औरस	दत्तक
309. खीझना	रीझना

ZONE TECH

310. कृपण	दाता
311. कुरूप	सुरूप, सुन्दर
312. खिलना	मुरझाना
313. कुलदीप	कुलांगार (वंशनाशक)
314. कमी	वेशी
315. कुण्ठा	तीव्र
316. कुत्सा	प्रशंसा
317. कृत्रिम	अकृत्रिम/ स्वाभाविक
318. कर्मण्यता	अकर्मण्यता
319. क्रान्ति	शान्ति
320. खण्डन	मण्डन
321. कपट	निष्कपट
322. कृश	पुष्ट, स्थूल
323. कंजूस	मुक्तहस्त, उदार, शाहखर्च
324. कम्पित	अकम्पित
325. कोकिल	कौआ/काक
326. कल्याण	अमंगल
327. कटु	मधुर
328. ख्यात/प्रख्यात	कुख्यात
329. गेय	अगेय
330. गृही	संन्यासी
331. खेद	प्रसन्नता
332. गुण	अवगुण, दोष
333. गम्य	अगम्य
334. गृहस्थ	संन्यासी
335. ग्राह्य	अग्राह्य
336. खल	सज्जन, साधु
337. गद्दार	वफादार
338. गोचर	अगोचर
339. खण्डित	अखण्डित, मण्डित
340. गम्य	अगम्य
341. ग्रामीण	नागर, शहरी
342. गरल	सुधा
343. खौफ	निश्चिन्तता
344. गगन	धरा
345. गौरव	लघुता/लाघव

ZONE TECH

346. गम्भीर	छिछला, अगम्भीर
347. खरा	खोटा
348. गहन	नवीन
349. खारा	कडुवा
350. चिन्मय	अचिन्मय
351. छुट्टा	बँधा
352. चिरायु	अल्पायु
353. चिन्तित	अचिन्तित, निश्चिन्त
354. छाया	धूप
355. चारु	अचारु
356. एकत्व	अनेकत्व
357. चतुर	मूर्ख
358. छूत	अछूत
359. घात	प्रतिघात
360. च्युत	अच्युत
361. चपल	अचपल
362. घाटा	फायदा, मुनाफा
363. चाटुकार	स्वाभिमानी
364. चय	अपचय
365. चर	अचर
366. घोषित	अघोषित
367. चेतन	अचेतन
368. चोटी	एड़ी
369. चमकदार	आभाहीन
370. घोष	अघोष
371. चिकित्स्य	अचिकित्स्य
372. घटित	अघटित
373. चेष्ट	निश्चेष्ट
374. चिरन्तन	नश्वर
375. होनी	अनहोनी
376. सुनाम	सत्नाम
377. क्षुद्र	विराट्
378. हया	बेहया
379. हार	जीत
380. सुपात्र	कुपात्र
381. क्षम्य	अक्षम्य

ZONE TECH

382. हास	रुदन
383. क्षणिक	शाश्वत
384. ह्रस्व	दीर्घ
385. बुरा	अच्छा
386. सन्तत	असन्तत/असंगत
387. शोभनीय	अशोभनीय
388. विधिसम्मत	विधिविरुद्ध
389. शान्ति	अशान्ति, क्रान्ति
390. वाग्मी	मितभाषी
391. शिव	पार्वती
392. विपद	सम्पद
393. वेदना	आनन्द
394. शोक	आनन्द, हर्ष
395. विश्लेषण	संश्लेषण
396. मृत्युपरान्त	नश्वर
397. वाह!	हाय!
398. शिथिल	स्फूर्त्त
399. शयन	जागरण
400. विनत	निराश
401. शुचि	अशुचि
402. विफलता	सफलता
403. व्यस्त	अव्यस्त
404. विशिष्ट	सामान्य, साधारण
405. श्यामा	गौरी
406. विश्वस्त	अविश्वस्त, विश्वासघाती
407. वैभव	दारिद्र्य
408. व्यक्तिगत	संस्थागत
409. व्यक्ति	समष्टि
410. विलम्ब	अविलम्ब
411. सन्देह	विश्वास
412. सवर्ण	अवर्ण, असवर्ण
413. संयमी	असंयमी
414. सुपाच्य	कुपाच्य
415. सादर	निरादर
416. सम्बद्ध	असम्बद्ध
417. सशंक	अशंक

ZONE TECH

418. समास	विग्रह
419. सत्संग	कुसंग
420. सन्निविष्टन	निस्तारण
421. सम्पृक्त	असम्पृकत
422. सज्जन	दुर्जन, शठ, खल
423. सुकृति	दुष्कृति
424. सुषुप्ति	जागृति
425. सुबोध	दुर्बोध
426. नरमदिल	निर्दयी
427. सादा	रंगीन/भड़किला
428. सातत्य	असातत्य
429. सुगति	दुर्गति
430. साध्वी	असाध्वी
431. संकोच	नि:संकोच
432. सुदूर	सन्निकट
433. सराहनीय	निन्दनीय
434. सित	असित
435. सुमुख	दुर्मुख
436. सापेक्ष	निरपेक्ष
437. यामा	दिन
438. रोपना	उखाड़ना
439. लौह	स्वर्ण
440. रचना	ध्वंस
441. रंजिश	प्रेम
442. यदा	कदा
443. लोक	परलोक
444. रत	विरत
445. गुरुत्व/गुरुता	लघुत्व/लघुता
446. रेगिस्तान	नखलिस्तान
447. राग	द्वेष, विराग
448. रूपवान	कुरूप
449. कुरूपवान	सुरूप
450. लाचार	समर्थ
451. यजमान	पुरोहित
452. राक्षस	देवता
453. राहत	प्रकोप

ZONE TECH

454. लगाव	बिलगाव, अलगाव
455. रौद्र	अरौद्र
456. रुग्ण	नीरोग
457. रिझाना	चिढ़ाना
458. लफंगा	सुशील
459. रिक्त	पूर्ण, भरा
460. लोप	निर्लोप
461. लुप्त	प्रकट
462. लघिमा	महिमा/गरिमा
463. विदग्ध	अविदग्ध
464. विस्तारण	संक्षेपण
465. विसर्जन	अर्जन/आह्वान
466. व्यवस्था	अव्यवस्था / कुव्यवस्था / दुर्व्यवस्था
467. लुभावना	घिनौना
468. विराट्	क्षुद्र
469. विबुध	अविबुध
470. लक्षित	अलक्षित
471. विवेकी	अविवेकी
472. विरत	निरत, रत
473. विहित	अविहित
474. विमुख	सन्मुख
475. विरल	सविरल, सघन
476. विपुल	न्यून
477. व्यष्टि	समष्टि
478. लचीला	कठोर
479. व्याप्त	अव्याप्त
480. विशाल	लघु
481. विकर्षण/प्रतिकर्षण/अनाकर्षण	आकर्षण
482. लम्पट	सदाचारी
483. विघ्न	निर्विघ्न
484. वियोग	विरह
485. विधवा	सधवा
486. वितरक	एकत्रक
487. वंक	सरल
488. विपत्ति	सम्पत्ति
489. गमन	आगमन

ZONE TECH

490. योगदान/सहयोग	विरोध
491. सूक्ष्म	स्थूल
492. संशय	निश्चय
493. अनौचित्य	औचित्य
494. परा	अपरा
495. दुष्कर	सुकर
496. अच्छा	बुरा
497. उन्मूलन	स्थापन
498. अवज्ञा	आज्ञा
499. ऋजु	कुटिल
500. गौण	मुख्य
501. अल्पज्ञ	बहुज्ञ/अभिज्ञ
502. शिष्ट	उच्छृंखल/अशिष्ट
503. कर्षण	विकर्षण
504. क्षम	अक्षम
505. निमीलन	उन्मीलन
506. महायोगी	महाभोगी
507. जल	निर्जल
508. अमावस्या	पूर्णिमा
509. तीक्ष्ण	कुण्ठित
510. संन्यासी	ब्रह्मचर्य
511. दाता	कृपण
512. संशय	सुनिश्चित
513. साधारण	असाधारण
514. नास्तिक	आस्तिक
515. एकदेशीय	बहुदेशीय
516. बर्बर	सभ्य
517. संयोजित	विभाजित
518. तिमिर	ज्योति
519. दुष्कर	सुकर
520. आसक्त	अनासक्त
521. भूषण	कुभूषण
522. चर	अचर
523. शीत	ऊष्ण
524. उत्तेजित	शान्त
525. प्रसारण	संकुचन

ZONE TECH

526. सहचर्य	पृथक्करण
527. अकाम	निष्काम
528. प्रमीलन	उन्मीलन
529. ज्ञानी	मूर्ख
530. अभिज्ञ	अनभिज्ञ
531. घालक/घातक	पालक
532. अधुनातन	पुरातन
533. थोक	फुटकर
534. राजतन्त्र	लोकतन्त्र
535. अटल	चंचल
536. शान्त	अशान्त
537. अत्यधिक	स्वल्प
538. वार्द्धक्य (बुढ़ापा)	यौवन
539. अशक्त	शक्त
540. ज्येष्ठ	कनिष्ठ
541. आर्द्र	सिक्त
542. ऋण	उऋण
543. अतीत	वर्तमान
544. दुर्दान्त	प्रशान्त
545. तम	प्रकाश
546. संस्कृति	विकृति
547. आस्था	अनास्था
548. कलुष	निष्कलुष
549. प्रवृत्ति	निवृत्ति
550. देव	दानव
551. अल्प	अधिक
552. दूषण	भूषण
553. अनुग्रह	विग्रह
554. आविर्भाव	तिरोभाव
555. सौभाग्यवती	दुर्भाग्यवती
556. असुर	सुर
557. आपत्ति	विपत्ति
558. सावधान	असावधान
559. नियामक	अनियामक
560. पतनोन्मुख	उत्थानोन्मुख
561. परुष	कोमल

ZONE TECH

562. निखार	धूमिल
563. पक्षपात	तटस्थता, निष्पक्षता
564. पराश्रय	स्वावलम्बन
565. पक्व	अपक्व
566. निश्चेष्ट	सचेष्ट
567. परिवर्तन	अपरिवर्तन
568. नियत	अनियत
569. पैना	कुन्द
570. पण्डित	मूर्ख
571. परितोष	अनुतोष
572. पापी	पुष्यवान
573. परिणत	अपरिणत
574. पोषक	अपोषक/शोषक
575. बेमेल	मेल
576. प्रभात	सायं
577. प्रारब्ध	पौरुष
578. पुरोगामी	पश्चगामी
579. पृथु	तनु
580. प्रासंगिक	अप्रासंगिक
581. फलित	अफलित
582. पूर्ववत्	नूतनवत्
583. प्रफुल्ल	म्लान
584. प्रसम	अप्रसम
585. बड़प्पन	ओछापन
586. प्रशस्त	अप्रशस्त
587. फजीलत	फजीहत
588. प्रदोष	प्रत्यूष
589. बद	नेक
590. भीषण	सौम्य
591. भौतिकवादी	अध्यात्मवादी
592. भाग्यवान्	हतभाग्य, बदकिस्मत, अभागा
593. भक्षक	रक्षक
594. बन्धुत्व	शत्रुत्व
595. भीत	निर्भय
596. भव	विभव
597. भाषण	श्रवण

ZONE TECH

598. बहुधा — कभी-कभी
599. बैर — प्रीति
600. भद्रता — अभद्रता
601. भ्रष्टाचार — शिष्टाचार
602. बलवान — निर्बल, दुर्बल
603. मनीषी — मूर्ख
604. प्रकृति — पुरुष
605. बन्धन — मुक्ति
606. बोधगम्य — गूढ़, दुरूह, अबोधगम्य
607. भंगुर — अभंगुर
608. भीरु — निडर
609. बागी — हिमायती
610. भर्त्ता — भृत्य, भार्या
611. बृहत् — लघु
612. बौखल — विज्ञ
613. भूलोक — आकाश
613. भूलोक — आकाश
614. बेडोल — सुडौल
615. मलिन — निर्मल
616. मूर्ख — मनीषी
617. मलामत — प्रशंसा
618. याचक — दाता
619. मेल — बेमेल
620. मधुर — कटु/तिक्त/काषाय
621. मसृण — रुक्ष
622. मुनाफा — नुकसान
623. यायावर — स्थिर
624. मंजूर — नामंजूर
625. यौवन — वार्द्धक्य
626. मूर्च्छित — सचेत
627. महत् — तुच्छ, क्षुद्र, लघु
628. मिश्रित — अमिश्रित
629. यथार्थ — कल्पित, कल्पना
630. मिलन — बिछोह
631. ममता — निर्ममता
632. योजक — विभाजक/नियोजक

ZONE TECH

633. मौन	चपल
634. महात्मा	दुरात्मा
635. मोहित	अमोहित
636. मितव्ययिता	अमितव्ययिता
637. मियाद	बेमियाद
638. दूषित	स्वच्छ
639. धैर्य	अधैर्य
640. दृढ़	अदृढ़, दोलायमान
641. दुर्भाव	सद्भाव
642. दुष्कर्म	सत्कर्म
643. जाग्रत	सुषुप्त
644. दक्षता	अदक्षता
645. दिवा	रात्रि
646. धौंस	विनय
647. देह	विदेह
648. धर्म	अधर्म
649. दखल	बेदखल
650. ध्वंस	निर्माण
651. देय	अदेय
652. दुरुस्त	गलत
653. दयालु	निर्दयी
654. दुर्दिन	सुदिन
655. दाखिल	खारिज
656. धृष्ट	नम्र
657. द्वैत	अद्वैत
658. दुहिता	पुत्र
659. विहित	निषेध
660. धवल/उज्ज्वल	कृष्ण
661. धाँधली	ईमानदारी
662. नमकहराम	नमकहलाल
663. निराकार	साकार
664. नत	अवनत
665. नादान	समझदार
666. नश्वर	अनश्वर, शाश्वत
667. नराधम	नरपुंगव
668. न्यूनतम	अधिकतम

ZONE TECH

669. निरुद्ध	बाधा
670. निष्क्रिय	सक्रिय
671. निर्दिष्ट	अनिर्दिष्ट
672. नित्य	अनित्य
673. निर्वाच्य	अनिर्वाच्य
674. छद्म	व्यक्त/प्रकट
675. डरना	डराना
676. जीर्ण	अजीर्ण
677. ज्योत्सना	कालिमा
678. जारज	औरस
679. ढाढ़स	त्रास
680. झंकृत	निस्तब्ध
681. स्वगत	प्रकट
682. ज्योतिर्मय	तमोमय
683. टोटा	प्राचुर्य, फायदा/नफा, लाभ
684. ठेस	सम्मान
685. जटिल	सरल
686. झीना	मोटा
687. जात	परजात
688. जालिम	रहमदिल
689. मधुर	तिक्त
690. जबरन/बलात्	स्वेच्छापूर्वक/स्वेच्छया/स्वैच्छिक
691. ठौर	कुठौर
692. ज्वार	भाटा
693. जातीय	विजातीय
694. ठोस	खोखला
695. झोंपड़ी	महल
696. उत्कृष्ट	निकृष्ट
697. ओजस्वी	निस्तेज/ओजहीन
698. रंक	राजा
699. खल	साधु
700. अनुग्रह	कोप
701. राग	द्वेष
702. असमर्थ	क्षम/समर्थ
703. हेय	प्रेय, प्रेरक
704. सनातनी	प्रगतिवादी

ZONE TECH

705. अवनत	उन्नत
706. शीर्ष	तल
707. धरा	गगन
708. न्यून	अधिक
709. हास्य	रुदन
710. कायर	निडर/साहसी
711. जंगम	स्थावर
712. आत्मा	परमात्मा
713. दीर्घकाय	लघुकाय
714. तन्दुरुस्त	रोगी
715. तामसिक	सात्त्विक
716. तहलका	शान्ति
717. त्यागी	स्वार्थी
718. दानी	कृपण, कंजूस
719. दुराचारी	सदाचारी
720. तरक्की	बेतरक्की
721. दिलेर	कायर
722. तीव्र	मन्द
723. ताप	शीत
724. दुर्जन	सज्जन
725. दलित	उत्थित
726. तर्क	वितर्क
727. दीर्घायु	अल्पायु
728. तुकान्त	अतुकान्त
729. दुर्गति	सुगति/सद्गति
730. दरिद्र	धनाढ्य, धनी
731. तृप्त	तृषा
732. दुष्प्राप्य	सुप्राप्य
733. तर	शुष्क
734. सबल	निर्बल
735. त्यक्त	गृहीत
736. निस्तेज	तेजस्वी

निर्देशः निम्नलिखित वाक्यों में कालांकित शब्द का विलोम लिखिए-

737. सज्जन **मृदुभाषी** होते हैं।	कटुभाषी
738. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र **गूँगा** है।	वाचाल
739. सीता एक **पतिव्रता** स्त्री थीं।	कुलटा

ZONE TECH

740. बिजल चले जाने से कल पूरा शहर **अन्धकार** में डूबा रहा। प्रकाश
741. थोड़ी-सी भी **शिथिलता** व्यापार को ठप्प कर देती है। स्फूर्ति
742. कुछ दिन अस्पताल में रहकर वह **रोगमुक्त** हो गयी। रुग्ण
743. इस **दुर्घटना** के बाद वह मेरे घर नहीं आया। कुशलक्षेम
744. आपके इस कार्य को **प्रशंसनीय** नहीं कहा जा सकता। निन्दनीय
745. जिसमें आत्मविश्वास है, वह **जटिल** समस्याओं को आसानी से सुलझा लेता है। सरल
746. कुम्भकर्ण छः मास तक गहरी **निद्रा** में रहता था। जागृति
747. तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी उस **मूर्ख** को नहीं समझा सकता। विद्वान्
748. परिस्थितियों के **अनुकूल** होने पर सब कार्य सरल हो जाते हैं। प्रतिकूल
749. मंत्री जी के आने से सारे शहर में **हर्ष** की लहर दौड़ गयी। विषाद
750. वयोवृद्ध लोगों को बुढ़ापे की तकलीफें होना **स्वाभाविक** बात है। अस्वाभाविक
751. कोई भी कार्य करने से पूर्व मनुष्य को परिवार की मर्यादा और अपनी **गरिमा** का ध्यान करना चाहिए। लघिमा
752. मैं तुम्हें सभी **आवश्यक** वस्तुओं की एक सूची तैयार करके दे देता हूँ। अनावश्यक
753. **अनायास** ही उसका सारा शरीर काँपने लगा और वह बेहोश हो गया। प्रयास
754. हमें सदैव **सत्य** बोलना चाहिए। मूषा/असत्य
755. उसने इस योजना को सही **रूप** दिया है। विरूप
756. **विस्तार** में सारी बात बता देने से ही इस संशय का निदान हो सकेगा। संक्षेप
757. **मोक्ष** की प्राप्ति सरल नहीं है बन्धन
758. उसे जब कोई **उपाय** न सूझा तब मेरे पास आया। निरुपाय
759. **स्वार्थ**-सिद्धि के लिए दूसरों को हानि पहुँचाना गलत है। परमार्थ
760. डॉक्टर ने उसे **ठोस** आहार लेने से मना किया है। तरल
761. उसका लड़का स्वभाव से **उग्र** है। सभ्य/सौम्य
762. **अल्प** समय में ही तुमने बहुत नाम कमा लिया। दीर्घ
763. भारतीय किसान का जीवन **सरलता** की कहानी है। कुटिलता/जटिलता
764. **उपरिलिखित** निर्देश को पढ़कर ही प्रश्नों का उत्तर दें। अधोलिखित
765. प्रत्यूष **बुद्धिमान** लड़का है। निर्बुद्धि/बुद्धिहीन
766. **मन्थर** गति से बहता जल अपनी ही कहानी कह रहा है। तीव्र
767. बड़ों की बात का सदा **विरोध** अच्छा नहीं है। समर्थन
768. पड़ोसी के प्रति **द्वेष-भाव** शोभा नहीं देता। प्रेम-भाव
769. **यथार्थ** मनुष्य वही है, जो मानवीय मूल्यों का अनुसरण करे। आदर्श
770. वह अपने किये पर **लज्जित** था। निर्लज्ज
771. **स्वाधीनता** एक नियमन है। पराधीनता
772. मानव का लोभ उसके **विनाश** का कारण बन सकता है। सर्जन
773. मनुष्य की लोभी-प्रवृत्ति के कारण आज जंगल **सिमट** कर रह गये हैं। विस्तार
774. संस्कृत-साहित्य अत्यन्त **समृद्ध** है। दरिद्र
775. **कनिष्ठ** भ्राता के मुख से अपवचन सुनकर उसे अपना जीवन व्यर्थ प्रतीत होने लगा। ज्येष्ठ

ZONE TECH

776. समारोह के अन्त में मुख्य अतिथि ने **पुरस्कार** वितरित किये। तिरस्कार

777. इन शब्दों की **सन्धि** करें।

778. सुख-दु:ख जीवन के **क्षणिक** तत्त्व है। शाश्वत

779. अपने **सहोदर** को देखकर उसका साहस द्विगुणित हो गया। परोदर (सौतेले)

780. कठोर **परिश्रम** के बाद ही सफलता हाथ लगती है। आलस्य

781. **इच्छित** वस्तु की प्राप्ति न होने पर जीवन को व्यर्थ नहीं समझ लेना चाहिए। अनिच्छित

782. **आगामी** वर्षों में जनसंख्या बहुत बढ़ जाएगी। विगत

783. वह अपने विषय का पूर्ण **अभिज्ञ** है। अनभिज्ञ

784. उसने आजीवन **ब्रह्मचर्य** व्रत का पालन करने का निश्चय किया। गृहस्थ

785. **शिष्टजन** किसी की निन्दा नहीं करते। अशिष्ट

786. **गृहस्थ** व्यक्ति को ये सब शोभा नहीं देता। सन्यासी

787. स्वतंत्र देश के निवासी किसी **बन्धन** में रहना नहीं स्वीकार कर सकते। मुक्ति

788. उसके पास चुने हुए उपन्यासों का एक विशिष्ट **संग्रह** है। विग्रह

789. आवश्यकता से **अधिक** धन की प्राप्ति मनुष्य को गलत रास्ते पर ले जाती है। अनधिक

790. विवाह होना वहीं, जहाँ **संयोग** है। वियोग

791. **तिरस्कृत** को गले लगाना महत्ता है। पुरस्कृत

792. **राजा** वह होता है, जो देश पर शासन करता है। रंक

793. विश्व में गरीबी मिटाने और **समता** लाने की बात सभी करते हैं। विषमता

794. सन्त सांसारिक ऐश्वर्य पर **आसक्त** नहीं होते। विरक्त

795. नेता जी ने यह आवश्वासन दिया हे कि गाँवों में बिजली की समस्या का **शीघ्र** निराकरण करवाया जाएगा। विलम्ब

796. उस व्यक्ति का यही दोष था कि वह **स्वावलम्बी** बनना चाहता था। परावलम्बी

797. एक **ऋजु** रेखा खींचकर उस पर नब्बे अंश का कोण बनायें। निर्यक्

798. शहर पहुँचने का रास्ता अत्यन्त **दुर्गम** है। किसी दूसरे रास्ते से जाइए। सुगम

799. गृहस्थी के **बन्धन** के कारण मैं कहीं आ-जा नहीं सकता। मोक्ष

800. महाराजा अग्रसेन के श्रम और पराक्रम से कई अन्य परम्पराओं का भी **विकास** हुआ। ह्रास

801. उसने मेरे **अनुरोध** को ठुकुरा दिया। विरोध

802. भाग्य के प्रति विश्वास करना व्यक्ति की **कमजोरी** को दिखाता है। मजबूती

803. हमारे देश की **रीति-नीति** सदैव से भाईचारे और सद्भाव की रही है। कुरीति

804. यज्ञ की पूर्णाहुति के समय बलि के लिए तैयार मूक अश्व की छपटाहट देखकर महाराज अत्यन्त **विचलित** हो उठे थे। अविचलित

805. **यद्यपि** भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है तथापि यहाँ की स्थिति जरा भी अच्छी नहीं है। तथापि

806. हमारे देश का युवावर्ग **पाश्चात्य** संस्कृति को अपनाता जा रहा है। पौर्वात्य

807. तलवार की **घात** से उसका हाथ खण्डित हो गया। प्रतिघात

808. उसे कुछ भी नहीं समझ में आता, वह तो बिल्कुल **जड़** बन गया है। चेतन

809. उसके कानि में एक विशेष **औपचारिकता** थी। अनौपचारिकता

810. उर्वशी ने अपने माता-पिता के सपनों को साकार करने का दृढ़ **संकल्प** किया है। विकल्प

ZONE TECH

811. सभी धर्म-प्रेमियों ने मिलकर उस **विशाल** मन्दिर का निर्माण कराया था। लघु
812. अगले दिन की चिन्ता में वह सारी रात **जागरण** करता रहा। निद्रा
813. हमें सदैव **अपयश** से बचने का प्रयास करना चाहिए। सुयश
814. जगत् के **बाह्य** रूप को देखकर मोहित न हो। अन्तः
815. आमोद-प्रमोद का भाव जीवन की **सुधा** है। हलाहल/गरल
816. पुत्र के व्यापार सँभालते ही उसके घर में **वैभव** छा गया। दारिद्र्य

निर्देशः निम्नलिखित प्रत्येक वाक्य में कालांकित शब्द के लिए उसके नीचे दिये विकल्पों में विलोम शब्द का चयन करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीतिए-

817. कंजिका का **प्रफुल्ल** मन एकाएक ..... हो गया। शुष्क
818. कोई भी वस्तु न तो एकदम **ग्राह्य** हो सकती है और न ही सर्वथा .....। त्याज्य
819. अतिथियों के सदा **सत्कार** करना चाहिए उनका ..... नहीं। बहिष्कार
820. **सम्पन्न** व्यक्ति ..... की व्यथा नहीं जान सकता। विपन्न
821. **जय** के साथ अपरिहार्य रूप में ..... भी जुड़ी है। सन्धि
822. **विज्ञ** सांसारिक मायामोह से मुक्त रहते हैं किन्तु ..... इन बन्धनों में आबद्ध हो जाते हैं। अज्ञ
823. उसके आर्थिक भण्डार की निरन्तर **वृद्धि** हो रही है किन्तु उसके चरित्र का ..... हो रहा है। पतन
824. इस **क्लिष्ट** गद्यांश को ..... भाव में प्रकट करो। सरल
825. **सुख्यात** और ..... , दोनों ही जनसमुदाय में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। कुख्यात
826. यदि हम किसी की **स्तुति** नहीं कर सकते तो हमें उसकी ..... से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। निन्दा
827. व्यक्ति की पहचान उसके **अभिजात** अथवा ..... कुल में उत्पन्न होने से नहीं, उसके गुणों से होती है। अवजात
828. समाज में **धनी** और ..... , दोनों ही प्रकार के व्यक्ति सम्मिलित हैं। निर्धन
829. मेरा इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है कि आप योगी है अथवा ..... । भोगी
830. अर्पिता **कुशाग्र बुद्धि** की है किन्तु उसका भाई ..... का है। मन्द बुद्धि
831. अपरा प्रकृति **क्षर** तथा परा प्रकृति ..... होती है। अक्षर
832. अच्छी फसल के लिए **आवृष्टि** और ..... , दोनों ही ठीक नहीं होती। अनावृष्टि
833. भक्ति **सकाम** नहीं, ... होनी चाहिए। निष्काम
834. **आन्तरिक** कठिनाइयों के साथ-साथ हमारा देश ..... आपदाओं से भी ग्रस्त है। बाह्य
835. मानव को मुक्ति प्राप्त करने के लिए **आसुरी** प्रवृत्तियों को त्याग कर ..... प्रवृत्तियों को अपनाना चाहिए। दैविक
836. नयी शक्ति का **आविर्भाव** पुरानी जर्जर रूढ़ियों के ..... का सूचक होता है तिरोभाव
837. **तपिश** से परेशान होकर भुजंग चन्दन वृक्ष के समीप ..... के लिए आता है। शीतलता
838. **मिष्टभाषी** का सब स्वागत करते हैं किन्तु ..... से लोग दूर रहना चाहते हैं। कटुभाषी
839. नाटककार पात्रों का चरित्र-चित्रण **प्रत्यक्ष** नहीं, ... शैली में करता है। परोक्ष
840. विज्ञान ने ऐश्वर्य के साधन **सुलभ** करा दिये हैं परन्तु संवेदनशीलता दिन-प्रतिदिन ..... होती जा रही है। दुर्लभ
841. **पाश्चात्य** विद्वान भी ..... संस्कृति का पर्याप्त सम्मान करते हैं। प्राच्य/पौर्वात्य
842. प्राचीन काल में ऋषि-मुनि **प्रवृत्ति** मार्ग के स्थान पर ..... मार्ग को अधिक महत्व देते थे। निवृत्ति
843. तुम कैसे आदमी हो? तुम्हे अपने **शत्रु** और ..... की पहचान तक नहीं। मित्र
844. प्रभु के **आह्वान** के बाद पण्डित जी को ..... के लिए भी आना होगा। विसर्जन

ZONE TECH

845. कितना भी यत्न कर लो, तुम्हारा **भूत** तुम्हारे ..... को प्रभावित अवश्य करेगा। भविष्य
846. **कर्कश** स्वभाव की निशा की मित्रता ..... स्वभाव की सन्ध्या से बहुत पुरानी है। कोमल
847. ..... वस्तुओं को पूर्वाग्रह से **निकृष्ट** बनाता नैतिक द्रोह होता है उत्कृष्ट
848. छोटा भाई जितना **अक्खड़** है, बड़ा भाई उतना ही ..... है। भद्र
849. पदार्थ के गुण-दोष की परीक्षा कर, गुण का **ग्रहण** और दोष का ..... करना चाहिए। त्याग
850. **जरा** और ..... एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जवानी
851. प्रदूषण ने **सुधासिक्त** पर्यावरण को ..... बना दिया है। विषाक्त
852. उद्यमी सदैव कार्य-**निरत** रहता है और आलसी कार्य ..... हो। विरत
853. महापुरुषों की गुण-**गुरुता** उनकी दोष ..... को छुपा लेती है। लघुता
854. सभी पापों की जड़ है- कुण्डित अथवा **तिरस्कृत** प्रेम तो ..... प्रेम का फल क्या है? समादृत
855. इस **संक्षिप्त** गद्यांश की ..... व्याख्या कीजिए? विस्तृत
856. स्वयं **हलाहल** का घूँट पीकर वे आजीवन दूसरों को ..... पिलाते रहे। अमिय
857. ..... प्रयास की अपेक्षा हमेशा **सामूहिक** प्रयास का बल अधिक होता है। वैयक्तिक/एकीकृत
858. कभी-कभी परिस्थितियाँ मनुष्य की **आस्था** को ..... में बदल देती है। अनास्था
859. यह युवक ही **दुश्चरित्र** है मगर उसका बड़ा भाई ..... है। सच्चरित्र
860. प्राणिमात्र में ..... की अपेक्षा **जिजीविषा** प्रबल होती है। मुमूर्षा
861. सागर ने **दास्यभाव** से राम के चरणों की पूजा कर उनका ..... ग्रहण की। स्वामित्व
862. जिसका **जन्म** हुआ है, उसका (की) ..... निश्चित है। मृत्यु
863. **सज्जन** का संग सुखदायी और ..... का संग दु:खदायी होता है। दुर्जन
864. **पूर्वाह्न** हो अथवा ....., दिन में किसी भी समय शयन करना स्वास्थ्य के लिए उपयोगी नहीं कहा जा सकता। अपराह्न
865. जीवन के साथ ..... निश्चित है। मरण
866. शिव और पार्वती **ताण्डव** और ..... नृत्य की मुद्रा में सुशोभित थे। लास्य
867. मेरी **उद्दण्डता** के बावजूत उसके व्यवहार में ..... थी। विनीतता/नम्रता/विनम्रता
869. महान् पुरुष **मान्** ..... जैसी तुच्छी बातों में नहीं आते। अपमान
869. दोनों भाइयों के स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर है, जहाँ अग्रज **सदय** है तो अनुज ..... । निर्दय
870. उपन्यास की पृष्ठभूमि **कल्पित** होते हुए भी उसकी कथावस्तु में ..... का पुट देखा जा सकता है। यथार्थ
871. विश्वविद्यालय ने हिन्दी-विषय को **अनिवार्य** कर दिया है, जबकि अंग्रेजी-विषय अभी ..... है। वैकल्पिक
872. **उत्कर्ष** और ..... जीवन के अनिवार्य अंग हैं। अपकर्ष
873. सुयोग्य **वक्ता** का उपदेश तभी प्रभावी हो सकता है जब ..... भी सुपात्र हो। श्रोता
874. यह ..... रूप से कहा जा सकता है कि इस रचना के कई अंशों की ऐतिहासिकता **सन्दिग्ध** है। असन्दिग्ध
875. **मधुर** और ..... अनुभवों का नाम जिन्दगी है। कटु
876. संसार को सर्वथा **निस्सार** कहना उतना ही अनुचित है, जितना कि उसे ..... कहना। सस्सार
877. जिसकी ..... होती है उसका **विनाश** निश्चित है।
878. ..... को त्याग कर **उदारता** के गुण को अपनाओं। अनुदारता
879. **कठोर** शिकारी और ..... हृदयी गौतम के बीच हंस को लेकर विवाद होने लगा था। कोमल
880. ईश्वर **व्यक्त** है और ..... भी, सगुण और निर्गुण भी। अव्यक्त

881. मनुष्य के इस **कृत्रिम** रूप के पीछे उसका ..... रूप छुपा रहता है। प्रकृत
882. इसकी **मूर्च्छा** को दूर करके इसे ..... में लाये। चेतना
883. अजनबी के अजीब व्यवहार को देखकर किसी को उस पर **सन्देह** होने लगा और किसी को ..... । नि:संदेह
884. कैसी विडम्बना है, श्रुति ने मेरे **उपकार** का बदला ..... से दिया है। अपकार
885. किसी का भी **अपमान** न करना उसका ..... करने के बराबर है। सम्मान
886. **अनुज** ने भ्रातृ-स्नेह के कारण ..... का साथ दिया। अग्रज
887. शरीर के ..... अथवा **स्थूल** होने से कुछ नहीं होता, बुद्धि तीव्र होनी चाहिए। कृश
888. वे जितना **तटस्थ** हाने की चेष्टा करते, उतना ही ..... होने का आरोप उनके सिर मढ़ दिया जाता। पक्षधर
889. गंगा नदी का जल **निर्मल** था किन्तु मानवीय गतिविधियों ने उसे ..... कर दिया। मलिन
890. नचिकेता ने यमराज से **दृश्य** लोक की कोई वस्तु न माँगकर ..... स्वर्ग के बारे में प्रश्न किया। अदृश्य
891. **जागरण** जीवन है और ..... मरण। सुषुप्ति
892. राष्ट्रीय एकता परिषद्, जो पिछले दिनों **निष्क्रिय** सी लगती थी, अब पुन: ..... हो गयी है। सक्रिय
893. वेद **गुरू** ..... परम्परा के कारण सुरक्षित रह सके। शिष्य
894. **निरक्षर** को ..... बनाना हमारा धर्म है। साक्षर
895. गाँधी के अनुसार **अत्याचार** ..... से देना ही मनुष्यता है। सदाचार
896. जो बड़ों का **आदर** करते हैं, उनका कभी ..... नहीं होता। अनादर
897. जिस हृदय ने **शाश्वत** प्रेम और आत्मानुभूति का आनन्द प्राप्त कर लिया हो, उसे ..... लौकिक सुख कब अपनी ओर आकृष्ट कर सकते हैं। क्षणभंगुर/क्षणिक
898. शान्तनु **अपव्ययी** है, जबकि उसका भाई अनुलोम ..... है। मितव्ययी
899. ..... और **समष्टि**, दोनों की प्रगति परस्पर के सहयोग से ही सम्भव है। व्यष्टि
900. ..... व्यक्तित्व की अपराजिता ने कैसा अद्भूत **मूक** अभिनय किया। वाचाल
901. ..... से तड़पते प्राणी **मिलन** की आशा के सहारे की जीवित रहते हैं। विरह
902. **सात्त्विक** विचारवाले के इस घर में ..... प्रवृत्ति का पुत्र देख हैरानी होती है। तामसिक
903. प्रत्येक **क्रिया** की ..... स्वाभाविक है। प्रतिक्रिया
904. एक बाण **प्राण** ले सकता है तो अगुलियों का कोमल स्पर्श ..... भी दे सकता है। जीवन
905. जिस विश्वविद्यालय में हिन्दी एक **ऐच्छिक** विषय के रूप में पढ़ायी जाती है, वहाँ उसे ..... विषय के रूप में पढ़ाया जाए। अनिवार्य
906. **घृणा** को ..... से जीती। प्रेम
907. ..... की नीवें पर ही **नूतन** का राजप्रासाद स्थित है। पुरातन
908. विद्या की **विनम्रता** से उसके प्रतिद्वन्द्वियों का ..... चकनाचूर हो गया। अहंकार
909. जहाँ **शक्त** की विजय होती है वहाँ ..... पराजित ही होता है। अशक्त
910. भानु बहुत **कुटिल** लड़का है, उसे ..... हृदय न जानो। सरल
911. चालक की **एक**उ गलती ..... की जान ले सकती। अनेक
912. सीधी-साधी रत्ना की हम पर जितनी **अनुरक्ति** थी, उसके पति की हम पर उतनी ही ..... थी। विरक्ति
913. हमारे भोजनालय में **आमिष** और ....., दोनों प्रकार के भोजन का प्रबन्ध है। निरामिष
914. **दुष्कर** पर्वतीय यात्रा भी यायावार के लिए ..... होती है। सुकर

ZONE TECH

915. **अभिमान** से नहीं, अपितु ..... से मनुष्य पनपता है। नम्रता

916. सभी प्रकार का **कौटिल्य** छोड़कर जीवन में ..... लाने से ही तुम सच्च प्रायश्चित कर सकोगे। आर्जिव (सारल्य)

917. न मैं किसी की **उपेक्षा** करता हूँ, न किसी प्रकार की ..... रखता हूँ। अपेक्षा

918. **वादी** और ..... के वकील बहस कर रहे हैं। प्रतिवादी

919. अधिकतर भारतीयों ने अहिंसा के पथ को **स्वीकार** किया, जिन्होंने उसका ..... किया, वे क्रांतिकारी कहलाये। बहिष्कार

920. स्वच्छन्दवादी काव्य में प्रेम का रूप स्थूल और **ऐन्द्रिय** न होकर, सूक्ष्म और ..... होता है। अतीन्द्रिय

921. राजनीति में यह कैसा विकृत खेल है- इसमें आज जो **वन्द्य** है- कल वहीं ..... हो जाता है। निन्द्य

922. **प्राचीन** संस्कृति में सिर्फ गुण और ..... संस्कृति में सिर्फ दोष हो, ऐसा भी नहीं है। अर्वाचीन

923. **पतन** नहीं ..... बनूँगा, शान्ति नहीं, तूफान बनूँगा। उत्थान

924. **समान्य** के प्रति लोभ 'लोभ' कहलाता है और ..... के प्रति 'प्रीति'। विशिष्ट

925. **काल्पनिक** कहानियाँ अविश्वसनीय होती हैं और ..... कहानियाँ विश्वसनीय। वास्तविक

926. श्रवणकुमार के माता-पिता द्वारा दशरथ को दिया गया **शाप** भी उनके लिए ..... बन गया। वरदान

927. रमणिका अतिशय **गम्भीर** लड़की है परन्तु उसका भाई ..... है। चपल

928. तुम्हारे **पक्ष** में कितने मत पड़े और ..... में कितने? विपक्ष/प्रतिपक्ष

929. पेड़ **सजीव** होते हैं और पेड़ों से प्राप्त लकड़ी ..... । निर्जीव

930. संहिता के हृदय में आपके प्रति **वैमनस्य** नहीं है, बल्कि वह आपके प्रति ..... रखती है। सौमनस्य

931. हमने क्या **ग्रहण** किया है, यह सोचने से पहले आवश्यक यह है कि हमने क्या ..... किया है। अर्पण

ZONE TECH

5. पर्यायवाची शब्द

निर्देश: नीचे दिये गये शब्दों का पर्यायवाची शब्द लिखिए:

1.	तरणी	नाव
2.	व्योम	आकाश
3.	मेघ	पयोध
4.	दिनकर	प्रभाकर
5.	दास	भृत्य
6.	कानन	वन
7.	मारुत	वायु
8.	प्रसून	पुष्प
9.	अम्बु	जल
10.	पावक	हुताशन
11.	शत्रु	अरि
12.	अज	ब्रह्मा
13.	अधीर	व्यग्र
14.	अन्त:करण	अन्तर्मन
15.	ईप्सा	आकांक्षा
16.	आकाशगंगा	सुरनदी
17.	आख्यान	कहानी
18.	आलोचना	समीक्षा
19.	परिष्कृत	परिमार्जित
20.	अभीष्ट	वांच्छित
21.	थकान	क्लान्ति
22.	ईर्ष्या	डाह
23.	वृक्ष	विटप
24.	भ्रान्ति	भ्रम
25.	काम	मदन
26.	विकसित	प्रफुल्ल
27.	हृदयग्राही	मनमोहन
28.	पत्नी	अर्द्धांगिनी
29.	पक्षी	परिन्दा

ZONE TECH

30. भ्रमर — मधुकर
31. मेहमान — अभ्यागत
32. गीली — आर्द्र
33. कथा — कहानी
34. क्रोध — अमर्ष
35. मधवा — इन्द्र
36. हुताशन — आग

निर्देश: नीचे दिये गये पर्यायवाची शब्दों में से भिन्न शब्द का चयन कीजिए-

37. प्रभाकर — दिनकर
38. अम्बोद् — जलद

निर्देश: प्रत्येक शब्द के लिए पर्यायवाची शब्द लिखिए-

39. अन्धकार — तिमिर
40. निधन — देहावसान
41. किरण — अंशु
42. नियति — भाग्य
43. किंनरेश — कुबेर
44. बादल — नीरद
45. असुर — दनुज
46. आम — अमृतफल
47. अनुपम — अद्वितीय
48. हनुमान — कपीश
49. आँसू — नयनाम्बु
50. आँधी — प्रभंजन
51. आरोग्य — नीरोग
52. आश्चर्य — कुतूहल
53. इष्ट — काम्य
54. इन्द्राणी — शची
55. ईश्वर — ईश
56. अवहेलना — उपेक्षा
57. उत्कण्ठा — लालसा
58. उजाड़ — बियाबान
59. उत्साह — हौसला
60. उस्ताद — गुरु
61. उद्दण्ड — उच्छृंखल
62. उपासना — पूजा

ZONE TECH

63.	उकसाना	उभारना/बढ़ावा देना
64.	उनींदा	निद्रालु
65.	ऋजु	सीधा
66.	एतबार	विश्वास
67.	ओज	पराक्रम
68.	क्षिति	पृथ्वी
69.	शुन	कुत्ता
70.	कस्तूरी	मृगमद
71.	कटाक्ष	छींटाकशी
72.	कामातुर	कामुक
73.	मदनशलाका	कोयल
74.	किरण	रश्मि
75.	धनेश्वर	कुबेर
76.	मनोज	कामदेव
77.	कृष्ण	बाँकेबिहारी
78.	धीवर	केवट
79.	कटि	मध्यांग
80.	पारिजात	कल्पशाल
81.	मारुत	हनुमान्
82.	मसृण	कोमल
83.	अनूढ़ा	प्रौढ़ा
84.	केश	अलक
85.	निर्मोही	क्रूर
86.	फूल	सुमन
87.	सूर्य	भास्कर
88.	प्रभात	उषा
89.	छन्द	आवरण
90.	शतदल	सरसिज
91.	कैवल्य	निर्वाण
92.	विलोचन	आँख
93.	कार्मुक	धनुष
94.	जातरूप	सोना
95.	अम्बक	लोचन
96.	मृगेन्द्र	शार्दूल
97.	उर्वी	धरणी

ZONE TECH

98.	शिलीमुख	विशिख
99.	सर्वमुख	जल
100.	चंचरीक	भ्रमर
101.	आडम्बर	ढोंग
102.	कपाल	माथा
103.	नागर	चतुर
104.	आकाश	व्योम
105.	पुत्री	आत्मजा
106.	बाघ	मृगेन्द्र
107.	नलिन	कमल
108.	विद्युत्	दामिनी
109.	अंशुमाली	सूर्य

ZONE TECH

6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

निर्देश: नीचे वाक्यांश कुछ दिये गये हैं। इन विकल्पों में से उस शब्द का चयन कीजिए, जिसे वाक्यांश के स्थान पर रख देने से उसका अर्थ पूर्णत: प्रकट हो जाए-

1.	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
2.	आवश्यकता से अधिक धन का त्याग	अपरिग्रह
3.	जिसके पास कुछ भी न हो	अकिंचन
4.	जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो	अगोचर
5.	वह वस्तु, जिसके आर-पार न देखा जा सके	अपारदर्शी
6.	किसी बात को अत्यधिक बढ़ चढ़ाकर कहना-	अतिशयोक्ति
7.	जिसको जीता न जा सके	अजेय
8.	वह स्त्री, जिसके पति ने दूसरी शादी कर ली हो	अध्यूढा
9.	वह आदेश, जो एक निश्चित अवधि तक ही लागू हो	अध्यादेश
10.	जो बिन माँगे मिल जाए	अयाचित
11.	सबसे प्रथम गिना जानेवाला	आरम्भ
12.	जिसका अहंकार चूर्ण हो गया हो	आन्तगर्व
13.	वह कवि, जो तत्काल कविता करे	आशुकवि
14.	सिर से पैरों तक	आपादमस्तक
15.	आय-व्यय के आँकड़ों की जाँच करनेवाला	अंकेक्षक
16.	अवस्था में बड़ा व्यक्ति	ज्येष्ठ
17.	प्रतिक्रियावादी	प्रत्युत्पन्नमति
18.	हर काम को जरूरत से ज्यादा देर में करनेवाला	दीर्घसूत्री
19.	युद्ध करने का इच्छुक	युयुत्सु
20.	अनुशासनात्मक कार्रवाई की प्रक्रिया के फलस्वरूप पद से नीचे उतरना	पदावनति
21.	जो शत्रु की हत्या करता है	शत्रुघ्न
22.	जिसे पार करना कठिन हो	दुर्गम
23.	हमेशा रहनेवाला	शाश्वत
24.	बिना घर का	अनिकेत
25.	अत्यधिक वर्षा होना	अतिवृष्टि
26.	जिसका भोजन दूध ही होता है	दुग्धाहारी
27.	वह सायंकालीन बेला, जब पशु वन से चरकर लौटते हैं	गोधूलि
28.	जो सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके	सुलभ

ZONE TECH

29.	एक-दूसरे पर आश्रित होना	अन्योन्याश्रित
30.	साहित्य से सम्बन्ध रखनेवाला	साहित्यिक
31.	किसी कार्य के लिए आज्ञा करना	अनुमति
32.	किसी के प्रति उदारता और कृपापूर्वक किया जानेवाला व्यवहार	अनुग्रह
33.	वह वस्तु, जो नाशवान् हो	नश्वर
34.	वह स्त्री, जिसे पति ने त्याग दिया है	परित्यक्ता
35.	किसी ग्रन्थ में अन्य व्यक्ति द्वारा जोड़ा गया भाग	क्षेपक
36.	मोक्ष की इच्छा करनेवाला	मुमुक्षु
37.	गुरु के समीप रहनेवाला शिष्य	अन्तेवासी
38.	पूछने योग्य जो हो	प्रष्टव्य
39.	जो सदा दूसरों पर सन्देह करता है	शंकालु
40.	जानने की इच्छा रखनेवाला	जिज्ञासु
41.	एक स्थान पर टिककर न रहनेवाला	असभ्य
42.	जो किसी का हित चाहता हो	हितैषी
43.	जो ममत्व से रहित हो	निर्मम
44.	जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
45.	जिसका सम्बन्ध पृथ्वी से हो।	पार्थिक

निर्देशः कालांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए :.

46.	वह **ईश्वर को न माननेवाला** मनुष्य है	नास्तिक
47.	ईश्वर का **कोई आकार नहीं** होता है	निराकार
48.	**आँखों के सामने** घटित घटना पर विश्वास तो करना ही पड़ेगा।	प्रत्यक्ष
49.	भारतीयों की **बुरी दशा** देखकर गाँधी जी का मन द्रवित हो गया था?	दुर्दशा
50.	**दोपहर के समय** शालू आराम कर रही थी।	मध्याह
51.	वैभव को उस विद्यालय में **इस्तिहान लेनेवाला बनकर** जाना है।	परीक्षक
52.	ममता **कम बोलती** है	मितभाषी

निर्देशः निम्नांकित वाक्यांश में अनेक शब्दों के लिए सही शब्द का चयन कीजिए:

53.	जो पसीने से उत्पन्न हो	स्वेदज्
54.	जिसका वेधन न किया जा सके	अवध्य
55.	पलकों को गिराये बिना	अपलक/निर्निमेष
56.	जो उपकार न माने	कृतघ्न
57.	वह सामग्री, जो हवन के लिए है	हवि
58.	जिसका सम्बन्ध आत्मा से हो	आत्मिक
59.	जो किसी का उपकार माने	कृतज्ञ
60.	जो दूसरे के बलबूते पर हो	परोपजीवी
61.	वह सिद्धान्त, जो हर वस्तु को नाशवान् मानता है	अनित्यवादी

ZONE TECH

62.	बिना देख-रेख का जानवर	अनेर
63.	जिसके ऊपर किसी का उपकार हो	उपकृत
64.	जिसका उत्तर न दिया गया हो	अनुत्तरित
65.	विकृत शब्द	अपभ्रंश
66.	ऐसी उक्ति, जो परम्परागत हो	अनुश्रुति
67.	जिसका वध करना अनुचित हो	अवध्य
68.	कृपा के कारण सन्तोष धारण किये हुए मनुष्य	कृतार्थ
69.	केवल इसी लोक से सम्बन्धित	इहलौकिक
70.	इन्द्रियों द्वारा जिसका अनुभव न किया जा सके	अतीन्द्रिय
71.	ऐसी अविवाहिता नारी, जो किसी पुरुष में अनुरक्त	अनूढ़ा
72.	ऐसा पुष्प, जो अभी विकसित नहीं हुआ हो	मुकुल
73.	वह रोग, जिसका अच्छा होना कठिन हो	असाध्य
74.	जिस वस्त्र को पहना न गया हो	अप्रहत
75.	जिसका जन्म अच्छे कुल में हुआ हो	कुलीन
76.	वह भाई, जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो	अन्योदर
77.	जिसको व्यवहार में नहीं लाया जाता हो	अव्यवहत
78.	सूर्य के उदय होने का स्थान	उदयाचल
79.	जिसके विषय में कोई ज्ञान न हो	अनवगत
80.	जिसका विभाजन न किया जा सके	अविभाज्य
81.	वह वस्तु, जिसकी चाह हो	इच्छित
82.	प्रासाद (महल) के अन्दर का भाग	अन्तःपुर
83.	आरम्भ से अन्त तक	आद्यन्त
84.	कार्य में संलग्न रहनेवाला	कर्मरत
85.	सुन्दर-लम्बे केशों से युक्त नारी	केशिनी
86.	जिसके नेत्र मछली के नेत्रों के सदृश हों	मीनाक्षी
87.	जो समान न हो	असम
88.	जिस कार्य का निवारण न हो सके	अनिवार्य
89.	बनावटी रूप में पैदाईश	कृत्रिम
90.	पर्वत के ऊपर एक-सी जमीन	अधित्यका
91.	वह जमीन, जिसमें कुछ भी पैदा न हो	ऊंसर
92.	जिसका त्याग न किया जा सके	अत्याज्य
93.	वह स्त्री, जिसे पति ने त्याग दिया हो	परित्यक्ता
94.	ऐसी जमीन, जो उत्पादक हो	उर्वर
95.	इतिहास से सम्बन्धित ज्ञान रखनेवाला	इतिहासज्ञ
96.	जिसे न देख सकें, न सुन सकें और न छू सकें	अगोचर

ZONE TECH

97. जो स्वाभाविक न हो	कृत्रिम
98. जन्म लेते ही मर जाना	आदण्डपात
99. वह स्थान, जहाँ कोई न हो	जनशून्य, निर्जन
100. जो बहुत लगनशील और परिश्रमी हो	अध्यवसायी
101. जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हों	आजानुबाहु
102. जो बिना वेतन लिये कार्य करता हो	अवैतनिक
103. ऊपर चढ़नेवाला	ऊर्ध्वगामी
104. जो किसी के स्थान पर कार्यरत हो	स्थानापन्न
105. जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो	इन्द्रियजित
106. जिसका मूल्य न किया जा सके	अमूल्य
107. जो खाने योग्य न हो	अखाद्य
108. जिसने इन्द्र को जीता न हो	इन्द्र-अजीत
109. जिससे सब कुछ कहा जा सके	अन्तरंग
110. छोटा भाई	अनुज
111. जीवन के अन्त तक	आजीवन
112. जो सबके आगे रहता हो	अग्रणी
113. जिसकी पहले से आशा हो	प्रत्याशित
114. डर से भागना	डरपोक
115. जो सुना न गया हो	अश्रुत
116. जिसका ध्यान एक ही जगह टिका हो	एकाग्र
117. जिस बच्चे के माता-पिता मर गये हों	अनाथ
118. जिसका जन्म न हुआ हो	अजन्मा
119. जिसको वेधा न जा सके	अवेध्य
120. विवाहिता पत्नी से उत्पन्न सन्तान	औरस
121. जिसकी थाह न मिल सके	अपार
122. जिसका कोई बैरी न हो	अजातशत्रु
123. जो पूरी तरह पका हो	परिपक्व
124. कष्ट से सम्पन्न होनेवाला	कष्टसाध्य
125. जो कहा जा चुका हैं	कथित
126. जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय
127. जो दिखायी न दे	अदृश्य
128. हड्डियों का ढाँचा	अस्थिपंजर
129. जिसका मन किसी दूसरी ओर हो	अन्यमनस्क
130. साँस धीरे-धीरे चलना	मन्दश्वास
131. नवविवाहिता स्त्री	नवोढ़ा

ZONE TECH

132. किसी संघ अथवा संस्था का स्थायी प्रधान — अध्यक्ष
133. जिसकी नाप-तोल न हो सके — अपरिमेय
134. जो प्रस्ताव स्वीकृत किया जा चुका है — पारित
135. जिस स्त्री का पति परदेश में हो — प्रोषितपतिका
136. जो बहुत बातें करता हो — वाचाल
137. निश्चित समय में पत्रोत्तर का उत्तर न प्राप्त होने की दशा में अनुबोधक के रूप में भेजा जानेवाला पत्र — अनुस्मारक
138. विधानमण्डल द्वारा पारित/स्वीकृत विधि — अधिनियम
139. कार्य को नये ढंग से करने की पद्धति — नवीनीकरण
140. रसास्वादन — किसी रस के आनन्दजनित् भाव का उपभोग करना
141. जो सब कुछ जानता है — सर्वज्ञ
142. जो कहा न जा सके — अकथनीय
143. समय की दृष्टि से अनुकूल — समयप्राप्त
144. जिसने देश के साथ विश्वासघात किया हो — देशद्रोही
145. जिसकी गरदन सुन्दर है — सुग्रीव
146. जो इस लोक की बात हो — लौकिक
147. जंगल में लगनेवाली आग — दावानल
148. जहाँ पहुँचा न जा सके — अगम
149. पुरुष और स्त्री का जोड़ा — युगल
150. वर्णन से परे — वर्णनातीत
151. वह स्त्री, जिसकी कोई सन्तान न हो — बाँझ
152. प्रश्न अथवा प्रश्नादि के उत्तर की अपेक्षा करनेवाला — उत्तरापेक्षी
153. जिसके समान कोई दूसरा न हो — अद्वितीय
154. फेंक कर चलाया जानेवाला हथियार — अस्त्र
155. पुष्पों के द्वारा उत्पन्न किया गया रस — मकरन्द

निर्देश: निम्नांकित प्रश्नों के अन्तर्गत दिये गये शब्द के अर्थ को व्यक्त करने वाले सम्भावित उत्तर दीजिए-

156. विरूपित — जिसका रूप बिगाड़ दिया गया हो ।
157. अनादृत — जिसका आदर न किया गया हो।
158. निर्मूल — जिसकी जड़ न हो।
159. अनशन — विरोध के प्रदर्शन में धरना देकर बैठना
160. उद्भिज् — पृथ्वी फोड़कर जन्म लेनेवाला
161. अतीन्द्रियज — जिसकी अनुभूति इन्द्रियों से न हो।
162. युगप्रवर्त्तक — युग को बदलनेवाला/नये युग में नयी धारा प्रारम्भ करनेवाला
163. अस्थिशेष — मृत व्यक्ति को जला देने पर बची हड्डियाँ
164. यजमान — यज्ञ करनेवाला
165. अन्योदर — दूसरे पिता या दूसरी माता से उत्पन्न भाई

ZONE TECH

166. धर्मशास्त्री	धर्मशास्त्र का ज्ञाता पण्डित
167. अनूदित	जिसका अनुवाद किया गया हो।
168. आतिथेय	अतिथि का सेवा करनेवाला ।
169. निर्वचनीय	वाणी से न कहने योग्य
170. बहुभाषाविद्	बहुत-सी भाषाएँ जाननेवाला
171. प्रत्युत्पन्नमति	जो तत्काल उत्तर दे सके।
172. प्रयाणगीत	युद्ध के लिए जानेवाले वीरों का प्रयाणगीत
173. चारण	वंश की कीर्त्ति गानेवाला
174. द्विपद	जिसके दो पैर हों ।
175. आक्रान्त	जिस पर आक्रमण किया गया हो ।
176. तूलिका	चित्र अंकित करनेवाला ब्रश
177. कर्त्तव्यच्युत	जिसने अपने कर्तव्य को छोड़ दिया हो।
178. जलज्	जल में उत्पन्न होनेवाला
179. निशीथ	अर्द्धरात्रि का समय
180. शास्त्रसम्मत	शास्त्र, जिसका समर्थन करें।
181. निष्प्रभ	स्वच्छ और श्वेत
182. अनावृत	जो ढँका हुआ न हो ।
183. प्रागैतिहासिक	जो इतिहास में पहले का है।
184. प्रत्यागत	लौट कर आया हुआ ।
185. अग्रलेख	समाचारपत्र का मुख्य लेख
186. अप्रमेय	जो प्रमाण से सिद्ध न हो।
187. नियतकालिक	निश्चित तिथि पर आनेवाला
188. सूर्यसंक्रान्ति	सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना
189. छद्मवेशी	नकली वेश धारण करनेवाला
190 कलाविद्	जो कला का ज्ञान रखता है।
191. सद्यः प्रसूता	ऐसी स्त्री, जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो।
192. मातृहन्ता	जो माता की हत्या कर चुका हो ।
193. सुवासिनी	ऐसी विवाहिता अथवा अविवाहित पुत्री जो अपने पिता के घर रह रही हो ।
194. युयुत्सु	युद्ध करने का इच्छुक
195. विदिशा	जो बतायी गयी हो, उससे विपरीत दिशा
196. मुमुक्षु	मन की इच्छा को हर हाल में पूरी करनेवाला
197. प्रज्ञाचक्षु	जो अत्यन्त बुद्धिमान् है।
198. बुभुक्षु	खाने की इच्छा रखनेवाला
199. अग्राशन	भोजन के आरम्भ में देवता के लिए निकाला हुआ अंश
200. उच्छिष्ट	खाने के बाद झूठा हुआ भोजन

ZONE TECH

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के अन्तर्गत दिये वाक्यों में कालांकित शब्दों के पर्यायवाची / समानार्थी शब्दों के उत्तर दीजिए-

201. उसने अपना चरित्र-निर्माण इस प्रकार किया है कि वह **राग, द्वेष आदि से पूर्णतया रहित है।** निष्काम
202. केवल वे वाक्य पढ़ें, **जिनके नीचे रेखा खिंची हो।** रेखांकित
203. बुन्देलखण्ड की भूमि **ऊबड़-खाबड़ है।** विषम
204. तपेदिक **छूत से फैलनेवाला** रोग है । संक्रामक
205. खोजता-खोजता गुप्तचर उस स्थान पर पहुँच गया, **जहाँ पर सेना रहती है।** छावनी
206. **किसी की हँसी उड़ाकर** उसे दु:ख पहुँचाना अच्छा नहीं होता। उपहास
207. जीवन में वही सफल होता है, जो **दूर की सोचता** है। दूरदर्शी
208. माता-पिता की मृत्यु के बाद तो उसने **आशा ही छोड़ दी थी।** हताश
209. संन्यासी **आवश्यकता से अधिक संसाधन नहीं एकत्र करते हैं।** मितव्ययी
210. यह जानते हुए भी, उसका पुत्र धन की व्यर्थ व्यय करता था, उसने उससे कुछ नहीं कहा। अपव्ययी
211. आदि जानता था कि उसका पुत्र **विश्वास के योग्य है।** विश्वसनीय
212. विवाह-योग्य अवस्था होते हुए भी अनादि अभी तक **परिणय सूत्र में नहीं बँधा** है। अविवाहित
213. धनवान होते हुए भी वह **बहुत कम खर्च** करनेवाला व्यक्ति है। मितव्ययी
214. गरीब होने के कारण उर्वशी से स्कूल की **फीस नहीं ली गयी** थी। नि:शुल्क
215. उनके विद्यालय में धूमधाम से **वर्ष में एक बार** उत्सव मनाया जाता था। वार्षिक
216. अंजन **ईश्वर को न माननेवाला मनुष्य** है। नास्तिक
217. वह कदापि ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो **किये गये का उपकार न माने।** कृतघ्न
218. **विचारपूर्वक विवेचन** करने पर ज्ञात हुआ कि वह कोई कठिन मुद्दा नहीं था। विवेचना
219. विभीषण ने रावण को समझाया कि दूत होने के कारण **हनुमान का वध करना अनुचित होगा।** अवध्य
220. विधि ने अपनी रुठी हुई बहन को **मनाने के लिए बहुत विनती** की। मनुहार
221. **निष्पाप और कलंकरहित होने पर** भी रवि ने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया। निष्कलंक
222. वर्षा हो जाने के कारण **हार-जीत के फैसले के बिना ही** मैच रद्द कर देना पड़ा। अनिर्णीत
223. वह ऐसी वस्तु है, जिसकी **कामना की जा सके।** मनोवांछित
224. पश्चिम **सूर्यास्त का स्थान** है। अस्ताचल
225. जब वह घर लौटा तब उसे **भूख लगी** थी। भोजेच्छु
226. तुम्हें यह बात **पहले बतायी जा चुकी है।** पूर्व-वर्णित
227. मनीषा सबकी प्रिय इसलिए थी कि क्योंकि उसका **आचरण अच्छा** था। सदाचारी
228. इस उपन्यास को छोड़ दो, यह **पढ़ने-योग्य नहीं** है। अपठनीय
229. धनवान अघोरी सेठ ने **गरीबों के लिए मुफ्त भोजन** का आयोजन कर रखा था। सदावर्त
230. रघु और उसका मित्र विभु **एक ही उम्र** के हैं। समवयस्क
231. इसके विषय में हम सभी ने **पर्याप्त सुन रखा है।** परिश्रुत
232. नाथ की पत्नी **अत्यधिक क्रोध करनेवाली स्त्री** है। भामिनी
233. किंजल्क की पत्नी किसी **परपुरुष से प्रेम करती थी और उसे किसी पर प्रकट न होने देती थी।** परकीया
234. मेरा मित्र आकाश **बायें हाथ से सधा** है। वामहस्त

ZONE TECH

235. इस समस्या के निराकरण के लिए तुम टाटवाले बाबा से मिलो क्योंकि वे इस **विषय का पूर्ण ज्ञान रखनेवाले** हैं। पारंगत

236. बाढ़ के कारण गाँव में ऐसा समय आ गया था, जब **खाद्य-पदार्थों का मिलना कठिन** हो गया। अकाल

237. **हाथ में आया हुआ** अवसर छोड़ देना मूर्खता होगी। हस्तागत

238. उस **विशाल और सुन्दर** महल को देखकर हम भौचक्क रह गये थे। भव्य

239. जीवनपर्यन्त उसके निर्वाह के लिए यह **धन न कम है और न अधिक।** पर्याप्त

240. इस बस्ती में नयी आयी **दीपा एक विधवा स्त्री है, जिसका पुनः विवाह हुआ** है। पुनर्भू

241. गरीब होते हुए भी वह **ऊँची इच्छाएँ रखनेवाला** व्यक्ति था । महत्त्वाकांक्षी

242. यह समाचार तो वास्तव में **शोक करने योग्य** है। शोच्य

243. वह ऐसा व्यक्ति था, **जो दूसरों के दुःख से दुखी** था । परदुःखकातर

244. **वन में अपने-आप लगी अग्नि** में हजारों जानवर और पेड़-पौधे जल कर राख हो गये। दावानल

245. वह भूमि इतनी कठोर है कि इसको **अभी तक जोता नहीं जा सका** है। अत्रहत

246. तुम उसके साथ व्यर्थ समय गँवा रहे हो, वह तो **कुछ भी नहीं जानता।** अज्ञ

247. माता-पिता के ध्यान न देने के कारण वह निरन्तर **पतन की ओर बढ़ता गया।** पतनोन्मुख

248. **सर्वसाधारण को सूचित करने की क्रिया** द्वारा उसने वह समाचार फैला दिया। अधिसूचना

249. वे बहुत दिनों तक **लुक-छुप कर प्रेम करते रहे** किन्तु इसका नतीजा अच्छा न निकला। अभिसार

250. उनका यही काम था कि वे विदेश से आये सोने को **छुपाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा** देते थे। तस्करी

ZONE TECH

7. समध्वनिमूलक भिन्नार्थक शब्द

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के अन्तर्गत दिये गये शब्द-युग्मों के उपयुक्ततम अर्थ-भेद के विकल्प का चयन कीजिए-

1. अंस–अंश — भाग–कन्धा
2. अन्त–अन्त्य — समाप्त–नीच
3. अम्ब–अम्बु — माता–जल
4. अन्न–अन्य — अनाज–दूसरा
5. अशन–आसन — भोजन–बैठने की वस्तु
6. अणु–अनु — कण–पीछे
7. अभिराम–अविराम — सुन्दर–लगातार
8. अपेक्षा–उपेक्षा — इच्छा–निरादर
9. अवलम्ब–अविलम्ब — सीधा–टेढ़ा
10. अतुल–अतल — जिसकी तुलना न हो सके–गहरा
11. अशक्त–आसक्त — शक्तिहीन–मोहित
12. अजर–अजिर — जो वृद्ध न हो–आँगन
13. अगम–आगम — दुर्लभ–शास्त्र
14. अभय–उभय — निर्भय–दोनों
15. असित–अशित — काला–खाया हुआ
16. अर्ध–अर्घ्य — मूल्य–पूजा का द्रव्य
17. अविहित–अभिहित — अनुचित–उक्त
18. अयश–अयस् — अपकीर्ति–लोहा
19. अभिज्ञ–अनभिज्ञ — जाननेवाला–अनजान
20. अली–अलि — सखी–भ्रमर
21. अवधि–अवधी — समय–बोली
22. आरति–आरती — विरक्ति–नीराजन
23. आहूत–आहुति — निमन्त्रित–होम
24. अनिष्ट–अनिष्ठ — बुराई–निष्ठाहीन
25. आकर–आकार — खान–रूप
26. आभरण–आमरण — गहना–मरण तक
27. आयत–आयात — लम्बा और चौड़ा–बाहर से आना
28. आर्त्त–आर्द्र — दुखी–गीला
29. उद्धत–उद्यत — उद्दण्ड–तैयार

ZONE TECH

30.	उपकार-अपकार	भलाई-बुराई
31.	ऋत्-ऋतु	सत्य-मौसम
32.	कुल-कूल	वंश-किनारा
33.	कश-कष	चाबुक-कसौटी
34.	कर्म-क्रम	कार्य-सिलसिला
35.	कृति-कृति	रचना-रचनाकार
36.	क्रान्ति-क्रान्ति	आन्दोलन-चमक
37.	कलि-कली	कलियुग-अधखिला फूल
38.	कर्ण-करण	कान-करण कारक
39.	कपिश-कपीश	भूरा-हनुमान्
40.	कुच-कूच	स्तन-प्रस्थान
41.	कटिबन्ध-कटिबद्ध	कमरबन्ध-तैयार
42.	क्षत्र-छत्र	क्षत्रिय-छाता
43.	क्षात्र-छात्र	क्षत्रिय-विद्यार्थी
44.	खल-खलु	दुष्ट-निश्चय
45.	गण-गण्य	समूह-गिनने योग्य
46.	चिर-चीर	दीर्घ-वस्त्र
47.	चषक-चसक	प्याला-आदत
48.	चतुष्पद-चतुष्पथ	चौपाया-चौराहा
49.	चक्रवाक-चक्रवात	चकवा पक्षी-बवण्डर
50.	जगत्-जगत	संसार-कुएँ का चबूतरा
51.	ज़रा-जरा	थोड़ा-बुढ़ापा
52.	जलद-जलज	बादल-कमल
53.	जाया-ज़ाया	पत्नी-व्यर्थ
54.	तड़ाक्-तड़ाग	जल्दी से-तालाब
55.	दीठ-ढीठ	दृष्टि-निडर
56.	तरणि-तरणी	सूर्य-नाव
57.	तनू-तनु	पतला-पुत्र
58.	तरि-तरी	नाव-गीलापन
59.	तरंग-तुरंग	लहर-घोड़ा
60.	तप्त-तृप्त	गरम-सन्तुष्ट
61.	दार-द्वार	स्त्री-दरवाजा
62.	दूत-द्यूत	वाहक-जुआ
63.	दारु-दारू	लकड़ी-शराब
64.	दीप-द्वीप	दीपक-टापू

ZONE TECH

65.	तरणी–तरुणी	नाव–युवती
66.	दशन–दंशन	दाँत–दाँत से काटना
67.	दिवा–दीपा	दिन–दीपक
68.	दैव–देव	देवता–भाग्य
69.	द्रव–द्रव्य	रस–पदार्थ
70.	दश–दंश	दस की संख्या–डंक
71.	नत–नित	झुका हुआ–लगातार
72.	निहत–निहित	मरा हुआ–छुपा हुआ
73.	नीर–नीड़	जल–घोंसला
74.	नियत–नियति	निश्चित–भाग्य
75.	नगर–नागर	शहर–चतुर
76.	निशित–निशीथ	तीक्ष्ण–रात
77.	निश्चल–निश्छल	अटल–छलरहित
78.	नमित–निमित्त	झुका हुआ–हेतु
79.	नीरद–नीरज	बादल–कमल
80.	निर्माण–निर्वाण	रचना–मोक्ष
81.	निशाचर–निशाकर	राक्षस–चन्द्रमा
82.	परुष–पुरुष	कठोर–आदमी
83.	नियति–नीयत	भाग्य–इरादा
84.	परिणाम–परिमाण	जल–मात्रा
85.	परिणय–प्रणय	विवाह–प्रेम
86.	प्रकार–प्रकार	भेद–परकोटा
87.	प्रसाद–प्रासाद	कृपा–भवन
88.	बात–वात	बातचीत–हवा
89.	बहन–वहन	भगिनी–ढोना
90.	बारिश–वारिस	वर्षा–उत्तराधिकारी
91.	बास–वास	दुर्गन्ध–निवास
92.	भवन–भुवन	मकान–संसार
93.	भारती–भारतीय	सरस्वती–भारतवासी
94.	रक्त–रिक्त	खून–खाली
95.	लक्ष–लक्ष्य	लाख–उद्देश्य
96.	व्याध–व्याधि	शिकारी–शारीरिक रोग
97.	वसन–व्यसन	वस्त्र–बुरी आदत
98.	व्रण–वर्ण	घाव–रंग
99.	शूर–सुर	शूरवीर–अन्धा
100.	शुक्ल–शुल्क	सफेद–फीस

ZONE TECH

8. अशुद्धि-संशोधन

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों में दिये गये वाक्यों में से कुछ में अशुद्धियाँ हैं और कुछ शुद्ध हैं। वाक्य के जिस भाग में त्रुटि हो, उस भाग को चिह्नित कीजिए-

सर्वनाम सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1.	यह लोग कहाँ जा रहे हैं?	ये लोग कहाँ जा रहे हैं।
2.	अंकित आया और कहा।	अंकित आया और उसने कहा।
3.	दही में कौन पड़ा है?	दही में क्या पड़ा है।
4.	तुम्हारे में से कौन वहाँ जाएगा?	तुम्हें क्या चाहिए?
5.	उसने कहा कि मैं चार भाई हूँ। आप बताओ।	उसने कहा कि वह चार भाई हैं।
6.	तुम और तुम्हारे मित्रों को मैं बहुत खूब जानता हूँ।	तुम और तुम्हारे मित्रों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ।
7.	यह मेरा मित्र है, यह मेर साथ रहता है।	यह मेरा मित्र है, जो मेरे साथ रहता है।
8.	लीजिए अब प्याला भर देता हूँ।	लीजिए, अब आपका प्याला भर देता हूँ।

'विशेषण' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1.	वह मुझसे सभीत है।	वह मुझसे भयभीत है।
2.	कमल का पुष्प सुकोमल होता है।	कमल का पुष्प कोमल होता है।
3.	अब अधिकांश लोगों का यही विचार है।	अब अधिकतर लोगों का यही विचार है।
4.	जी हाँ, मेरा और आपका घोर सम्बन्ध है।	जी हाँ, मेरा और आपका घनिष्ठ सम्बन्ध है।
5.	प्राय: सभी लोग ऐसा सोचते हैं।	प्राय: सभी ऐसा सोचते है।

'क्रिया-विशेषण' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1.	सीता अत्यन्त ही सुन्दर थीं।	सीता अत्यन्त सुन्दर थीं।
2.	अब मैं आपसे केवल इतना ही चाहती हूँ।	अब मैं आपसे केवल इतना चाहती हूँ।
3.	हम स्वयं ही आपसे मिलेंगे।	हम स्वयं आपसे मिलेंगे।
4.	श्रीराम के एक-मात्र पिता चल बसे।	श्रीराम के पिता चल बसे।
5.	यह कदापि भी सत्य नहीं हो सकता।	यह कदापि सत्य नहीं हो सकता।

'क्रिया' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1.	आप हस्ताक्षर बना दें।	आप हस्ताक्षर कर दें।
2.	युद्ध लड़ा जा रहा हैं।	युद्ध हो रहा है।
3.	भगवान् राम ने संकल्प लिया।	भगवान् राम ने संकल्प किया।
4.	आपको दवा लेना चाहिए।	अपको दवा देनी चाहिए।
5.	तुम्हें स्मरण दिलाता हूँ।	तुम्हें स्मरण कराता हूँ।
6.	आप विचार कीजिए।	आप विचार करें।
7.	इस वस्तु का मूल नापा या तोला नहीं जा सकता।	इस वस्तु का मूल्य आँका नहीं जा सकता।

ZONE TECH

8.	तुम अपने मत का स्पष्टीकरण करो।	तुम अपना मत स्पष्ट करो।
9.	तुम्हारी व्यवस्था की जानेवाली है।	तुम्हारी व्यवस्था होगी।

'लिंग' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1.	आपकी इच्छानुसार कार्य नहीं होगा।	आपके इच्छानुसार कार्य नहीं होगा।
2.	आपकी कृपा-पत्र मिला।	आपका कृपा-पत्र मिला।
3.	गाँव की सैकड़ों स्त्री-पुरूष यहाँ काम करते हैं।	गाँव के सैकड़ों स्त्री-पुरूष यहाँ काम करते हैं।

परीक्षोपयोगी अशुद्ध-शुद्ध वाक्य

1.	मुझे भारी दु:ख हुआ।	मुझे बहुत दु:ख हुआ।
2.	पति-पत्नी आये हैं।	पति-पत्नी आयी हैं।
3.	मैंने कपड़े पहनने है।	मुझे कपड़े पहनने हैं।
4.	आप आओ।	आप आइए।
5.	मैंने करा हुआ है।	मैंने किया हैं
6.	यह लोग कहाँ रहते हैं?	ये लोग कहाँ रहते हैं?
7.	मेरे को बुलाया है।	मुझे बुलाया है।
8.	वह घोड़े मे सवार था।	वह घोड़े पर सवार था।
9.	वह कुर्सी में बैठा था।	वह कुर्सी पर बैठा था।
10.	घी बहुत अच्छी नहीं है।	घी बहुत अच्छा नहीं है।
11.	सूर्य पूर्व पर उगता है।	सूर्य पूर्व में उगता है।
12.	मैंने बोला।	मैं बोला।
13.	मैंने जाना है।	मुझे जाना है।
14.	हम पढ़े थे।	हमने पढ़ा था।
15.	नीचे को मत देखो।	नीचे मत देखो।
16.	मरे राम, जलावे राम।	मारे राम, जिलावे राम।
17.	चोर-चोर ममेरे भाई।	चोर-चोर मौसेर भाई।
18.	यह लोग क्या करा।	इन लोगों ने क्या किया?
19.	मैंने झूठ बोला।	मैं झूठ बोला।
20.	मैं मेरा काम करूँगा।	मैं अपना काम करूँगा।
21.	उन्होंने हाथ जोड़ा।	उन्होंने हाथ जोड़े।
22.	राम रोटी खाया।	राम ने रोटी खायी।
23.	मास्टरनी कहाँ गई है।	मास्टरनी कहाँ गयी हैं।
24.	स्वास्तिश्री पिताजी।	पूज्यश्री पिताजी।
25.	मेरा प्राण संकट में है।	मेरे प्राण संकट में हैं।
27.	आपका भविष्य उज्जवल हो।	आपका भविष्य उज्ज्वल हो।
28.	वह बालक जन्मते ही मर गया।	वह बालक जन्म लेते ही मर गया।
29.	आप चुनाव जीत गये हैं, हमारी श्रद्धाञ्जलि स्वीकार कीजिए।	आप चुनाव जीत गये हैं, हमारी बधाई वीकार कीजिए।
30.	डाल में चिड़िया बैठी हैं।	डाल पर चिड़िया बैठी है।

ZONE TECH

31. बेटी पराये घर का धन होता है। बेटी पराये घर का धन होती है।

32. 'गोदान' प्रेमचन्द की एक श्रेष्ठ उपन्यास है। 'गोदान' प्रेमचन्द का एक श्रेष्ठ उपन्यास है।

33. भारत की आज वर्तमान स्थिति ठीक नहीं है। भारत की वर्तमान स्थिति ठीक नहीं है।

34. तुम चोरी के कारण दण्ड पाने के योग्य हो। तुम चोरी के कारण दण्ड पाने के योग्य हो।

35. तुम मेरे तरफ क्या देख रहे हो? तुम मेरी तरफ क्या देख रहे हो?

36. शरणागत में आये व्यक्ति की रक्षा करना भारतीय संस्कृति का प्रसिद्ध गुण है।
शरणागत व्यक्ति की रक्षा करना भारतीय संस्कृति का प्रसिद्ध गुण है।

37. मौर्यकालीन समय में लोग सुखी थे। मौर्यकालीन लोग सुखी थे।

38. हिमालय पर्वत सबसे ऊँचा पर्वत है। हिमालय सबसे ऊँचा पर्वत है।

ZONE TECH

9. मुहावरे-कहावतें

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक मुहावरे और कहावत का अर्थ लिखिए-

1.	अंग-अंग फूले न समाना	आनन्दविभोर होना
2.	अँगूठी का नग होना	बहुत कीमती
3.	अंगारों पर लोटना	दु:ख सहना/ईर्ष्या होना
4.	अँगूठा दिखाना	धोखा देना
5.	अन्न को कन्न करना	बनी बात को बिगाड़ना
6.	अपना रंग जमाना	प्रभावित करना
7.	आँख की किरकिरी होना	अप्रिय लगना
8.	जबान पर लगाम न होना	अनावश्यक रूप में स्पष्टवादी होना
9.	अन्धे की लकड़ी	एकमात्र सहारा
10.	अंगार बरसना	कड़ी धूप होना
11.	टाँग अड़ाना	अवरोध पैदा करना
12.	अन्तर के पट खोलना	विवेक से काम लेना
13.	अण्डे का शहजाद	अनुभवहीन व्यक्ति
14.	अरण्य-चन्द्रिका	निष्प्रयोज्य पदार्थ
15.	अँगूठा चूमना	खुशामद करना
16.	अंग छूना	कसम खाना
17.	अंगार उगलना	कठोर वचन कहना
18.	सिर हथेली पर रखना	मरने के लिए तैयार होना
19.	टस-से-मस न होना	अनुनय-विनय से न पसीजना
20.	आसमान पर चढ़ाना	अत्यधिक प्रशंसा करना
21.	काम-काज में कोरा होना	काम न जानना
22.	लाल-पीला होना	क्रोध करना
23.	मुँह का निवाला	बहुत आसान काम
24.	अन्धों में काना राजा	अज्ञानियों के मध्य अल्पज्ञ का सम्मान होना
25.	समुद्र मन्थन करना	कठोर परिश्रम करना
26.	अक्ल का दुश्मन	महामूर्ख
27.	का बैल होना	बुरी तरह काम में लगे रहना
28.	आबनूस का कुन्दा	अत्यन्त काले रंग का मनुष्य
29.	अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना	स्वयं अपने को हानि पहुँचाना

ZONE TECH

30.	अन्धे के आगे रोना	निर्दयी से दया की याचना करना
31.	काम आना	युद्ध में मृत्यु होना
32.	अगर-मगर करना	बहाने बनाना
33.	कान फूँकना	चुगली करना
34.	अरण्य रोदन	निष्फल निवेदन
35.	आँधी के आम	सस्ती वस्तु
36.	चाँदी का ऐनक लगाना	किसी न किसी प्रकार प्रतिष्ठ बनाये रखना
37.	तीर मारना	बड़ा काम करना
38.	अंगार सिर पर धर लेना	कठिन विपत्ति सहना
39.	अखाड़े में आना	मुकाबले में खड़ा होना
40.	अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरना	मूर्खतापूर्ण काय करना
41.	अक्ल मारी जाना	बुद्धि भ्रष्ट होना
42.	अँधेर नगरी	अन्याय की जगह
43.	आँख का नीर (पानी) ढल जाना	निर्लज्ज हो जाना
44.	अँधेरे का दीपक	इकलौता पुत्र
45.	अंग-अंग ढीला होना/अंजर-पंजर ढीला होना	बहुत मार खाना
46.	छाती पर मूँग दलना	पास रहकर दु:ख देना
47.	छक्के छुड़ाना	हराना
48.	अंक भरना	स्नेह करना
49.	आगा-पीछा करना	हिचकना/टालना
50.	अग्नि-परीक्षा देना	कठिन परिस्थिति में पड़ना
51.	कच्चे घड़े पानी भरना	ठीक ढंग से काम न करना
52.	दाम लगाना	मूल्य आँकना
53.	कहाँ राजा भोज कहाँ	असमान व्यक्तियों की तुलना
54.	राम नाम जपना, पराया माल अपना	धोखे से धन जमा करना
55.	एक तो चोरी दूरे सीनाजोरी	अपराधी होकर उलटे अकड़ दिखाना
56.	फिसल पड़े तो हर-हर गंगा	मजबूरी में काम करना
57.	दोनों हाथों में लड्डू	सब ओर लाभ ही लाभ होना
58.	आम के आम गुठलियों के दाम	दोहरा लाभ होना
59.	सावन हरे न भादो सूखे	सदा आलसी होना
60.	घर आये नाग न पूजिए बामी पूजन जायँ	पश्चात्ताप करना
61.	काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती	छल-कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता।
62.	हाथी के पाँव में सबका पाँव	बड़े आदमी की हाँ में सबकी हाँ शामिल है।
63.	आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकले सो लाय	नुकसान होते-होते जो कुछ बच जाए, वहाँ बहुत है।
64.	अपनी-अपनी पार उतरनी/जैसी करनी, वैसी भरनी	कार्य के अनुसार परिणाम मिलता है।

ZONE TECH

65.	चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए	अत्यधिक कंजूस होना
66.	कोयले की दलाली में हाथ काला	बुरी संगति से बदनामी मिलती है।
67.	फटे में पाँव दफ्तर में नाव	दूसरों के झगड़े में पड़कर गवाही देने की कठिनाई झेलनी पड़ती है।
68.	सब धान बाईस पसेरी	अच्छा-बुरा सबको एक समान समझना
69.	जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी दीजै	समय का रुख देखकर काम करना चाहिए।
70.	कोई ईर घाट तो कोई मीर घाट	ताल-मेल न होना
71.	अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता	स्वयं प्रयत्न करने पर ही काम बनता है
72.	आ बैल! मुझे मार	जान-बूझकर मुसीबत बुलाना
73.	खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे	अपनी शर्म छुपाने के लिए व्यर्थ झुँझलाना
74.	कलम तोड़ना	प्रभावकारी लेखन करना
75.	कौड़ी को न पूछना	निकम्मा समझना
76.	गाल बजाना	डींग हाँकना
77.	घुटने टेक देना	हार मानना
78.	आठ-आठ आँसू बहाना	बिलख-बिलख कर रोना
79.	आँखों में धूल झोंकना	धोखा देना
80.	आँखें सेंकना	सुन्दर वस्तु को देखकर तृप्त होना
81.	आड़े समय पर काम आना	मुसीबत में सहायक होना
82.	आनन-फानन में	तुरन्त
83.	आँख की किरकीरी होना	अप्रिय लगना
84.	ईमान बेचना	गलत काम करना
85.	आधा तीतर आधा बटेर	बेमेल और बेढंगा होना
86.	आकाश से बातें करना	घमण्डी होना
87.	आग में घी डालना	किसी के क्रोध को भड़काना/उकसाना
88.	आँख खुलना	होश में आना
89.	आसन डोलना	क्षुब्ध या अस्थिर होना
90.	आटे-दाल का भाव मालूम होना	असलियत का पता चलना
91.	ऊँट के गले में बिल्ली	सर्वथा बेमेल साथ
92.	काठ का उल्लू	मूर्ख
93.	आँखों पर पलकों का बोझ न होना	अपनों का भार न मालूम होना
94.	उलट-फेर होना	परिवर्तन होना
95.	कामकाज में कोरा होना	काम न जानना
96.	उलटे उस्तरे में मूँड़ना	पूरी तरह ठगना
97.	उलटे बाँस बरेली को	विपरीत काम करना
98.	केर-बेर का संग होना	विरुद्ध स्वभाव वालों का एक साथ मिलना
99.	उड़न-छू होना	गायब होना

ZONE TECH

100. ईद का चाँद होना — बहुत दिनों बाद दिखायी पड़ना
101. जर का जोर पूरा है बाकी सब अधूरा है। — धन में सब कार्य सिद्ध करने की शक्ति है।
102. अपना हाथ जगन्नाथ — अपनी वस्तु का उपयोग जी खोलकर करना।
103. दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है। — एक बार धोखा खानेवाला दोबारा धोखा नहीं खता।
104. सूप के फटके सूप नहीं रहते हैं — जहाँ की चीज होती है, वहीं चली जाती है।
105. नीम हकीम खतरे जान — अल्प विद्या भयंकर होती है।
106. अपनी डफली अपना राग — सबका अपने-अपने मन के अनुसार चलना
107. आप न जाबै ससुरे औरन कूँ सिख देत — स्वयं किसी काम को न करना और उसको करने के लिए दूसरों को उपदेश करना
108. गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज — किसी व्यक्ति से प्यार करके, उसके व्यवहार से घृणा करना
109. जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ — सब एकसमान दुष्ट प्रकृति वाले हैं।
110. मान न मान, मैं तेरा मेहमान — जबरदस्ती गले पड़ना
111. तू डाल-डाल में पात-पात — दोनों चालाक
112. खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है — पड़ोस का असर पड़ता है।
113. बालू की भीत — शीघ्र नष्ट हो जाने वाली वस्तु
114. बगुला भगत होना — रिश्वत लेकर काम करना
115. भाड़े का टट्टू — खरीदा जा सकने वाला व्यक्ति
116. भीगी बिल्ली बनना — डर जाना
117. बट्टा लगाना — कलंक लगाना
118. बसन्त की कोकिल — वैभवशाली का गुणगान करनेवाला
119. बाल बाँका न होना — साफ-साफ बच जाना
120. भूँजी भाँग न होना — दरिद्र होना
121. बछिया का ताऊ — मूर्ख
122. बायें हाथ का खेल — बहुत आसान काम
123. बाल की खाल उतारना/निकालना — अत्यन्त चतुर होना
124. मैदान मारना — लड़ाई जीतना
125. मुँह से दूध टपकना — नासमझ होना
126. माथा ठोक लेना — बदकिस्मती के कारण दुखी
127. लकीर का फकीर होना — पुराने रीति-रिवाजों में जकड़ा होना
128. मिट्टी का माधो — निपट मूर्ख होना
129. रास्ते पर चलना — किसी कार्य में ठीक ढ़ंग से अग्रसर होना
130. मुँह से लाल उगलना — मूल्यवान बात कहना
131. मिट्टी कर देना — चौपट कर देना
132. रग-रग फड़कना — उत्साह से भर जाना
133. लोहे के चने चबाना — कठिन परिश्रम करना

ZONE TECH

134. मक्खी मारना — निरर्थक काम को लगातार किये जाना
135. रँग जाना — पूरी तरह प्रभावित होना
136. रँगा-सियार होना — धूर्त होना
137. मक्खी की तरह निकाल देना — किसी को किसी काम से उपेक्षापूर्वक अलग कर देना
138. साँच को आँच नहीं — सच्चे व्यक्ति को कोई झूठा नहीं सिद्ध कर सकता।
139. पर उपदेस कुसल बहुतेरे — दूसरों को उपदेश देना आसान समझना
140. खोदा पहाड़ निकली चुहिया — अधिक परिश्रम किन्तु लाभ कम
141. खेत खाए गदहा मारा जाए जुलहा — किसी के कर्म की सजा अन्य को मिले।
142. कौआ भी हाड़ न ले जाएगा — दूर रहने की कोई खबर नहीं लेता।
143. आम खाओ पेड़ गिनने से क्या लाभ? — व्यर्थ की बातें न करके केवल अपने मतलब की बात करना
144. तीन दिन मेहमान चौथे दिन हैवान — आतिथ्य थोड़े दिन का ही अच्छा होता है।
145. आँतड़ियों में बल पड़ना — बहुत हँसना
146. पढ़े फारसी बेचे तेल, देखो कुदरत का खेल — विवश होकर योग्यता से निचले स्तर का कार्य करना
147. चोर-चोर मौसेरे भाई — एक पेशेवाले आपस में नाता जोड़ लेते हैं।
148. पाव भर चून पुल पर रसोई — सीमित साधन हाने पर भी अधिक लोगों को निमन्त्रित कर लेना
149. आँख का अन्धा गाँठ का पूरा — एकदम मूर्ख/निपट मूर्ख
150. अन्धे को अँधेरे में बहुत दूर की सूझी — मूर्ख ने बुद्धिमानी की बात की
151. नेकी कर दरिया में डाल — किसी पर उपकार करके भूल जाना चाहिए।
152. तेली का तेल जले मसालची का दिल जले — एक को खर्च करते देख दूसरा परेशान
153. खेती पाती बीनती और घोड़े की तंग, अपने हाथ सँभालिए चाहे लाख लोग होय संग — अपना काम स्वयं करो।
154. आग लगने पर कुआँ खोदना — तुरन्त विपत्ति आ जाने पर बचने का उपाय खोजना
155. ऊँट को निगल लिया और दुम को हिचके — बड़ी विपत्ति को हर लिया और साधारण बात पर संकोच करना
156. नयी नाइन बाँस का नहला — नये शौक को पूरा करने के लिए अजीब काम करना
157. बोये पेड़ बबूल का आम कहाँ ते खाय — बुरे काम का फल अच्छा नहीं हो सकता।
158. घर की खाँड़ किरकिरी लगे, बाहर का गुड़ मीठा — सरलता से उपलब्ध वस्तु अच्छी न लगे और अन्य व्यक्ति की अपेक्षाकृत कम श्रेष्ठ वस्तु भी आकर्षक लगती है।
159. शीशे में उतारना — वश में करना
160. सूरत नजर आना — कठोर परिश्रम करना
161. समुद्र-मन्थन करना — कठोर परिश्रम करना
162. साढ़े साती लगना — विपत्ति का समय आना
163. सोने पे सुहागा — अच्छे पर अच्छा
164. सिर ऊँचा होना/सीना चौड़ा होना/छाती फूलना — सम्मान में वृद्धि का अनुभव करना
165. सींग कटा बछड़ों में मिलना — वास्तविकता छुपाकर कार्य करना
166. शेर के दाँत गिनना — साहस का कार्य करना

ZONE TECH

167. सोते शेर को जगाना — शक्तिशाली व्यक्ति से अकारण शत्रुता करना
168. सिर से तिनका उतारना — जरा-सा उपकार करना
169. श्रीगणेश करना — आरम्भ करना
170. साँप-छछून्दर की हालत — दुविधा में पड़ना
171. श्वान-निद्रा — सजग निद्रा
172. अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग्यो खेत — समय पर काम न करने से बाद में पछताना पड़ता है।
173. जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि — कवि के लिए कहीं भी अगम्य नहीं।
174. हँसुए के ब्याह में खुरपे का गीत — असंगत बातें करना
175. माँगे भीख पूछे गाँ की जमा — भीख माँगकर गुजारा करना
176. पुचकारा कुत्ता सिर चढ़े — ओछे लोग मुँह लगाने पर अनुचित लाभ उठाते हैं।
177. जस दूलहा तस बनी बराता — सभी साथी एक ही जैसे
178. छछून्दर के सिर में चमेली का तेल — अयोग्य व्यक्ति को अच्छा पद मिलना
179. लंका में सब बावन गज के — एक-से-बढ़कर-एक
180. जाके पाँव न फटे बिवाई सो का जाने पीर पराई — जिसके ऊपर बीतती है, वही जानता है, दूसरे नहीं।
181. ऊँची दुकान फीका पकवान — आडम्बर बहुत किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं।
182. सिंहावलोकन करना — आगे बढ़ते हुए पिछली बातों की समीक्षा करना
183. तबेले की बला बन्दर के सिर — किसी का अपराध दूसरे के लिए
184. आये थे हरि भजन को ओटने लगे कपास — प्रमुख कार्य की उपेक्षा कर गौण कार्य में लग जाना
185. रातों राई एक ही मुआ — थीड़ी चीज के लिए अधिक कष्ट होना
186. गंगा गये गंगादास, जमुना भये जमुनादास — अपना-अपना काम करना
187. एक-और-एक ग्यारह होते हैं — गणित-विद्या में निपुणता प्राप्त करना
188. अन्धा पावे आँखे तो पतियाय — असम्भव को सम्भव कर दिखाना
189. गये थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी — उपकार करने के बदले दु:ख भोगना
190. कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है — अपनी बनायी हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है।
191. उधो का लेना न माधव का देना — अपने काम से काम रखना
192. टूट चाप नहिं जुरै रिसाने — नुकसान हो जाने पर क्रोध करना व्यर्थ है।
193. काला अक्षर भैंस बराबर — अनपढ़ होना
194. सिर पड़ना — अत्यधिक विचार-विमर्श करना
195. अरहर की टट्टी गुजराती ताला — तुच्छ वस्तु की महँगी सुरक्षा
196. खाइए मनभाता पहनिए जगभाता
खाने-पीने में अपनी रूचि का ध्यान रखिए किन्तु पहनने-ओढ़ने में सामाजिक नियमों का पालन करना चाहिए।
197. ऊँट दूलहा पुरोहित गधा — एक मूर्ख व्यक्ति द्वारा दूसरे मूर्ख की प्रशंसा
198. कमावै धोतीवाला, उड़ावै टोपीवाला — परिश्रमी लोग कमाते है और शौकीन लोग उसे खर्च करते हैं।
199. बन्दर का जाने अदरक का स्वाद — मूर्ख व्यक्ति गुण की सही परख नहीं कर सकता।
200. एक तो करैला दूजा नीम चढ़ा — बुरे व्यक्ति की बुरी सन्तान

ZONE TECH

201. पत्थर को जोंक नहीं लगती	हठी पर कोई प्रभाव नहीं होता।
202. काम का न काज का, दुश्मन अनाज का	दूसरों पर बोझ बनकर रहने वाला व्यक्ति
203. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी	कार्य करने के लिए कोई असाधारण शर्त रख देना
204. अपना माल खोटा तो परखैया का क्या दोष	यदि अपने माल में कमी हो तो खरीदनेवाले का क्या दोष
205. बगल में छोरा नगर में ढिंढोरा	वस्तु के पास होने पर भी चारों ओर उसे ढूँढ़ना
206. वक्त पड़े बाँका तो गधे को भी कहिए काका	स्वार्थ के लिए अयोग्य व्यक्ति की भी खुशामद करनी पड़ती है।
207. बिल्ली को पहले ही दिन मारना चाहिए	भय का शमन शुरू में ही कर देना चाहिए।
208. आदमी जानै बसे, सोना जाने कसै	साथ रहने पर ही किसी व्यक्ति का सही मूल्यांकन किया जा सकता है।
209. एक हाथ से ताली नहीं बजती।	मित्रता दोनों ओर से होती है।
210. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।	थोड़े दिनों का सुख
211. हाथ जोड़ लेना	जवाब देना/मना कर देना
212. आसमान/सरग से गिरा खजूर में अटका	किसी काम के बनने में अनेक बाधाएँ उपस्थित हो जाना
213. हींग/हर्रा न लगे फिटकरी रंग भी चोखा होय	बिना खर्च किये अच्छा काम होना
214. अन्धा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय	न्याय की ओर से आँखे मूँदकर स्वजनों को अनुचित लाभ पहुँचाना
215. भौर न छाँड़े केतकी तीखे कण्टक जान	अनेक परेशानियाँ आने पर भी प्रेमी प्रेम नहीं छोड़ते।
216. कूप-मण्डूक होना	अत्यन्त सीमित ज्ञान होना
217. कमर टूटना	आर्थिक स्थिति खराब होना
218. काम निकलना	प्रयोजन सिद्ध होना
219. कान फूँकना	चुगली करना
220. किनारा करना	अलग हो जाना
221. कान भरना	प्रेरित करना/उकसाना
222. कच्ची गोटी खेलना	अनुभवरहित होना
223. कमर सीधी करना	थकावट दूर करना
224. काला नाग	अत्यधिक खतरनाक
225. कान खड़े होना	विपत्ति को पहचानना
226. कलेजा मुँह को आना	हृदय काँपने लगना
227. गुड़ देकर मारना	जहर देकर मारना
228. हाथ ऊँचा होना	युद्ध में विजय प्राप्त कर लेना
229. नौ-दो ग्यारह होना	मिलकर कार्य करना
230. गागर में सागर भरना	थोड़े शब्दों में अधिक कहना
231. पौ बारह होना	लाभ-ही-लाभ होना
232. ढपोरशंख होना	बेवकूफ/बड़बोला होना
233. सुबह शाम करना	समय व्यतीत करना
234. कान में तेल डालकर बैठना	लापरवाह होना
235. चादर के बाहर पैर पसारना	क्षमता से अधिक व्यय करना

ZONE TECH

236. तोते की तरह आँख फेरना — पुराने सम्बन्धों को एकदम भुला देना, स्वार्थी होना

237. दिल पक जाना — अत्यन्त पीड़ित होना

238. गला भर आना — दुखी होना

239. शैतान की आँत — अत्यन्त धूर्त व्यक्ति

240. जौहर खुलना — भेद का पता लगना

241. दिन को दिन और रात को रात न समझना — कोई बड़ा काम करते समय अपनी सुख-सुविधा का कुछ भी ध्यान न रखना

242. कन्धा लगाना — सहारा देना

243. नाक पर सुपारी तोड़ना — असम्भव कार्य करना

244. पेट में दाढ़ी होना — छोटी उम्र में ही बुद्धिमान होना

245. पानी पीकर जाति पूछना — काम निकलने के बाद सोचना

246. घाट-घाट का पानी पीना — बहुत अनुभवी होना

247. गूलर का फूल होना — स्पष्ट दिखायी देना

248. ओस के चाटे प्यास न बुझना — ऊँट के मुँह में जीरा

249. गुड़ खाए सो कान छिदाये/बिंधाये — लोभ में आकर विपत्ति मोल लेना

250. आधा तीतर आधा बटेर — बेमेल और बेढंगा होना

निम्नलिखित प्रत्येक वाक्य में रेखांकित/**कालांकित** मुहावरों/कहावतों के सही अर्थ लिखिए-

251. अवसरवादी व्यक्ति हमेशा **अपना उल्लू सीधा करने** का प्रयास करता है। — स्वार्थपूर्ति

252. विपत्ति के दिनों में इस तरह धूमधाम से पत्नी की जन्मतिथि मनाना तो **घर फूंक तमाशा देखना** है। — क्षणिक दिखावे के लिए बहुत धन व्यय करना

253. बात तय थी लेकिन ऐन-मौके पर उसके इनकार कने से **सब गुड़ गोबर हो गया।** — सारा काम रूक जाना

254. मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास-सम्राट कहे जाते है। कथा-क्षेत्र में उनकी **तूती बोलती है।** — बहुत अच्छा लिखना

255. अब सभ्यता के **हाथ पीले करने** का समय आ गया है। — विवाह करने का

256. मेरी बेटी अन्विता मेरी आँखों का तारा है। — बहुत प्रिय

257. मालूम होता है, तुम्हारा यहाँ से **अन्न-जल उठ गया** है। — नाता टूट जाना

258. अनुशंसा ने परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए **जी-तोड़ मेहनत की** थी। — अथक परिश्रम कना

259. वह व्यर्थ में समय नष्ट नहीं करता क्योंकि उसका **हाथ खाली नहीं होता।** — अवकाश न होना

260. बहू **जहर का घूँट पीकर रह गयी।** — अपमानित होना

261. जय और विजय में **चोली-दामन का साथ** है। — एक-दूसरे पर निर्भरता

262. दिग्विजय ने तो **आग में घी डालने** का निश्चय किया था। — उत्तेजित करना

263. बरसात में मच्छर **नाक में दम** कर देते हैं। — बहुत परेशान करना

264. मैंने बहुत सहा है किन्तु अब मैं **ईंट का जवाब पत्थर से** दूँगा। — प्रहार का बदला दोगुणे प्रहार से देना

265. शिकारी के बन्दूक से निकली एक ही गोली से वह शेर **वहीं-का-वहीं ढेर हो गया।** — मर गया।

266. बात बहुत मामूली है, तुम व्यर्थ ही **लाल-पीले हो** रहे हो। — क्रुद्ध होना

267. भले व्यक्ति पर **अँगुली उठाने** का साहस कोई नहीं कर सकता। — दोषारोपण करना

268. उसने तुम्हारी **गाँठ काट ली** और तुम्हें पता भी न चला। ठगना
269. दोनों दोस्त एक ओर जाकर न जाने क्या **खिचड़ी पका रहे** हैं। गुप्त सलाह करना
270. दुनिया के सारे **भौतिक सुख** धोखा कर रहे हैं। सारहीन वस्तु
271. बच्चे को गाड़ी के नीचे आता देखकर जैसे उसकी **आँखों के आगे अँधेरा** छा गया। कोई उपाय न सूझना
272. जो व्यक्ति **गिरगिट की तरह रंग बदलता हो,** वह किसी का सच्चा मित्र हो ही नहीं सकता। सिद्धान्तहीन होना या काम निकल जाने पर वायदा तोड़ना- अवसरवादी
273. पाँच लाख की लॉटरी लगते ही **उसके दिन फिर गये।** रहन-सहन बदल जाना
274. सुरेश कालमाड़ी के काले धन्धों का विवरण समाचारपत्र में छपते ही जनता के समक्ष उसकी **कलई खुल गयी।** भेद प्रकट हो जाना
275. सीमावर्ती युद्धों में हमारे अनेक वीर सैनिक **खेत रहे।** युद्ध करते हुए मारे गये।
276. वह सदा धन अर्जित करने के लिए **जोड़-तोड़ करता रहता है।** गलत-सही उपाय करना/जुगाड़ लगाना
277. वंशिका ने टीवी सेट खरीदने के लिए वत्तिका से उधार तो ले लिया किन्तु जब पैसा लौटाने का समय आया तब उससे **आँखे चुराने लगीं।** कतराना/सामना न करना
278. जिस परिवार में तुम अपनी कन्या का विवाह करने जा रहे हो, उसकी **ढोल में पोल** है। बाहर अच्छा और भीतर दोषपूर्ण
279. अपनी प्रेमिका के लिए प्रेमी **तारे तोड़ लाने** को भी आतुर रहता है। कठिन कार्य करना
280. अपनी मेहनत और ईमानदारी के बल पर बालकृष्णन् ने धीरे-धीरे कम्पनी में **अपनी जड़ जमा ली।** स्थिति मजबूत करना
281. पुत्री का विवाह करके माता-पिता **गंगा नहा लिये** हैं। उत्तरदायित्व से निवृत्त होना/कर्त्तव्य पूरा करना
282. ऐसी विकट परिस्थितियों में **हरिश्चन्द्र बनने** से तुम्हारे कार्य सिद्ध नहीं होंगे। सत्यवादी होना
283. हमें सजग रहकर देश को उन लोगों से बचाना होगा, जो थोड़े से धन के लोभ में **जयचन्द हो जाते** हैं। देशद्रोही होना
284. उस ठग को रँगे-हाथों पकड़ने के लिए हम सबने मिलकर एक **दाँव खेला।** चाल चलना
285. पिता के गणित का प्राध्यापक हाने के कारण गणित विषय का ज्ञान तो पुत्र के लिए **घर की खेती** है। सुलभ होना
286. दशहरे के दिन परिवार के सब बच्चों ने मिलकर खूब **धमा-चौकड़ी मचायी।** इकट्ठा होकर शोरगुल करना
287. जब मैंने उधार दिये पैसे वापस माँगे तब वह जैसे **खाने को दौड़ा।** एकदम क्रूद्ध हो जाना
288. वह वकील हमारा मुकद्दमा सही ढंग से लड़ने की अपेक्षा हमें **खेल खिला रहा है।** बहकाना
289. जब से वह इंजीनियरिंग कॉलेज में भर्ती हुआ है, अपने को **तीसमार खाँ समझने लगा है।** घमण्डी होना
290. सम्पूर्ण कार्यालय में अपनी ईमानदारी के कारण शान्तनु के पिता की **तूती बोलती है।** बहुत प्रभाव होना

निर्देश: निम्नलिखित प्रत्येक रेखांकित/कालांकित वाक्य/वाक्यांशों के लिए उपयुक्त मुहावरे का चयन कीजिए:-

291. इति ने उसे जितने रूपये उधार दिये थे, वह सब **हजम कर गया।** डकार जाना
292. कोई चाहे संशय को लाख समझाये किन्तु वह सदा **कुटिल रहेगा।** कुत्ते की दुम
293. पत्नी और माँ के बीच विद्यमान तनाव के कारण वह **बीच में लटक गया** है। त्रिशंकु होना
294. इकलौते पुत्र की बुरी आदतों ने भी बिरादरी में उसे **अपमानित कर दिया।** सिर नीचा कर देना
295. इतने दिनों तक अधिकारियों की **चापलूसी करते रहने** पर भी उसका काम न बना। तलवे सहलाना
296. हमारे पड़ोसी **गुप्त रूप में अपना काम सिद्ध करने में माहिर हैं।** टट्टी की ओट में शिकार करना
297. जब लड़की ने जाना कि वह लड़का उसे **अपलक देख रहा था** तब सहसा ही वह शरमा गयी। टकटकी बाँधकर देखना
298. विवाह के समस्त कार्यों से निवृत्त होने के पश्चात् वह **निश्चिन्त होकर सोया।** टाँग पसार कर सोना

299. जैसे ही श्रीमती जी को मालूम हुआ कि लड़के वाले उनकी लड़की को देखने अगले दिन आ रहे हैं, उन्होंने दिखावटी तौर पर अपने घर को ठीक कर लिया। टीप-टाप करना

300. हम सभी जानते हैं कि वह सदा **बढ़-चढ़कर बातें करता** है। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना

निर्देश: निम्नलिखित वाक्यों/वाक्यांशों/मुहावरों में रिक्त स्थान हेतु उचित शब्दों/मुहावरों का चयन कीजिए:-

301. चोर-चोर ..... भाई। मौसेरे

302. ..... के अन्धे को हरा ही हरा नजर आता है। सावन

303. कर ..... तो हो भला। भला

304. अन्धों में ..... राजा। काना

305. घर का भेदी ..... ढाए। लंका

306. नाच न जाने ..... टेढ़ा। आँगन

307. अधजल गगरी ..... जाय। छलकत

308. ..... धतूरे सो कहत गहनो गढ़ो न जात कनक

309. इस वर्ष मेरा बेल भी मर गया और चोरी भी हो गयी, इसी को कहते हैं ..... । कंगाली में आटा गीला

310. पुत्र की हरकतों से तंग आकर पिता ने उसे ..... तिलांजलि दे दी।

311. दुखी सुदामा को द्वारिका में आया देख श्रीकृष्ण ने उन्हें ..... छाती से लगा लिया।

312. बच्चों की जरा-सी शरारत पर अवन्तिका ने ..... घर सिर पर उठा लिया।

313. पुलिस के द्वारा की गयी नाकेबन्दी की वजह से डाकुओं की ..... जान के लाले पड़ गये।

314. सर्कस में चारवर्षीय बच्चे के कारनामे देखकर लोगों ने ..... दाँतों-तले अँगुली दबा ली।

315. आज के जमाने में स्वार्थपरता बढ़ जाने के कारण कुछ लोग ..... टिप्पस लगाते हैं।

निर्देश: निम्नलिखित प्रत्येक वाक्य में रेखांकित/कालांकित वाक्यांश के लिए मुहावरा लिखिए-

316. बात तय थी लेकिन ऐन मौके पर उसके इनकार कर देने से **सारा काम रूक गया।** सब गुड़-गोबर होना

317. मैं जब भी उससे पुस्तक लौटाने के लिए कहता हूँ, वह मुझे **टाल देता है।** टरका देना

318. यदि आप जैसे महान नेता यह **कार्य आरम्भ करेंगे** तो हम जैसे नवयुवक अवश्य मिलकर इसे पूरा कर लेंगे। हाथ लगाना

319. अपनी जान पर खेलकर एक छोटी-सी लड़की की जान बचाने के लिए उसकी **बहुत प्रशंसा हुई।** वाह-वाह होना

320. अनादि जानता था कि उसके सभी **मित्र एक-जैसे** है। एक ही थैली के चट्टे-बट्टे

321. परीक्षा-भवन में शिक्षकों के सतर्क रहने से नकल पर आश्रित रहने वाले विद्यार्थियों की **एक न चली।** दाल न गला

322. पुष्प-वाटिका ने महल की **शोभा को बहुत बढ़ा दिया था।** चार चाँद लगाना

323. प्रवाहमयी नदी से डूबते बच्चे को बचाना कोई **सहज कार्य न था।** गुड़िया का खेल न होना

324. राजा ने पलभर में सब कुछ स्पष्ट करते हुए **उचित न्याय कर दिया।** दूध का दूध पानी का पानी

325. बस की सीट पर से सारा सामान गायब देखकर वह **हैरान रह गया।** सिट्टी-पिट्टी गुम होना

निर्देश: निम्नलिखित में से प्रत्येक वाक्यांश के लिए नीचे दिये गये विकल्पों में से उपयुक्त मुहावरे की चिन्हित कीजिए:-

326. अति प्रसन्न होना बाँछे खिलना

327. डरकर भाग खड़ा होना पीठ दिखाना

328. प्रभावित करना अपना रंग जमाना

329. नयी चीज लोगों को दिखाने की चाह — ईतर के घर तीतर बाहर टाँगे की भीतर।
330. आवश्यकता से कहीं न्यून वस्तु की प्राप्ति — ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती।
331. मुसीबत पर और मुसीबत का आना — कंगाली में आटा गीला होना।
332. वचन को निभाने वाला — बात का धनी
333. दया आना — दिल भर आना
334. क्रोध प्रकट करना — दाँत पीसना
335. आश्रय देने वाले का विनाश करना — जिस पेड़ के तले बैठना उसी की जड़ें उखाड़ना।
336. साधन-सम्पन्न व्यक्ति के सभी साथी बन जाते हैं। — जिसके हाथ लोई उसका सब कोई।
337. मूर्ख से मित्रता करने पर हानि ही होती है। — बन्दर की आशनाई घर में आग लगाई।
338. मनमानी करना — सइयाँ भए कोतवाल हमें डर काहे का।
339. छोटे लोगों से बड़ा काम नहीं होता। — मढ़े दमामा जात कहुँ चूहे के चाम।
340. नकद और अच्छी मजदूरी से काम अच्छा होता है। — खरी मजूरी चोखा काम।
341. क्रोध बढ़ना — पारा चढ़ना।
342. शान्ति में झगड़ा पैदा करना — पानी में आग लगाना
343. बहुत लज्जित होना — पानी-पानी होना
344. एक बुरे व्यक्ति के कारण पूरी बिरादरी का बदनाम होना — एक मछली सारे तालाब के पानी को गन्दा कर देती है।
345. छल-कपट का काम एक बार ही होता है। — कबिरा हाँडी काठ की चढ़ै न दूजी बार।
346. दोषी के साथ निर्दोष भी दण्ड भोगते हैं। — गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाते हैं।
347. निरुत्तर हो जाना — बगले झाँकना
348. सहायता करना — बेड़ा पार लगाना
349. अनावश्यक दखल देना — दाल-भात में मूसलचन्द
350. व्यक्ति को छोटा काम भी बड़ा लगता है। — छोड़न को घर कितनी दूर
351. अपनी हानि करके दूसरे की हानि करना — अपनी नाक कटाकर दूसरे का अपशकुन करना।
352. काम होने के बाद उसके विषय में खोजबीन करना व्यर्थ है। — पानी पीकर जाति नहीं पूछी जाती।
353. मुँह से निकली बात गुप्त नहीं रहती। — ओठों निकली कोठों चढ़ी।
354. जिसका आना-जाना सीमित क्षेत्र तक हो। — मियाँ की दौड़ मस्जिद तक।
355. जिससे लाभ की आशा हो, उसकी झिड़कियाँ भी अच्छी। — दुधारू गाय की लात भली।
356. विशेष क्षति का भय नह ो तो रक्षा की व्यवस्था व्यर्थ है। — न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।
357. क्षुधा तृप्ति से ही कार्य-क्षमता आती है। — भूखे भजन न होहिं गोपाला।
358. बहुत अधिक उत्साहित होना — झूले पर चढ़ना
359. समय से लाभ उठाना — बहती गंगा में हाथ धोना।
360. अकल चकराना — छक्का-पंजा भूलना

ZONE TECH

10. अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिन्दी शब्द

Abandonment	परित्याग
Abate	कम करना/घटाना / उपशमन करना
Above par	औसत से ऊँचा
Abridge	संक्षेप करना
Absolve	नियुक्त करना
Absorption	अन्तर्वलन / अवशोषण
Abstract	सार
Absurd	अर्थहीन
Academic year	शैक्षणिक वर्ष
Academy	अकादमी
Accede	मान लेना / सम्मिलित होना
Acceptability	स्वीकार्यता
Acceptance	स्वीकृति
Accord	देना / अनुकूल होना
Accordingly	तद्नुसार
Accusation	अभियोग
Accuse	अभियोग लगाना
Acquisition of land	भूमि अवाप्ति
Act in force	प्रवृत्त अधिनियम
Acting	कार्यवाहक / कार्यकारी
Addressee	पानेवाला / प्रेष्य
Adhere	दृढ़ रहना
Adhesive	आसंजक / चिपकने वाला
Adjustment	समायोजन
Administer	प्रशासन करना / देना/दिलाना
Administer, Oath	शपथ दिलाना
Administration of Justice	न्याय प्रशासन
Administration of System	प्रशासनिक पद्धति
Admissible	ग्राह्य, स्वीकार्य
Admit	स्वीकार करना / अन्दर आने देना

ZONE TECH

Amount deposited	जमा राशि
Amount outstanding	बकाया राशि
Amount withdrawn	निकाली गई राशि
Anomaly	असंगति
Antecedents	पूर्ववृत्त
Anticipated	प्रत्याशित
Anticipated Expenditure	प्रत्याशित व्यय
Appellate	अपीलार्थी
Applied	प्रयुक्त/व्यावहारिक
Appointee	नियुक्त व्यक्ति
Appointing Authority	नियुक्ति प्राधिकारी
Appointment	नियुक्ति
Apprise	बताना / सूचना देना
Appropriation	विनियोजन
Appropriation account	विनियोग लेखा
Approve	अनुमोदन करना
Approved Contractor	अनुमोदित ठेकेदार/अनुमोदित संविदाकार
Armament	आयुध
Arrears	बकाया
Arrear of pay	बकाया वेतन
As a matter of fact	वस्तुतः /यथार्थतः
As a right	साधिकार/अधिकार के रूप में
As a whole	समस्त रूप में / पूर्णतया
Assembly	विधान सभा / सम्मेलन
Assign	सौंपना/नियत करना/समनुदेशित करना
Associate	संघ
As the case may be	यथास्थिति
As usual	नित्यवत्
At par	सममूल्य पर
At the discretion of	के विवेकानुसार
Aviation	उड्डयन विभाग
Axiom	स्वयं सिद्धि
Backward classes	पिछड़े वर्ग
Bad Conduct	दुराचरण
Balance Sheet	तुलन पत्र

ZONE TECH

Bar	रुकावट
Bare outline	रूपरेखा मात्र
Bearer	वाहक / बैरा
Bell-Hope	सूचक / संदेशी
Beneficiary	लाभानुभोगी
Bibliography	संदर्भ-ग्रंथ सूची
Bi Cameral	द्विसन / द्विसदनी
Bid	बोली लगाना
Bipartite	द्विदलीय/उभयपक्षी
Birth rate	जन्म दर
Black list	काली सूची
Board of Studies	पाठ्य-समिति
Body	निकाय
Body Corporate	निगम - निकाय
Bodyguard	अंगरक्षक
Breach of Contract	संविदा भंग
Break in Service	सेवा में भंग/सेवा- विच्छेद
Brevity	संक्षेप
Brokerage	दलाली
Bulletin	बुलेटिन
Bureaucracy	नौकरशाही / अधिकारी तंत्र
Cadet	कैडेट
Cadre	काडर/संवर्ग
Camp	कैम्प/शिविर
Candidate	उम्मीदवार/प्रत्याशी / अभ्यर्थी
Capitation fee	प्रतिव्यक्ति फीस
Career	वृत्ति / जीविका
Cash	नकद / रोकड़
Casting vote	निर्णायक मत
Casual Leave	आकस्मिक अवकाश
Collaboration	सहयोग
Command	कमाना (रक्षा) / समादेश
Commemoration	स्मारक
Commencement	प्रारम्भ
Committee	समिति

ZONE TECH

Communique	विज्ञप्ति
Commutation	परिवर्तन
Complimentry	मानार्थ
Concur	सहमत होना
Confer	प्रदान करना / विचार-विमर्श करना
Conference	सम्मेलन
Confirmity	अनुरूपता / अनुसरण / पुष्टि
Conscription	अनिवार्य सैनिक भर्ती
Consecutive	लगातार / क्रमिक
Consignor	प्रेषक
Contingencies	आकस्मिक व्यय
Contradiction	अन्तर्विरोध
Contrary	प्रतिकूल / विपरीत
Contribution	अंशदान / योगदान
Conversion	परिवर्तन / रूपान्तरण
Convict	सिद्ध दोष / दोष सिद्ध करना
Copy	प्रतिलिपि / नकल
Correspond	पत्र व्यवहार करना / समरूप होना / पत्राचार
Corresponding	तदनुरूप
Counter	काउन्टर / पटल/ प्रति/गणित्र
Counter Affidavit	प्रति शपथ पत्र
Counter Charge	प्रत्यारोप
Counter Foil	दूसरी प्रति
Covering letter	आवरण पत्र
Credence	प्रत्यय पत्र
Credibility	विश्वसनीयता
Cum	एवं, साथ
Curtail	कम करना
Customs	सीमा शुल्क
Cypher	बीजलेखा शून्य / सिफर
Daily Allowance	दैनिक भत्ता
Day Scholar	दिवा छात्र
Debarred	विवर्जित
Debenture	ऋण पत्र
Decrease	छँटनी / कमी

ZONE TECH

Deed	विलेख
Defamation	मानहानि
Defaulter	चूक करने वाला / बकायादार
Dejure	विधित:
Delimitation	परिसीमन
Demarcation	सीमांकन
De novo	नये सिरे से
Depressed class	दलित वर्ग
De-requisition	अधिग्रहण मोचन
Designate	अभिहित करना / नामोदिष्ट करना
Designation	पदनाम
Detrimental	हानिकर
Directory	निर्देशिका
Disbursement	संवितरण
Discard	अमान्य करना/अलग करना
Disparity	असमानता
Displaced	विस्थापित
District headquarters	जिला मुख्यालय
Ditto	यथोपरि, एक-सा
Dividend	लाभांश
Drawing Officer	आहरण अधिकारी
Duplicate	अनुलिपि/प्रतिलिपि
Duration	अवधि
Earmark	चिह्नित
Earned leave	अर्जित अवकाश
Eject	बेदखल करना
Elapse	बीतना / बीत जाना
Electorate	निर्वाचक सूची
Emoluments	परिलब्धियाँ
Employee	कर्मचारी
Encroachment	अधिक्रमण
Enforce	प्रवर्तन करना
Engagement	आबंध/ वचनबंध/कार्यसंलग्नता
Enhance punishment	वर्द्धित दण्ड
Enumeration	गणना

ZONE TECH

Epitome	निष्कर्ष / सार
Equipment	उपस्कर
Estimate	अनुमान
Evacuee	निष्क्रांत
Evidence	साक्ष्य / गवाही
Ex-Cardrepost	संवर्ग बाह्य पद
Excess	अति/अधिकता
Exchange	विनिमय/केन्द्र
Exercise	प्रयोग करना
Exonerate	दोषमुक्त करना
Exparte	एकपक्षीय
Expatriation	देश निकाला / प्रवास
Expulsion	निष्कासन
Extend	बढ़ाना / लागू होना
Extensive	व्यापक
Faculty	संकाय/ शाखा
Fair copy	स्वच्छ प्रति
Fasten	चिपकाना
Fettler	संवारक
Fictitious	काल्पनिक
First aid	प्रथम उपचार
Fitness certificate	आरोग्य प्रमाण पत्र
Fluctuate Fly leaf	उतार-चढ़ाव
Foot note	कोरा पन्ना
Forfeiture	पाद टिप्पणी अधिहरण
Forged	जाली / कूटरचित
Formula	सूत्र
Franchise	मताधिकार
Free	नि:शुल्क
Freight	भाड़ा
Fundamental	मौलिक/आधारभूत
Furnish	प्रस्तुत करना/सजाना
Further	आगे करना
Gazette	राजपत्र
Gazette notification	राजपत्र अधिसूचना

ZONE TECH

Gist	भावार्थ
Glossary	शब्द संग्रह / शब्दावली
Good offices	मध्यस्थता
Good order	अच्छी स्थिति
Grace period	अनुग्रह अवधि
Gratuity	उपदान / आतोषिक
Grave misconduct	घोर दुर्व्यवहार
Grievance	शिकायत
Guide	परिदर्शक
Guilt	अपराध / दोष
Gummer	गोंदवाला
Habeas corpus	बंदी प्रत्यक्षीकरण
Habitual	अभ्यासिक
Defaulter	दोषी
Handle	दस्ता/ हत्था / संभालना
Heir	उत्तराधिकारी
Heir of State	युवराज
Heirarchy	उत्क्रम/सोपान/धर्मसत्ता
Herein	इसमें
High way	राजपथ
Hint	संकेत
His excellency	परम श्रेष्ठ
Holograph	स्वलेखन
Homage	श्रद्धांजलि
Honorarium	मानदेय
House rent	मकान किराया
House allowance	मकान किराया भत्ता
Housing	आवासन
Humanitarian	मानवीय
I am directed to	मुझे निर्देश हुआ है
I am desired to say	मुझे यह निवेदन करने के लिए कहा गया है
Illegitimate	अधर्मज / अवैध
Illicit	निषिद्ध/अयुक्त
Illiteracy	निरक्षरता
Impersonation	प्रतिरूपण

ZONE TECH

Implement	कार्यान्वित करना
Implication	विवक्षा / फँसना / फँसाना
In abeyance	आस्थगित
In accordance with	के अनुसार
In addition to	के अतिरिक्त
In camera	गुप्त बैठक
Incentive	प्रोत्साहन
Incite	भड़काना
In confirmity with	के अनुरूप
In course of	के दौरान
In course of time	यथा समय
Incumbrance	अधिभार
Incurred	व्यय किया गया
In default of	के अभाव में
Indent	माँगपत्र
Indented	जगह, टूटा पैरा
Inference	अनुमति / अनुमान
Injunction	निषेधाज्ञा
In lieu of	के बदले में
In order of merit :	गुणानुक्रम से
In order of priority	प्राथमिकता क्रम से
In perpetuity	सदैव के लिए / शाश्वत
Instigate	उकसाना
Intigration	एकीकरण
Intensive	गहन / प्रकृष्ट
Interim	अंतरिम
Intermediate	मध्यवर्ती
Interpreter	दुभाषिया
Invoice	बीजक
Ipso facto	यथातथ्यत:
Irrecoverable	नावसूल
Irrelevant	असंगत/असम्बद्ध
Isolated post	एकलपद
Itemwise	मदवार
It is suggested	यह सुझाव दिया जाता है

ZONE TECH

Jobbery	क्षुद्र कर्म / स्वार्थाचार
Job work	छिटपुट / फुटकर काम
Joining report	प्रतिवेदन
Judicial	न्यायिक
Junior	कनिष्ठ
Just	न्यायपूर्ण / उचित/ ठीक
Juvenile	किशोर/बाल
Juvenile offender	किशोर अपराधी
Keep in abeyance	आस्थगित रखना
Key board	कुंजी पटल
Key map	मूल नक्शा
Kindergarten	बालवाड़ी
Labour relations	श्रम सम्पर्क
Lapse	बीतना/व्यपगमन
Lawfull	विधिसंगत
Lawless	विधिहीनता
Lease	पट्टा
Ledger	खाता
Legal claim	विधिक दावा
Legal force	विधिक बल
Letter credence	प्रत्यय पत्र
Letter Intent	आशय पत्र
Lexicon	कोश
Lifetenure	आजीवन वृति
Light house	प्रकाश स्तम्भ
Liquidation	परिसमापन
Live stock	पशुधन
Local	स्थानीय
Lodging	वासगृह
Loss intransit	मार्ग में हानि
Lunch	मध्याह्न भोजन/लंच
Machine	मशीन
Malafide	कदाशय
Malice	विद्वेष
Manifesto	घोषणा पत्र

ZONE TECH

Memorandum	ज्ञापन
Merger	विलयन
Metalled road	पक्की सड़क
Migration	प्रवास
Misrepresentation	अन्यथा कथन
Mortuary	शवागार
Motion	प्रस्ताव
Motive	प्रयोजन/प्रेरणा/प्रेरक
Mutation	नामांतरण
National anthem	राष्ट्रगान
National convention	राष्ट्रीय सम्मेलन
Negotiate	बातचीत करना
Net total	शुद्ध जोड़
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण पत्र
Non consumable	अनुपभोज्य
Non observance	अपालन
Noting and drafting	टिप्पणी और मसौदा लेखन
Not negotiable	अपर क्राम्य
Null and void	अकृत और शून्य
Nursing	उपचर्या
Nutrition	पोषण
Oath	शपथ
Observance	पालन
Obsolete	लुप्त/अप्रचलित
Occupy	अधिकार में करना
Offer	नियुक्ति प्रस्ताव
Official version	सरकारी, अधिकारिक कथन
Omitted	छोड़ा हुआ
Onus	भार/ दायित्व
Opening balance	अथशेष
Operation	प्रवर्तन
Outfit allowance	परिधान भत्ता
Out put	उत्पादन
Outright	पूर्ण / पूर्ण रूप से
Over time	अतिरिक्त समय

ZONE TECH

Pact	समझौता
Pagination	पृष्ठ संख्या डालना
Patent	पेटेंट/एकस्व
Performance register	निष्पादन रजिस्टर
Periodical	आवधिक/सामयिक पत्र–पत्रिका
Per mensem	प्रतिमास
Petition	याचिका
Physical verification	प्रत्यक्ष सत्यापन
Plaint	वाद पत्र
Posthomous	मरणोपरान्त
Posting	पदस्थापन
Prejudice	पूर्वग्रह
Premises	परिसर/अहाता
Primafacie	प्रथम दृष्टि में
Privilege leave	उपार्जित अवकाश
Probability	प्रायिकता
Proclaim	घोषणा
Protocol	नयाचार
Project	परियोजना
Provide	देना/व्यवस्था करना
Proxy	परोक्षी / प्रतिपत्र
Public account	लोक सेवा
Public trust	लोक न्यास
Qualify	अर्हता प्राप्त करना
Quasipermanency	स्थायीत्वता
Quorum	कोरम / गणपूर्ति
Quo warranto	अधिकार पृच्छा
Radical	आमूल
Random	अनियमित/सांयोगिक
Ranger	रेंजर/क्षेत्रप
Realization	वसूली उगाहना
Reassessment	पुनर्निर्धारण
Recess	विश्रांति
Recommitment	पुनः समर्पण
Record	अंकित करना / अभिलेख दर्ज करना

ZONE TECH

Recovery of dues	देय की वसूली
Redundant	अतिरिक्त
Refresher course	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम
Register of calls	याचना पंजी / मिलने वालों की पंजी
Reimburse	प्रतिपूर्ति करना
Reiterate	फिर कहना
Rejoinder	प्रत्युत्तर
Renovation	पुनर्नवीनीकरण
Repatriate	देश को लौटाना
Repay	शोधन करना / चुकाना
Repeal	निरसन
Restoration	पुनःस्थापना / फिर से चालू करना
Restrain	रोकना
Restricted	सीमित / प्रतिबंधित
Reversion	परावर्तन
Revert	पूर्व पद पर पुनः लौटना
Rigid	कठोर
Regorous imprisonment	सश्रम कारावास
Routine	नेमी / दस्तूरी
Salvage and scrap	कबाड़ और रद्दी
Script writer	वस्तु लेखक
Senior grade	वरिष्ठ प्रक्रम / वरिष्ठ श्रेणी
Sentence	दण्ड देना
Shift	पारी
Sinedie	अनिश्चित काल के लिए
Sooner or later	देर-सवेर
Sponsor	प्रयोजन
Standard	मानक
Stipend	वृत्तिका
Stipulate	अनुबंध करना
Strike	हड़ताल
Subordinate	अधीनस्थ
Subsidiary	गौण / सहायक
Succession	उत्तराधिकार
Symposium	परिसंवाद

ZONE TECH

System	पद्धति/प्रणाली
Tabulation	सारणी बनाना
Tally	मिलाना
Time barred	कालातीत/कालबाधित
Transaction	संचालन / लेन-देन
Transit	संक्रमण
Ultimate	अन्तिम/चरम
Ultimo	गत महिने का
Underissue	निकाला जा रहा है
Unforseen	अदृष्ट
Unilateral	एक पक्षीय
Unseen	अदृष्ट पूर्व
Up to date	अद्यावधि
Utilisation certificate	उपयोजन प्रमाण पत्र
Vague	अस्पष्ट/अनिश्चित
Valid	विधिमान्य
Vest	निहित होना
Violate	अतिक्रमण
Visit	आगमन / भेंट/निरीक्षण
Void	शून्य
Voluntary	स्वैच्छिक
Wage	मजदूरी
Way bill	मार्ग पत्रक / रवन्ना
With respect to	के बारे में
Write off	अवलेखन
X-ray	एक्सरे
Year book	अब्द कोष
Zone	अंचल

ZONE TECH

11. संक्षेपण के अवतरण

(1)

''आज के शिक्षाक्रम में चरित्र गठन का कोई स्थान नहीं है और न उसे कोई महत्त्व दिया जाता है। हमारी संस्कृति में गुरु और शिष्य का सम्बन्ध बहुत ही सुन्दर और मीठा हुआ करता था। इसका कारण यही था कि दोनों का एक दूसरे पर विश्वास हुआ करता था। गुरु शिष्य को पुत्रवत् मानते थे और उस पर स्नेह रखते थे। शिष्य गुरु को पितातुल्य और विश्वसनीय समझता था। गुरु का शिष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा करता था और गुरु-शिष्य के बीच केवल व्यापारिक सम्बन्ध, जिसमें पैसे के बदले कुछ पुस्तक पढ़ा देने मात्र का सम्बन्ध होता है, न रहकर आध्यात्मिक सम्बन्ध हो जाता था जो घनिष्ठ हुए बिना नहीं रह सकता था। आये दिन समाचार-पत्रों में विद्यार्थियों और शिक्षकों. के सम्बन्ध में ऐसी-ऐसी भयंकर बातें पढ़ने को मिलती रहती है जिनसे हृदय अत्यन्त खिन्न हो उठता है। मेरी समझ में इसका मौलिक कारण चरित्र-गठन पर ध्यान न देना और छात्रों पर शिक्षक वर्ग के नैतिक प्रभाव का न होना ही है।''

शीर्षक - नैतिक शिक्षा।

संक्षेपण

प्राचीनकाल में गुरु-शिष्य का पिता-पुत्र जैसा आत्मीय और आध्यात्मिक सम्बन्ध हुआ करता था। इस कारण शिष्य पर गुरु के आचरण की गहरी छाप पड़ती थी, किन्तु आज की शिक्षा व्यापार बन चुकी है जिसमें चरित्र गठन पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। आज के छात्र पर शिक्षक का कोई नैतिक प्रभाव न होने के कारण दोनों के सम्बन्ध विकृत हो गये हैं।

(2)

''किसी देश की संस्कृति को जानने के लिए वहाँ के साहित्य का पूरा अध्ययन नितान्त आवश्यक है। साहित्य किसी देश या जाति के विकास का चिह्न है। साहित्य से उस जाति के धार्मिक विचारों, सामाजिक संगठन, ऐतिहासिक घटनाचक्र तथा राजनीतिक परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब मिल जाता है। भारतीय संस्कृति के मूल आधार हमारे साहित्य के अमूल्य ग्रंथ-रत्न हैं, जिनके विचारों से भारत की आंतरिक एकता का ज्ञान हो जाता है। हमारे देश की बाहरी विविधता भारतीय वाङ्मय के रूप में बहने वाली विचार और संस्कृति की एकता को ढक लेती है। वाङ्मय की आत्मा एक है, पर वह अनेक भाषाओं, रूपों तथा परिस्थितियों में हमारे सामने आती है।''

शीर्षक - साहित्य और संस्कृति।

संक्षेपण

किसी देश की संस्कृति साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। साहित्य के द्वारा हम किसी जाति के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। भारतीय साहित्य और संस्कृति के विविध रूप देखे जा सकते हैं, किन्तु जिस तरह सम्पूर्ण साहित्य की आत्मा एक है, उसी तरह भारत की संस्कृति में भी आन्तरिक एकता विद्यमान है।

(3)

''मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनन्द-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है। पर, उस सुख और उत्सव के इस आनन्द में बड़ा अन्तर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य-जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गयी है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिन्ता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यन्त क्षणिक होता है, क्योंकि तुरन्त ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं। यही नहीं, उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनन्द की प्राप्ति करते हैं। यह आनन्द जीवन का आनन्द है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्यत्व का ख्याल करते हैं। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिन्ता छोड़ देते हैं, कर्त्तव्य-भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छन्दता आ जाती है। उस रोज हमारी दिनचर्या बिल्कुल नष्ट हो जाती है। व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हम लोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनन्द पा रहे हैं।''

शीर्षक - उत्सव का आनन्द।

संक्षेपण

मनुष्य को दो अवसरों पर आनन्द की प्राप्ति होती है–उत्सवों पर और आवश्यकता की पूर्ति होने पर। पर इन दोनों में अन्तर है। उत्सवों का आनन्द सच्चा आनन्द होता है। ऐसे अवसरों पर हम अपनी आवश्यकताओं, स्वार्थों और यहाँ तक कि अपने बड़प्पन तक की भूल जाते हैं। आवश्यकता की पूर्ति होने से हमें सुख मिलता है, आनन्द नहीं। मनुष्य सदा अभाव की पूर्ति में लगा रहता है, इसलिए पूर्तिजनित सुख अस्थायी होता है। सच्चा रसास्वादन तो उत्सवों से ही प्राप्त होता है।

(4)

''समूचे एशिया में भारत एक अकेला देश है जहाँ लोकतन्त्र की जड़ें बहुत मजबूत और अन्दर तक है और इस हद तक अन्दर है कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि वह लोकतन्त्रीय उपायों के जरिये शासन में परिवर्तन करने की कोशिश करेगी। भारतीय लोकतंत्र की इससे बड़ी सफलता और क्या हो सकती थी कि उसने स्वयं साम्यवाद में एक अन्तर्विरोध पैदा कर दिया। जो लोग देश में समय-समय पर होने वाली अप्रिय घटनाओं को ही देखकर यह मान लेते हैं कि भारत लोकतंत्र के उपयुक्त नहीं या हमारा लोकतंत्र बहुत कमजोर है, वे न केवल निराशावादी हैं, बल्कि इस देश की उस अशिक्षित, किन्तु महाप्राण जनता से भी पूरी तरह अपरिचित हैं जो किताबी अर्थ में लोकतंत्र का अर्थ भले ही न समझती हो, लेकिन जिसने अन्दर ही अन्दर यह समझ लिया है कि उसकी नियति निर्माता और कोई नहीं है, वह स्वयं है।''

शीर्षक- भारतीय लोकतंत्र।

संक्षेपण

भारतीय लोकतंत्र इतना सुदृढ़ है कि कम्युनिस्टों को भी इसी पद्धति को स्वीकार ;करना पड़ा। इस विशाल देश में यत्र-तत्र घटित अप्रिय घटनाओं को देखकर कुछ निराशावादी लोग लोकतंत्र और देश की अशिक्षित जनता के प्रति अविश्वास से भर उठते हैं। यह एक प्रमाणित सत्य है कि यहाँ का अनपढ़ मतदाता यह अच्छी तरह समझता है कि वह देश का और अपना भाग्य विधाता है।

(5)

''कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किए रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास से हमारे मनोविकारों का परिष्कार तथा शेष स्थिति के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है, जिस प्रकार जगत् अनेक रूपात्मक है, उसी प्रकार हमारा हृदय भी अनेक भावात्मक है। इन अनेक भावों का व्यायाम और परिष्कार तभी समझा जा सकता है जबकि इन सबका प्राकृत सामंजस्य जगत् के भिन्न- भिन्न रूपों, व्यापारों या तथ्यों के साथ हो जाए। इन्हीं भावों के सूत्र में मनुष्य जाति जगत् के साथ तादात्म्य का अनुभव चिरकाल से करती आई है। जिन रूपों और व्यापारों में मनुष्य आदिम युग से ही परिचित है, जिन रूपों और व्यापारों को सामने पाकर वह नर जीवन के आरम्भ से ही लुब्ध और क्षुब्ध होता चला आ रहा है, उसका हमारे भावों के साथ मूल या सीधा सम्बन्ध है। अत: काव्य के प्रयोजन के लिए हम उन्हें मूल रूप और मूल व्यापार कह सकते हैं। इस विशाल विश्व के प्रत्यक्ष से और गूढ़ से गूढ़ तथ्यों को भावों के विषय या आलम्बन बनाने के लिए इन्हीं मूल मार्मिक रूपों में नहीं लाए जाते, तब तक उन पर काव्य दृष्टि नहीं पड़ती।''

शीर्षक-कविता क्या है?

संक्षेपण

कविता एक अलौकिक अनुभूति योग है। वह अपने-पराये के संकीर्ण बोध से हमें मुक्त कर देती है। कविता में मन के नाना भावों का अनेक रूपात्मक जगत् के साथ रागात्मक सामंजस्य व्यक्त होता है। कविता से मनोविकारों का परिष्करण होता है। कविता में विश्व के मूल आदिम रूप- व्यापारों के माध्यम से गूढ़ार्थ की व्यंजना की जाती है।

(6)

''जिस प्रकार साहित्य, धर्म और विज्ञान का लोक व्यापक जीवन में प्रवेश आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन में संस्कार और समाज की स्थिति के लिए कला की अनिवार्य आवश्यकता है। यदि कला कुछ सौन्दर्य-प्रेमियों के विलास या कौतूहल- तृप्ति का साधन मात्र है तो लोक की बड़ी हानि समझनी चाहिए। वस्तुत: कला, जीवन के सूक्ष्म और सुन्दर पट का विधान है जिसके आश्रय में समग्र लोक अपनी उत्सवानुगामी और संस्कार प्रवृत्तियों को तृप्त करता हुआ उच्च मन की शान्ति और समन्वय का अनुभव कर सकता है। मनुष्य अपने अन्तिम कल्याण के लिए चाहता है कि जितना स्थूल जड़ जगत् उसके चारों ओर घिरा रहता है, उसको सुन्दर रूप में वह ढाल ले। स्थूल के ऊपर जो मानस और अध्यात्म जगत है, उसको चरित्र एवं ज्ञान के द्वारा हम आकर्षक और सौन्दर्य युक्त बनाते हैं। इस द्विविध सौन्दर्य के बीच में ही जीवन पूरी तरह रहने योग्य बनता है। जिस समय जीवन के चरित्र और मनोभाव हमारे चारों ओर विकसित होकर अपनी लहरियों के वातावरण को भर देते हैं और उनकी तरंगें हमारे अन्तर्जगत् को आह्लादित और प्रेरित करती है, उस समय यह अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि स्थूल पार्थिक वस्तुओं के जो अनपढ़ रूप हमें मेरे हुई है, वे भी कला के प्रभाव से द्रवित हो जाएँ और उनमें से रूप सौंदर्य और श्री के सोते फूट

निकलें। कला का प्रत्येक उदाहरण जगमगाते दीपक की तरह अपने चारों ओर प्रकाश की किरणें भेजता रहता है, वह वायु में निरन्तर सूक्ष्म तरंगें उत्पन्न करके मनुष्य के मन को, स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रेरित करता है। समाज जिस प्रकार की मानस संस्कृति को अपने चरित्र, बल और व्रतों की साधना से अपने लिए बनाता है, उसी के अनुरूप कला का निर्माण करना भी समाज की स्थिति के लिए आवश्यक है।''

शीर्षक- कला और समाज।

संक्षेपण

कला एक मात्र सौन्दर्य-लिप्सा और कौतूहल- वृद्धि का साधन नहीं है वरन् वह जीवन के संस्कार और समाज सत्ता के लिए भी आवश्यक है। कला जीवन के आन्तरिक सौन्दर्य का अभिव्यंजन करती है। समाज अपने लिए जैसे-चरित्र, शक्ति और साधन अपनाता है, उसी के अनुरूप कला-निर्माण आवश्यक है।

(7)

''धीर पुरुष का मन समुद्र के समान होता है। यह गम्भीर और अथाह होता है। समुद्र की तरह मर्यादा पालन में उसकी यह दशा है कि आनन्द और ऐश्वर्य रूपी अनेक नद - नदियाँ उसमें गिरती हैं, पर क्या मजाल जो वह जरा भी मर्यादा का उल्लंघन करें। उसकी परिपूर्णता को देखिए। तप रूपी सूर्य उसमें दिन-रात तपस्या करते हैं, यही नहीं, चिन्ता रूपी विचार-वाड़वाग्नि दिन रात उसमें जला करती है, पर उसमें जरा भी कमी नहीं होती। साथ ही जिस समय उसमें कोई तूफान आता है, उस समय किसकी मजाल है जो उसे रोक सके, यह नहीं कि इधर पानी बरसा, उधर पहाड़ी नदी उबल पड़ी। बीच में हाथी भी पड़ा तो बह चला। पर थोड़ी देर से पानी नदारद। हाथी ज्यों का त्यों बच गया।''

शीर्षक - धीर पुरुष के लक्षण।

संक्षेपण

धीर पुरुष - मर्यादा - पालन में समुद्र की भाति गम्भीर होता है। सुख-दुख में समान व्यवहार करता है। आनन्द, ऐश्वर्य और चिन्ता उसे विचलित नहीं कर पाते, किन्तु आक्रोश आने पर वह सागर की भाँति ही निर्बन्ध हो उठता है। किसी भी स्थिति में पहाड़ी नदी जैसा उबाल उसमें नहीं आता।

(8)

''कला के क्षेत्र में हमारा दृष्टिकोण मुक्त होना चाहिए। कवि के लिए जो प्रथम तथा अंतिम बन्धन हो सकता है, वह केवल इतना ही है कि कवि अपने प्रति पूर्ण रूप से ईमानदार रहे। समन्वय कला की सुन्दरता का मूल है। जिस प्रकार आकाश में विचरण करने वाले कलाकारों को पैरों के नीचे वाली मिट्टी का ध्यान बनाए रखना आवश्यक है, अत: उसी प्रकार मिट्टी को सर्वस्व मान लेने वाले कलाकार को यह याद रखना जरूरी है कि उसका विहार - स्थल आकाश भी है। कवि जिस प्रकार फूलों और नदियों के पास केवल रसानुभूति के उद्देश्य से जाता है, उसी प्रकार जीवन के अन्य अंगों से भी वह रस प्राप्त करता है। हम पूरे दायित्व के साथ कहना चाहते हैं कि पेट की पीड़ा की अनुभूति किसी प्रकार भी प्रेम की पीड़ा की अनुभूति लिखने वाले से हीन नहीं है।''

शीर्षक - यथार्थ और सौन्दर्य।

संक्षेपण

कला-सृजन में यथार्थ चित्रण त्याज्य नहीं है। कला तो समन्वयशील होती है। उसमें यथार्थ और कल्पना, सुख और दुख का रसमय चित्रण होता है। कलाकार जीवन- जगत् की पीड़ा और प्रकृति-सौन्दर्य, प्रेम और कल्पना के आधार पर कला सृजन करता है। उसे स्वाभाविकता का सदा ध्यान रखना है।

(9)

''मानव जाति की प्रगति में ऐसा समय आया जब मनुष्य ने यह सोचना बन्द कर दिया कि अनेक शासकों का जनता के नियंत्रण से मुक्त होना और जनता के हित के विरुद्ध होना एक स्वाभाविक आवश्यकता है। उनको यह अधिक अच्छा लगने लगा कि उनके शासनाधि कारी एक प्रकार से एक किरायेदार अथवा प्रतिनिधि हों, जिनको वे चाहे अलग कर सकें। उनको यह लगने लगा कि शासकीय शक्तियों के दुरुपयोग से जिससे उनका अहित होता है, वे अपनी रक्षा केवल इसी तरीके से कर सकते हैं। अत: जहाँ कहीं भी लोकप्रिय दल थे निर्वाचित एवं अस्थायी शासकों की माँग, उनके कार्यों और प्रयासों का प्रमुख लक्ष्य बन गयी और इसने शासकों की शक्ति को सीमाबद्ध करने के प्रयत्नों का स्थान ले लिया। जब शासकों को समय-समय पर शासितों द्वारा नियुक्त करने का आन्दोलन आगे बढ़ा तो कुछ व्यक्तियों ने सोचना भी आरम्भ कर दिया कि अभी तक शासन की शक्ति को सीमाबद्ध करने को जो विशेष महत्त्व दिया गया है, वह व्यर्थ है। यह तो उन शासकों के विरुद्ध रक्षा का आधार था जिनके हितों का जनता के हितों से स्वभावत: विरोध होता था, परन्तु अब आवश्यकता इस बात की है कि जनता और शासकों के हित एक समान हों और जनता तथा राष्ट्र की इच्छा और हित ही सभी की इच्छा और हित हों और निरकुंश शासन को तत्काल हटाने का अधिकार जनता को प्राप्त हो।''

शीर्षक - जनतन्त्र का विकास।

संक्षेपण

प्राचीन काल में जब शासक निरकुंश होकर जनता के हितों की उपेक्षा करने लगे थे, तब जनता ने अपने हितों की रक्षा के लिए प्रतिनिधि शासन की आवश्यकता अनुभव की। फलतः लोकप्रिय दलों ने निर्वाचित शासकों की माँग की। जब शासक जनता के हाथों की कठपुतली मात्र बन गये तो शासकों की स्वतन्त्रता को सीमित करने का भी विचार हुआ। अतः आज यह आवश्यक हो गया है कि जनता और शासक की इच्छा और हित समान हों और निरकुंश शासन को समाप्त करने का अधिकार भी जनता को प्राप्त हो।

(10)

''संसार में पाप कुछ भी नहीं है। वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर अभिनय करने आता है और अपनी मनस्थिति से प्रेरित होकर अपने पाठ को दुहराता है। यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं। वह परिस्थितियों का दास है, विवश है। वह कर्त्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पुण्य और पाप कैसा? प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है। केवल व्यक्तियों के सुख के केन्द्र भिन्न होते है, कुछ सुख को धन में देखते हैं कुछ त्याग में देखते हैं। पर सुख प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। कोई भी व्यक्ति संसार में अपनी इच्छानुसार वह काम नहीं करता जिससे दुख मिले। यही मनुष्य मन की प्रवृत्ति है और उसके दृष्टिकोण की विषमता है।''

शीर्षक- पाप और पुण्य।

संक्षेपण

संसार में पाप-पुण्य दृष्टि-सापेक्ष है। मनुष्य के प्रत्येक कर्म के मूल में उसका स्वभाव होता है जो सहजात एवं प्राकृतिक है। सुख-कामी होने के कारण मनुष्य दुखद कार्यों से दूर रहता है। परिस्थितियों का दास होने के कारण मनुष्य के किसी कर्म को पाप या पुण्य कहना व्यर्थ है।

(11)

''आज देश स्वतन्त्र है। हमें अपनी शक्ति की वृद्धि करनी है, जिससे हमारी नवीन स्वतन्त्रता की रक्षा हो सके। आए दिन ऐसे संकट हमको चुनौती देते रहते हैं जिनसे निपटने के लिए एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता है। यदि विद्यालयों में ही देश सेवा की यह भावना दृढ़ हो जाये तो भविष्य के लिए बहुत बड़ी तैयारी हो सकेगी। प्राचीनकाल में आश्रमों में वेद-शास्त्रों के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। द्रोणाचार्य ने कौरवों- पाण्डवों को सैनिक शिक्षा दी थी। सैनिक शिक्षा से शारीरिक शक्ति के साथ मानवीय गुणों का भी विकास होता है। सेवा, तत्परता, परिश्रमशीलता, निर्भयता आदि गुण इस शिक्षा से अपने आप आ जाते हैं। जीवन भी तो एक युद्धक्षेत्र ही है। इस क्षेत्र में लड़ने के लिए भी उपर्युक्त गुणों की आवश्यकता पड़ती है। हमारे देश की संस्कृति शान्ति प्रधान है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी शक्ति में वृद्धि न करें। आज सम्पूर्ण संसार सैनिक शिक्षा पर जो ध्यान दे रहा है उसे देखते हुए हमारे लिए भी इस ओर कदम बढ़ाना आवश्यक हो जाता है।''

शीर्षक - अनिवार्य सैनिक शिक्षा।

संक्षेपण

आज देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हमें शक्तिशाली सेना की आवश्यकता है। वर्तमान परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि हमारे विद्यालयों में देश-सेवा की भावना का विकास किया जाय। प्राचीनकाल में भी आश्रमों में ऐसी व्यवस्था थी। सैनिक शिक्षा के द्वारा शारीरिक शक्ति के साथ मानवीय गुणों का भी विकास होता है। शान्ति और सुरक्षा की दृष्टि से यह कदम उठाना अनिवार्य हो जाता है।

ZONE TECH

12. अनुवाद

अनुवाद के सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य बातें-

1. अनुवाद के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का पूरा ज्ञान आवश्यक है।
2. भाषा के साथ-साथ विषय का ज्ञान भी अनिवार्य है ।
3. स्रोत भाषा - सामग्री का अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल करना
4. सामान्यत: शब्दानुवाद को अच्छा नहीं माना जाता किन्तु वैज्ञानिक, और विधि-निर्माण के क्षेत्र में शब्दानुवाद आवश्यक होता है।
5. यदि कोई समानार्थी शब्द न मिले तो उपसर्ग-प्रत्यय के सहारे नया शब्द बना लेना चाहिए।
6. अन्य सन्दर्भ और प्रसंग की आवश्यकता के अनुसार अन्य स्वदेशी भाषाओं के उपयुक्त शब्दों का प्रयोग अनुचित नहीं होता।
7. यदि कोई विदेशी शब्द हमारी भाषा का अंग बन चुका है तो उसे ज्यों का त्यों ग्रहण किया जा सकता है।
8. लोकोक्ति और मुहावरों का अनुवाद बहुत कठिन होता है । यदि लक्ष्य भाषा में पूर्णत: समानार्थी लोकोक्ति मुहावरा न मिले तो भावानुवाद स्पष्ट कर देना चाहिए।
9. अनुवाद अधिकृत पारिभाषिक शब्द कोष का उपयोग उचित होता है।
10. अनुवाद कोई विज्ञान नहीं है अभ्यास जनित कला है, इसलिए अनुवाद की कोई सर्व स्वीकृति मानव प्रक्रिया नहीं होती।

अनुवाद के प्रकार

भिन्न-भिन्न आधारों पर अनुवाद के भिन्न रूप माने जाते हैं।

जैसे -

1. पूर्ण अनुवाद
2. आंशिक अनुवाद
3. समग्र अनुवाद
4. बद्ध अनुवाद

7. As laid down in our Constitution, the memorable occassion for the introduction of Hindi as the Official Language of the union of the 26th January, 1965 has come. As a matter of fact this is a turning point in history of all the Indian Languages, which may, new or in near future, be used for official purposes in the various States. It has, therefore, become necessary to make available forthwith a generally acceptable standard terminology which may be used in Hindi and other regional languages for official correspondence and notings.

7. जैसा हमारे संविधान में निर्धारित है, भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का स्मरणीय अवसर 26 जनवरी, 1965 को आ गया है। वस्तुत: यह सभी भारतीय भाषाओं के इतिहास में एक नया मोड़ है, क्योंकि वे अब के या निकट भविष्य में विभिन्न राज्यों में सरकारी काम-काज के लिए प्रयुक्त की जा सकेंगी। अतएव यह आवश्यक हो गया है कि एक ऐसी सामान्यत: स्वीकरणीय मानक शब्दावली सर्वसुलभ कर दी जाये, जिसे सरकारी पत्र-व्यवहार और टिप्पणी लेखन आदि के लिए हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयुक्त किया जा सके ।

8. Question has been raised as to whether home-leave may be allowed to the employees who are deputed abroad for training.

It is clarified that home-leave not exceeding one week before proceedings abroad and one week soon after return from abroad, may be allowed provided the period of training is 90 days or more. If the period is less than 90 days, a total home-leave for one week may be allowed. For the period of less than 60 days but more that 30 days, not more than 3 days; leave may be allowed.

यह प्रश्न उठाया गया है कि विदेश में प्रशिक्षण के लिए प्रतिनियुक्ति कर्मचारी को घर जाने के लिए अवकाश (होम-लीव) स्वीकृत की जाए या नहीं।

यह स्पष्ट किया जाता है कि यदि प्रशिक्षण की अवधि 90 दिन या इससे अधिक हो तो विदेश जाने से पूर्व अधिकतम एक सप्ताह

तक की तथा विदेश से आने से तुरन्त बाद अधिकतम एक सप्ताह तक का गृह अवकाश स्वीकृत किया जा सकता है। यदि अवधि 90 दिन से कम और 60 दिन से अधिक है तो गृह-अवकाश कुल एक सप्ताह का दिया जा सकता है। 90 दिन से कम और 30 दिन से अधिक की अवधि के लिए 3 दिन से अधिक का गृह-अवकाश स्वीकृत नहीं किया जा सकता ।

9. You will enter into a contract of apprenticeship with the Company in the enclosed proforma. In the interest of your training, you may also be sent to other organisation(s) for short period (s) or moved from one shift to another shift for training at the discretion of the Management and according to the working convenience.

9. आपको संलग्न प्रोफार्मा में कम्पनी के साथ शिक्षुता का अनुबन्ध करना होगा । आपके प्रशिक्षण के हित में आपको अल्प अवधि (यों) के लिए अन्य संगठन (नों) में भी भेजा जा सकता है। मैनेजमेंट के विवेक पर और कार्य - सुविधा के अनुसार प्रशिक्षण के लिए एक पारी से दूसरी पारी में भी आपकी बदली की जा सकती है ।

10. On satisfactory completion of one year apprenticeship training and subject to the Company's requirement, some of the Apprentice may be taken in regular employment and placed in the scale of pay of Rs.... If you are appointed on regular basis, you will be required to serve the corporation for a period of three years in the post carrying the scale of pay mentioned above for which you will have to execute a bond in favour of the Corporation.

10. शिक्षुता प्रशिक्षण का एक वर्ष सन्तोषजनक रूप से पूरा करने पर और कम्पनी की आवश्यकता होने पर कुछ शिक्षुओं को नियमित नौकरी में लेकर उन्हें रु ..... वेतनमान में रखा जा सकता है। यदि आपको नियमित आधार पर नियुक्त किया गया तो आपको उपर्युक्त वेतनमान के पद में 3 वर्ष तक कॉरपोरेशन की सेवा में रहना होगा और इसके लिए आपको कॉरपोरेशन के पक्ष में एक बाँड निष्पादित करना होगा ।

23. In this connection all the Divisional Heads are requested to issue necessary instructions in their Division that the above-named suspended employees should not be allowed to enter in any Division/Section at the Head Office and contact any employee during office hours. However, they have been directed to report daily at 10.00 A.M. to the Manager (Admn.)

23. इस विषय में सभी प्रभागाध्यक्षों को सूचित किया जाता है कि वे अपने प्रभागों में आवश्यक अनुदेश जारी करें कि उपर्युक्त निलम्बित कर्मचारियों को कार्यालय समय में मुख्यालय के किसी प्रभाग/अनुभाग में प्रवेश तथा किसी कर्मचारी से सम्पर्क न करने दिया जाए। तथापि उनको निर्देश दिया गया है कि वे प्रतिदिन 10.00 बजे प्रशासन (प्रबन्धक) को रिपोर्ट करेंगे।

24 House Rent Allowance is payable to employees staying in villages situated within a radius of 8 kms from the periphery of municipal limits of a city at the rates admissible in that city provided there is no other municipal/ sub-urban or cantonment area within the 8 kms limit and the place of residence is dependent on the municipal city for its essential supplies like foodgrains, milk, vegetables, fuel etc.

24. किसी शहर की नगरपालिका परिधि से 8 कि.मी. की दूरी के भीतर स्थित गाँवों में रहने वाले कर्मचारियों का मकान किराया भत्ता उन दरों पर देय है जो उस शहर के लिए अनुमत्य है बशर्ते कि 8 कि.मी. की सीमा के भीतर कोई नगरपालिका/उपनगरीय छावनी क्षेत्र न हो और आवास का स्थान अनाज, दूध, सब्जियों, ईंधन आदि जैसी अनिवार्य वस्तुओं के लिए नगरपालिका अधीन शहर पर निर्भर हो।

25. In the event of seller's failure to deliver the goods by the specified date purchaser reserves the right to cancel this order or any part thereof. without prejudice to his other rights and may purchase the goods from alternate sources at the seller's risk and cost. Any loss, thus, incurred and/or difference in price will be on the selles account.

25. यदि विक्रेता निर्धारित तारीख तक माल प्रेषित नहीं करता है तो क्रेता को यह अधिकार होगा कि वह इस आदेश को या इसके किसी भाग को, उसके अन्य अधिकारों पर बिना कोई प्रतिकूल प्रभाव डाले, रद्द कर दे और वह माल विक्रेता को जोखिम और लागत पर, अन्य स्रोतों में खरीद ले। इस प्रकार उठाई गई कोई भी हानि और अथवा कीमत का अन्तर विक्रेता के जिम्मे पड़ेगा।

26. You will be on probation for a period of two years. The appointment may be terminated at any time without notice and without reasons being assigned during the period of probation. After expiry of the probation period your services may be terminated at any time by a months notice given by either side without assigning any reasons.

26. आप दो वर्ष परिवीक्षाधीन रहेंगे । परिवीक्षा की अवधि के दौरान यह नियुक्ति बिना नोटिस दिए तथा बिना कोई कारण बताए किसी

भी समय समाप्त की जा सकती है । परिवीक्षा की अवधि की समाप्ति पर आपकी नौकरी किसी भी एक पक्ष की ओर से एक मास का नोटिस देने पर बिना कोई कारण बताए किसी भी समय समाप्त की जा सकती है।

27. You shall undergo twelve months training course, which may be extended if necessary and which is to be conducted within the organisation and if necessary outside at institute (s) and establishments chosen by the Corporation. On satisfactory completion and on passing such departmental tests as may be prescribed, you will be placed in the scale of Rs..... against such post with such designation as may be considered appropriate by the management. On placement in the aforesaid scale, you will be required to serve this Corporation for a minimum period of three years which will be inclusive of the period of probation.

27. आपको बारह महीने का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा करना होगा, जिसे यदि जरूरी हुआ तो बढ़ाया जा सकता है। यह प्रशिक्षण संगठन के अन्दर आयोजित किया जाना है और यदि जरूरी हुआ तो कारपोरेशन द्वारा चुने गए बाहर के संस्थानों और स्थापनाओं में भी आयोजित किया जा सकता है। प्रशिक्षण सन्तोषजनक रूप से पूरा करने और ऐसी विभागीय परीक्षाओं को पास करने पर, जो निर्धारित की जाएँ आपको ऐसे पद और पदनाम से जो मैनेजमेन्ट द्वारा उपयुक्त समझा जाए, आपको ऐसे ..... रुपये के वेतनमान में रखा जायेगा। ऊपर बताए गए वेतनमान में नियुक्ति किए जाने पर, आपको कारपोरेशन में कम से कम तीन वर्ष कार्य करना होगा जिसमें परिवीक्षा अवधि भी शामिल होगी।

अन्य गद्यांशों का हिन्दी अनुवाद

(1) We the people of India, having solemnly resolved to constitute India into a Sovereign Socialist Secular Democratic Republic and to Secure to all its citizens: Justice, Social, Economic and political, liberty of thought, expression, belief, faith and worship, equality of status and of opportunity; and to promote among them all fraternity assuring the dignity of the individual and the Unity and integrity of the nation. In our Constitute Assembly. This Twenty Sixth day of November, 1949 do here by adopt, enact and give to ourselves this constitution.

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न सामाजिक निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता, सुनिश्चित कराने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए, दृढ़ संकल्प होकर अपनी संविधान सभा में 26 नवम्बर, 1949 के इस दिन एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मसमर्पित करते हैं।

(2) It shall be the duty of the Union to promote the spread of the Hindi language to develop it so that it may serve as a medium of expression for all the elements of the composite culture of India and to secure its enrichment by assimilating without interfering with its genius, the forms, style and expression used in Hindustani and in other languages of India specified in the Eighth Schedule, and by drawing, wherever necessary or desirable, for its vocabulory, primarily on Sanskrit and Secondarily on other languages.

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें, ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रवृत्ति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से, शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

(3) Everything almost depends upon first impressions; and these depend (besides person, which is not in our power) upon two things, dress and address, which everyone may command with proper attention. An attention to our own person implies a disrespect to others, and may often be traced no less to a want of good nature than good sense. The old maxim-desire to please, and you will infallibly please-explains the whole matter. I would not have you, from not knowing how to enter a room properly, stumble at the very threshold in the good graces of those on whom it is possible the fate of your future life may depend. Nothing creates a greater prejudice against anyone than awkwardness. A person, who is confused in manner and gesture seems to have done something wrong, or as if he was conscious of no one qualification to build a confidence in himself upon. On the other hand, openness freedom, self-possession, set others at ease with

you by showing that you are on good-terms with yourself. Grace in women gains the affections sooner, and secures them longer, than anything else it is an outward and visible sign of an inward harmony of soul as the want of it in men, is the greatest impediment in the career of gallantry and road to the female heart.

प्रत्येक कार्य प्रथम प्रभावों पर लगभग निर्भर होता है। और ये प्रभाव (हमारी शक्ति से परे व्यक्तित्व के अतिरिक्त) दो बातों पर निर्भर है। वेशभूषा परिधान और भाषा (प्रवचन) जिनका प्रत्येक व्यक्ति उचित ध्यान से काबू में कर सकता है। अपने व्यक्तित्व के प्रति बेपरवाही दूसरों का अनादर करना है और यह लापरवाही अच्छी सूझ-बूझ की अपेक्षा अच्छे स्वभाव की कमी से किसी प्रकार कम नहीं समझी जाती है। श्तुम प्रसन्न करने की इच्छा करो और तुम निश्चित रूप से प्रसन्न रहोगेश यह प्राचीन कहावत पूरे विषय की व्याख्या कर देती है। कमरे में उचित रूप से प्रवेश करना न जानने के कारण आपको मैं दन व्यक्तियों की दृष्टि में लड़खड़ाने नहीं दूँगा जिस पर आपका भावी जीवन निर्भर हो। ओछापन की अपेक्षा किसी अन्य के विरुद्ध कोई महान् पक्षपात नहीं करता है। चाल और चेष्टा में विक्षिप्त व्यक्ति कुछ गलती किया हुआ प्रतीत होता है अथवा अपने में विश्वास जमाने के लिए उसे गुण की परख नहीं है। दूसरी ओर उदारता, स्वतन्त्रता और जितेन्द्रियता दूसरों को तुम्हारे अनुकूल बनाती है और यह प्रदर्शित करती है कि तुम स्वयं भले हो। महिलाओं की सभ्यता शीघ्र ही प्रेम प्राप्त करती है और किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा अधिक समय तक उनकी रक्षा करती है। यह आत्मा का आन्तरिक सहयोग बाह्य और चिन्ह है। मानवों में इसकी कमी बहादुरी के जीवन में सबसे बड़ी रुकावट है तथा महिलाओं के हृदय तक पहुँचने के लिए मार्ग है।

(7) Our civilisation is unique in that it offers us the basis of a world- wide social order. This unification of the world is without parallel in the past. So meet the challenge of the new situation, we have to devise new means and not perpetuate inherited patterns of social and international behaviour. We are bewildered that our efforts to establish a world order on principles of equity and freedom through international organization have not been successful. Though we know that the world is one whether we like it or not, that inspite of political, national and racial divisions, the fortunes of every gone of us are linked to those of others even though we know it - we do not feet it in our bones. When we find that great nations are not ready to change their ways of dealing with others and persist in ways which are outmoded and dangerous, we are not only bewildered but alarmed. The world has been brought together too suddenly and this enforced intimacy has intensified the differences and increased the possibilities of friction. We are baffled by the problems which our age has thrown up, for advanced nations from whom we see leadership are failing us. They wrecked the league of nations and if we are not vigilant and if the pressure of public opinion does not restrain them, they are likely to wreck the United Nations.

हमारी सभ्यता इस बात में अनूठी है कि यह सम्पूर्ण संसार सम्बन्धी सामाजिक व्यवस्था का आधार हमको देती है । संसार की यह एकता भूतकाल में असमान है। नवीन परिस्थिति को चुनौती का सामना करने के लिए हमें नये साधन जुटाने हैं और सामाजिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार को, पैतृक साँचे को स्थिर नहीं करना है। हम परेशान हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठन (संस्था) के द्वारा समानता और स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों के आधार पर सम्पूर्ण संसार की व्यवस्था को स्थिर करने के लिए हमारे प्रयत्न सफल नहीं हुए हैं। यद्यपि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण विश्व एक है हम चाहें या न चाहें। राजनैतिक राष्ट्रीय और जातीय भेदों के होते हुए भी हममें से हर एक का भाग्य दूसरों के भाग्य से जड़ा हुआ है। यद्यपि इसे जानते हुए भी हमें नस-नस में इसकी अनुभूति नहीं होती है । जब हमें यह प्रतीत होता है कि बड़े-बड़े राष्ट्र दूसरों के साथ व्यवहार करने का ढंग बदलने के लिए उद्यत नहीं है और उन ढंगों पर जोर देते हैं जो भयंकर और समयानुसार नहीं है। हम परेशान ही नहीं बल्कि सचेत भी हैं। संसार शीघ्र ही एक साथ हो गया और विवश की जान - पहिचान ने भेदों को और फूट की सम्भावनाओं को अधिक बढ़ा दिया है। हम उन समस्याओं से परेशान हैं जिनको हमारे युग ने बढ़ावा दे दिया है, क्योंकि बड़े-बड़े राष्ट्र जिनको हम नेतृत्व के योग्य समझते हैं हमको असफल कर रहे हैं और उन्होंने लीग ऑफ नेशन को विनष्ट कर दिया।

यदि हम जागरूक और चेतन नहीं रहते हैं तथा जनता की राय का दबाव उनको नहीं रोकता है तो वे यूनाइटेड नेशन्स का भी सम्भवत: नाश कर देंगे ।

(8) Curiosity is the natural tendency of man and the enjoyment of pleasure of his instinctive desire. Both these tendencies are innate and inborn even in a diehard materialist. If they are not sublimated satisfactory, they become a cause of disbelief in the man on the one hand and produce in him sense of fear, disappointment and depression on the other. This may be called an aberrant state of man generally speaking, the man of today is more unsatisfied, more excited and more

distressed. This aberration causes many mental and organic diseases. If it is minutely observed, this aberration appears to be the root cause of nervous disorder of today. Both the diagnosis and treatment of this aberration are difficult. It is because of this that man's humanity has been over shadowed by the devilism in him and the irony of it is that the man, for his outward gratification, is engaged to change the very definition of moral and human values.

जिज्ञासा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और आनन्द प्राप्ति उसकी स्वाभाविक कामना। घोर से घोर भौतिकवादी मनुष्य में भी ये दोनों प्रवृत्तियाँ स्वाभाविक और जन्म-जात हैं। उनका सन्तोषजनक शमन न होने पर मनुष्य में एक ओर तो अनास्था उत्पन्न होती है और दूसरी और भय, निराशा और अवसाद । यह मानव की विकृत अवस्था कही जा सकती है। सामान्य रूप से, आज का मानव, अधिक अतृप्त, अधिक उद्विग्न और अधिक दुखी है। इस विकृति से अनेक मानसिक और शारीरिक रोग उत्पन्न होते हैं। सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो आज के स्नायुव्यतिक्रम का मूल कारण यह विकृति ही प्रतीत होती है। इस विकृति का निदान और उपचार दोनों ही कठिन है। इस प्रकार मानव का मानवत्व उसके दानवत्व से आच्छदित हो गया है और विडम्बना तो यह है कि मानव अपने बाह्य परितोष के लिए नैतिक और मानवीय मूल्यों की परिभाषा को ही बदलने में जुटा हुआ है।

ZONE TECH

13. प्रारूप लेखन

1. सरस्वती पुस्तक भंडार, भरतपुर की ओर से किताब महल, नई, सड़क, दिल्ली को एक व्यावसायिक पत्र लिखिए जिसमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' की पाँच प्रतियाँ भेजने का उल्लेख हो।

उत्तर.

सरस्वती पुस्तक भण्डार
भरतपुर

पत्र क्रमांक 2018/120
माया पुस्तक भण्डार
नई सड़क, चाँदनी चौक
दिल्ली

सरस्वती पुस्तक भण्डार
नया मोहल्ला लक्ष्मण चौक,
भरतपुर (राज.)

विषयः- 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की पाँच प्रतियाँ भेजने के क्रम में।

प्रिय महोदय,

आपसे निवेदन है कि पूर्व में प्राप्त सभी पुस्तके समाप्त हो गई अतः हिन्दी साहित्य का इतिहास रामचन्द्र शुक्ल की पाँच प्रतिया भेजने की कृपा करे। पुस्तक का मूल्य राशि का ड्राफ्ट साथ में संलग्न है।

भवदीय
सरस्वती पुस्तक भण्डार
भरतपुर

2. प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, नोखा की ओर से निदेशक, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर को संबोधित करते हुए एक कार्यालय पत्र प्रस्तुत कीजिए, जिसमें वार्षिक परीक्षाओं के सुचारु संचालन हेतु पाँच व्याख्याताओं को प्रतिनियुक्ति पर भेजने का उल्लेख हो।

उत्तर.

कार्यालय पत्र
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, नोखा
पत्र क्रमांकः- रा. म. वि./नोखा/ 2017-18/1130 दिनांक 14 मार्च 2018
प्रेषक
प्राचार्य,
नोखा

प्रेषित/सेवायें
निदेशक
कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर

विषयः- पाँच व्याख्याताओं की प्रतिनियुक्ति के क्रम में।

महोदय,

ZONE TECH

आपसे निवेदन है कि अप्रेल माह से वार्षिक परीक्षाएं प्रारम्भ होने वाली है तथा महाविद्यालय में व्याख्याताओं की कमी है। अत: परीक्षा सुचारू से कराने के लिए प्रतिनियुक्ति पर व्याख्याताओं की व्यवस्था करने की कृपा करे।

संलग्न:- 1. व्याख्याता वर्तमान में - 15
2. आवश्यकता - 10

भवदीय
हस्ताक्षर
प्राचार्य
रा. म. वि. नोखा

3. निदेशक, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर की ओर से, सभी प्राचार्यों के लिए, एक परिपत्र प्रस्तुत कीजिए, जिसमें वार्षिक परीक्षाओं की दृष्टि से सभी नियमित विद्यार्थियों की 80% उपस्थिति सुनिश्चित करने का उल्लेख हो।

उत्तर.

राजस्थान सरकार
कालेज शिक्षा
क्रमांक प. 9(1) कालेज (1)2018 जयपुर दिनांक 13 जुलाई 2018

परिपत्र

प्रेषित-
समस्त राजकीय महाविद्यालय राजस्थान।
समस्त अराजकीय महाविद्यालय राजस्थान।
विषय:- नियमित विद्यार्थियों की 80% उपस्थिति सुनिश्चित करने के क्रम में।

महोदय्

शिक्षा नीति के अनुसार नियमित अध्ययनरत छात्रों की उपस्थिति 80% होना आवश्यक है। अत उपस्थिति आवश्यक होने के क्रम में परिपत्र जारी किया जा रहा है। उक्त निर्णय अग्रिम आदेश तक प्रभावी रहेंगें।

आज्ञा से
निदेशक कालेज शिक्षा

4. जिला कलेक्टर, अजमेर की ओर से अधीक्षण अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, अजमेर की ग्रीष्मकाल में शहर की दूर-दराज की बस्तियों में समुचित जल-वितरण व्यवस्था हेतु एक कार्यालयी पत्र लिखए।

उत्तर- **कार्यालय पत्र**

अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, अजमेर
पत्र क्रमांक- जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, अजमेर
2025-2026/दिनांक 22/12/2025

प्रेषक
अधीक्षण अभियन्ता
अजमेर
प्रषित/सेवामें
निदेशक
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग
विषय-ग्रीष्मकाल में शहर की दुर-दराज बस्तियों में समुचित जल वितरण हेतु।
महोदय,

आपसे नम्र निवेदन है कि ग्रीष्मकाल में शहर की दुर-दराज बस्तियों में जल की कमी आ जाती है इसलिए इस व्यवस्था को सुचारू रखने-रखाने हेतु उचित व्यवस्था करने की कृपा करे।

भवदीय
हस्ताक्षर
जिला कलेक्टर अजमेर

5. गर्ग पुस्तक केन्द्र, जोधपुर की ओर से नवजीवन प्रकाशन, बीकानेर को एक व्यावसायिक पत्र लिखिए, जिसमें उनके यहाँ से प्रकाशित पुस्तकों की सूची तथा प्रकाशनों पर दी जाने वाली छूट की सूचना माँगी गयी हो।

उत्तर- गर्ग पुस्तक केन्द्र
जोधपुर

पत्र क्रमांक 2024/122

शर्मा पुस्तक केन्द्र
जयपुर रोड, बीकानेर

गर्ग पुस्तक केन्द्र
उम्मेद भवन
जोधपुर (राजस्थान)

विषय- प्रकाशित पुस्तकों की सूची तथा प्रकाशनों पर दी जाने वाली छूट की सूचना देने के क्रम में।

महोदय,

अपसे निवेदन है कि पूर्व में प्राप्त सभी दरे व सूची में परिवर्तन किया गया है। अत: आप पुस्तकों की सूची तथा प्रकाशनों पर दी जाने वाली छूट की सूचना देने की कृपा करें।

भवदीय
गर्ग पुस्तक केन्द्र
जोधपुर

6. शासन सचिव, वित्त विभाग, राजस्थान सरकार की ओर से राजकीय व्यय में मितव्ययता अपनाने हेतु समस्त विभागों के लिए एक परिपत्र जारी कीजिए।

उत्तर- कार्यालय पत्र

शासन सचिव
वित्त विभाग
राजस्थान सरकार

विषय-राजकीय व्यय में मितव्ययता अपनाने हेतु

महोदय,

नम्र निवेदन है कि वित्त विभाग राजस्थान सरकार की ओर से राजकीय मितव्ययता को सभी विभाग अपनाने की कृपा करे।

भवदीय
हस्ताक्षर
वित्त विभाग राजस्थान सरकार

7. राजकीय महाविद्यालय, दौसा के प्राचार्य की ओर से 'वार्षिक पत्रिका' के मुद्रण हेतु एक निविदा आमंत्रण सूचना प्रस्तुत कीजिए।

कार्यालय
राजकीय महाविद्यालय,
दौसा

क्रमांक रा. म. वि./केकड़ी/2018-19/2012 दिनांक:- 20 जून 2018

निविदा सूचना संख्या 05, वर्ष 2017-18

प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय, दौसा की ओर से निम्न हस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में निम्न पुस्तिक मुद्रण की आपूर्ति हेतु मोहर बन्द निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। इस हेतु प्रपत्र दिनांक 10 जुलाई 2018 को 3.00 बजे तक कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते है और दिनांक 11 जुलाई 2018 को 3.00 बजे तक बंद लिफाफे में कार्यालय में जमा करवाये जा सकते है। दिनांक 13 जुलाई 2018 को

4 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जायेगी। पुस्तिका के बारे में पूर्ण विवरण किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय में निविदा शुल्क जमा करा कर कार्यालय से प्राप्त की जात सकती है।

1 पुस्तिका मुद्रण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि लाखों में	निविदा आपूर्ति	शुल्क अवधि
4.00 लाख	6000 रु.	200	2 माह	

आवश्यक शर्तें

सशर्त निविदाए मान्य नहीं होगी

हस्ताक्षर
प्राचार्य
रा. म. वि. दौसा

ZONE TECH

14. निबन्ध

निबन्ध क्या है ?

साहित्य; 'गद्य' एवं 'पद्य' दो रूपों में लिखा जाता है। पद्य में छन्द, लय, अलंकार, रसविधान इत्यादि का ध्यान रखना पड़ता है, जबकि गद्य, साहित्य का वह रूप है जिसमें इन नियमों के आधार पर लेखन की बाध्यता नहीं होती, बल्कि इसमें तथ्यों एवं विचारों को बोल-चाल की भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। निबन्ध इसी गद्य साहित्य की एक विधा है। कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रिपोर्ट इत्यादि गद्य के अन्तर्गत आने वाली लेखन की अन्य विधाएँ हैं, जिनमें कथावस्तु की प्रधानता होती है जबकि निबन्ध में कथावस्तु की नहीं बल्कि विषयवस्तु की भी प्रधानता होती है।

निबन्ध की परिभाषा

निबन्ध 'नि' और 'बन्ध' दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका तात्पर्य है - नियमों से बँधी हुई गद्य रचना या लेख। हिन्दी के शब्द 'निबन्ध' को अंग्रेजी के 'Essay' का पर्याय माना जाता है। अंग्रेजी के 'Essay' शब्द का अर्थ होता है विषय-विशेष पर एक छोटा लेख, किन्तु यह जरूरी नहीं कि किसी विषय पर लिखा गया कोई निबन्ध छोटा ही हो। यह अति विस्तृत भी हो सकता है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि ऐसी विस्तृत गद्य रचना जो सारगर्भित न हो एवं जिसमें विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रकट न किया गया हो तथा जो बीच-बीच में अपनी विषयवस्तु से भटक गई हो, उसे निबन्ध की संज्ञा नहीं दी जा सकती। एक सामान्य निबन्ध में शब्दों की संख्या 500 से 1000 तक हो सकती है। 1000 से 3000 शब्दों वाले निबन्ध 'दीर्घ निबन्ध' कहलाते हैं।

कुछ विद्वानों ने निबन्ध शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है - 'सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त रचना निबन्ध है।' जबकि उनकी यह व्याख्या प्रत्येक स्थिति में सार्थक नहीं कही जा सकती। यह विचारों की स्वतन्त्रता तक तो ठीक है, किन्तु इन विचारों की प्रस्तुति यदि क्रमबद्ध व प्रभावशाली ढंग से न की गई हो, तो निबन्ध पाठक पर अपना पूर्ण प्रभाव नहीं डाल पाता। अत: सार्थकता एवं प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से गद्य के रूप में विचारों की क्रमबद्ध एवं सार्थक प्रस्तुति को ही निबन्ध की संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार किसी भी विषय पर लिखी गई वह रचना, जिसमें विषयवस्तु से सम्बन्धित विचारों को क्रमबद्ध रूप में इस तरह प्रकट किया गया हो, जिससे उस विषयवस्तु की विस्तृत अथवा सारगर्भित जानकारी मिलती हो, निबन्ध कहलाती है।

निबन्ध लेखन का महत्त्व

मनुष्य अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा के मौखिक अथवा लिखित रूप का सहारा लेता है। विचारों को बोलकर व्यक्त करने को मौखिक अभिव्यक्ति कौशल एवं इन्हें लिखकर व्यक्त करने को लेखन-कौशल कहा जाता है। इन्हीं अभिव्यक्ति कौशलों से मनुष्य के व्यक्तित्व की परीक्षा होती है। यह आवश्यक नहीं कि जो व्यक्ति मौखिक अभिव्यक्ति कौशल में माहिर हो, जैसा कि एक वक्ता होता है, वह किसी लेखक की तरह लेखन-कौशल में भी माहिर हो। इसी तरह, एक अच्छा लेखक अच्छा वक्ता हो, यह भी आवश्यक नहीं, किन्तु सामान्य रूप से एक शिक्षित मनुष्य से यह आशा अवश्य की जा सकती है कि वह भले ही एक अच्छा वक्ता एवं लेखक न हो, पर मौखिक ही नहीं, लिखित रूप में भी अपने विचारों को भली-भाँति अवश्य अभिव्यक्त कर सकेगा।

किसी व्यक्ति के लेखन कौशल की जाँच के लिए सामान्यत: पत्र-लेखन एवं निबन्ध लेखन का ही सहारा लिया जाता है। पत्र लेखन से किसी विषय पर व्यक्ति की सोच की पूरी जाँच सम्भव नहीं है, जबकि निबन्ध लेखन द्वारा न केवल व्यक्ति के ज्ञान, अनुभव, सोच एवं भावना का पता लगाया जाता है, बल्कि साथ-ही-साथ उसके लेखन कौशल की परीक्षा भी हो जाती है। इस तरह निबन्ध के माध्यम से काफी हद तक किसी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जा सकता है। इसलिए निबन्ध को व्यक्ति की सोच व व्यक्तित्व का आईना भी कहा जाता है। इन सबके अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ-साथ अकादमिक परीक्षाओं में भी बेहतर सफलता के दृष्टिकोण से निबन्ध -लेखन अति महत्त्वपूर्ण है। इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति में अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप में प्रकट करने की क्षमता विकसित होती है।

निबन्ध के अंग

सामान्यत: निबन्ध के तीन भाग या अंग होते हैं-

1. **परिचय** इस भाग में निबन्ध की विषयवस्तु का परिचय दिया जाता है, जिससे पाठक को निबन्ध के अगले भागों को समझने में आसानी होती है।

2. **मध्य भाग** इसे निबन्ध का शरीर अथवा मूल भाग कहते हैं। विषयवस्तु का विस्तृत वर्णन इसी भाग में किया जाता है। अत: इसे विषय प्रसार भी कहा जाता है। यह निबन्ध का सर्वाधिक विस्तृत भाग होता है।
3. **उपसंहार** यह निबन्ध का अन्तिम भाग होता है, जिसमें इसका सार होता है।

निबन्ध के प्रकार

रूप, शैली एवं विषयवस्तु के आधार पर निबन्ध कई प्रकार के होते हैं-

वर्णनात्मक निबन्ध इसमें विषयवस्तु का सामान्य वर्णन होता है। इसी प्रकार के निबन्ध लेखन के दृष्टिकोण से सरल होते हैं। पर्व-त्योहार, स्थान, व्यक्ति विशेष, ऋतु - विशेष इत्यादि पर आधारित निबन्ध इसी श्रेणी में आते हैं।

विश्लेषणात्मक निबन्ध ऐसे निबन्धों में विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक विवरण होता है। इन्हें विवरणात्मक निबन्ध भी कहा जाता है। इनमें तथ्यों के आधार पर विश्लेषण के माध्यम से ज्ञानवर्द्धन पर जोर दिया जाता है। अर्थव्यवस्था एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध जैसे विषयों पर आधारित निबन्ध इसी श्रेणी में आते हैं।

विचारात्मक निबन्ध ऐसे निबन्धों में विषयवस्तु के पक्ष-विपक्ष, नकारात्मक - सकारात्मक, लाभ-हानि इत्यादि का वर्णन होता है। आतंकवाद, नक्सलवाद, गरीबी एवं अन्य विवादास्पद विषयों पर आधारित निबन्ध इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। किसी साहित्यिक रचना पर समीक्षात्मक निबन्ध भी विचारात्मक निबन्ध के ही अन्तर्गत आते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी रचना की समीक्षा को समीक्षात्मक निबन्ध की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

भावनात्मक निबन्ध किसी सूक्ति, कथन, विचार आदि विषयवस्तुओं पर लिखे गए निबन्ध भावनात्मक निबन्ध के अन्तर्गत आते हैं। उदाहरणस्वरूप 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं', 'परहित सरसि धरम नहीं भाई' अथवा ऐसी अन्य सूक्तियों पर लिखे गए निबन्ध। इन्हें चिन्तन प्रधान निबन्ध भी कहा जाता है, क्योंकि लेखक अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर विषयवस्तु के बारे में चिन्तन कर अपने विचारों को निबन्ध का रूप देता है। 'यदि आप प्रधानमन्त्री होते तो क्या करते' जैसे कल्पना प्रधान निबन्ध भी भावनात्मक निबन्ध की श्रेणी में आते हैं।

ललित निबन्ध कुछ निबन्ध भाषा-शैली, वाक्य-रचना, अलंकार, मुहावरे इत्यादि के प्रयोग द्वारा इस तरह लिखे जाते हैं कि इनकी पठनीयता एवं प्रभावोत्पादकता ही नहीं, बल्कि भाषा-सौन्दर्य भी पाठक को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त होते हैं, ऐसे निबन्ध को ललित निबन्ध कहा जाता है। वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, विचारात्मक एवं भावनात्मक इन सभी प्रकार के निबन्धों को ललित निबन्ध के रूप में लिखा जा सकता है, यदि लेखक का भाषा एवं रचनात्मक लेखन पर पर्याप्त अधिकार हो।

सुसंगठित निबन्ध

सुसंगठित निबन्ध की रचना कैसे करें?

निबन्ध-लेखन एक कला है। किसी अन्य कला में प्रवीण होने के लिए जिस तरह निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता होती है, ठीक उसी तरह विभिन्न विषयों पर अपने विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्ति के निरन्तर अभ्यास द्वारा ही कोई अच्छा निबन्धकार बन सकता है।

'सुसंगठित' निबन्ध की विशेषताएँ

किसी निबन्ध को सुसंगठित निबन्ध तब तक नहीं कहा जा सकता, जब तक कि वह प्रभावोत्पादकता एवं सार्थकता की शर्तों को भली-भाँति पूरा न करता हो। इस दृष्टिकोण से एक श्रेष्ठ निबन्ध की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं।

- **व्याकरण-सम्मत स्पष्ट भाषा** सुसंगठित निबन्ध की भाषा व्याकरण-सम्मत एवं स्पष्ट तथा वाक्य-रचना गठन की दृष्टि से शुद्ध होनी चाहिए।
- **विषयानुकूल भाषा** निबन्ध की भाषा व्याकरण-सम्मत एवं स्पष्ट तो हो किन्तु वह विषयानुकूल न हों तो भी निबन्ध पाठक पर अच्छा प्रभाव नहीं डाल पाता ।
- **विचारों में क्रमबद्धता** एक 'सुसंगठित' निबन्ध में विचारों में क्रमबद्धता होती है और यही क्रमबद्धता किसी भी निबन्ध को प्रभावी बनाती है।
- **विचारों में सम्बद्धता** निबन्ध में विचारों में क्रमबद्धता के साथ-साथ उनमें सम्बद्धता भी आवश्यक है। विचारों का बिखराव निबन्ध की महत्ता को कम करता है।
- **विषय-केन्द्रित** निबन्ध को हर हाल में विषय-केन्द्रित होना चाहिए। विषय से भटकाव किसी भी निबन्ध का सबसे बड़ा दोष माना जाता है।
- **सारगर्भित निबन्ध** जितना सारगर्भित होगा, पाठक पर उसका प्रभाव उतना ही अधिक पड़ेगा। विषय के अनावश्यक विस्तार

से निबन्ध न केवल बोझिल हो जाता है, बल्कि उसकी पठनीयता भी कम हो जाती है।

- **उद्धरणों, काव्य-पंक्तियों तथा सूक्तियों का प्रयोग** निबन्ध में प्रयुक्त विचारों के समर्थन में कवियों, लेखकों एवं महापुरुषों के कथनों, उद्धरणों एवं काव्य-पंक्तियों के साथ-साथ सूक्तियों के प्रयोग से न सिर्फ इसकी सटीकता, बल्कि इसकी पठनीयता भी बढ़ती है।

'सुसंगठित' निबन्ध कैसे लिखें?

- निबन्ध-लेखन यदि आसान नहीं है, तो कठिन भी नहीं है। थोड़े से अतिरिक्त अभ्यास से इसमें कुशलता प्राप्त की जा सकती है। अपने विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकने वाला कोई भी व्यक्ति निम्नलिखित बातों का पालन कर आसानी से किसी भी विषय पर निबन्ध लिख सकने में सक्षम हो सकता है।
- किसी विषय पर भी निबन्ध लिखने के लिए सबसे पहले अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर उसके बारे में सोचें। उसके बाद उस विषयवस्तु से सम्बन्धित मस्तिष्क में आए विचारों को सही क्रम दें।
- निबन्ध का प्रारम्भ हमेशा विषयवस्तु के परिचय से करें।
- परिचय के बाद निबन्ध के मध्य भाग को लिखें, इसमें विषयवस्तु को अनावश्यक विस्तार न दें। उपसंहार में सारांश के साथ निबन्ध को समाप्त करें।

निबन्ध लेखन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें.....

एक कुशल निबन्ध-लेखक को निबन्ध लिखते समय निम्नलिखित बातें याद रखनी चाहिए

- निबन्ध उसी विषय पर लिखना अधिक अच्छा होता है, जिसकी अच्छी जानकारी हो।
- किसी निबन्ध का प्रारम्भ विषयवस्तु के परिचय से करना चाहिए। उसके बाद उसका आवश्यकतानुसार वर्णन कर अन्त में उपसंहार लिखना चाहिए।
- वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्दों का प्रयोग करना चाहिए तथा इनकी अनावश्यक आवृत्ति से बचना चाहिए।
- वाक्य-विन्यास ठीक रखते हुए विराम-चिन्हों का उचित प्रयोग करना चाहिए।
- व्याकरण-सम्मत स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- निबन्ध की भाषा-शैली सीधी, सरल, सुबोध तथा विषय के अनुकूल रखनी चाहिए। लम्बे-लम्बे क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से यथासम्भव बचना चाहिए, क्योंकि इनसे भाषा प्रवाह में बाधा पहुँचती है और निबन्ध अस्वाभाविक लगने लगता है।
- निबन्ध का आकार न बहुत छोटा और न ही बहुत लम्बा होना चाहिए।
- सभी विचारों को पूर्णता के साथ स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहिए ।
- मध्य-भाग लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि एक अनुच्छेद में एक ही भाव हो । विभिन्न अनुच्छेदों को भी विचारों की भाँति सही क्रम में प्रस्तुत किया जाना चाहिए ।
- विषयवस्तु का वास्तविक प्रसार मध्य भाग में ही करना चाहिए।
- निबन्ध का सारांश उपसंहार में ही लिखना चाहिए तथा इसमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अन्तिम वाक्य के साथ निबन्ध की पूर्णता का आभास हो ।
- विचारों में क्रमबद्धता रखनी चाहिए। जैसे किसी महापुरुष पर निबन्ध को यदि उनकी मृत्यु से शुरू किया जाए, तो इसे कभी अच्छा नहीं कहा जा सकता। उनका परिचय, उनका प्रारम्भिक जीवन, उनके कार्य, उनका योगदान इत्यादि के वर्णन के बाद यदि हम उनकी मृत्यु के बारे में बताएँ तो इसमें विचारों में क्रमबद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। विचारों में क्रमबद्धता लाने के लिए वाक्यों का एक-दूसरे से जुड़ा होना भी आवश्यक है, इससे विषयवस्तु का वर्णन अधिक स्पष्ट हो जाता है।
- क्रमबद्धता के साथ-साथ विचारों में सम्बद्धता का भी ध्यान रखना अनिवार्य है।
- विषयान्तर निबन्ध का सबसे बड़ा दोष माना जाता है। अत: निबन्ध लिखते समय सदा विषय-केन्द्रित रहना चाहिए।
- कोई निबन्ध जितना सारगर्भित हो पाठक पर उसका प्रभाव उतना ही अधिक पड़ता है। विषय के अनावश्यक विस्तार से निबन्ध न केवल बोझिल हो जाता है, बल्कि पाठक की रुचि भी इसमें कम हो जाती है।

1. एक देश, एक चुनाव

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने कई मौकों पर 'एक देश, एक चुनाव' की आवश्यकता पर बात की है, जिसका उल्लेख पहली बार उनके वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों के घोषणा-पत्र में भी था। एक देश, एक चुनाव की बात करने से आशय है कि लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनावों को एक ही समय पर आयोजित किया जाए।

भारत सरकार ने 2 सितम्बर, 2023 को एक देश, एक चुनाव पर एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया, जिसके अध्यक्ष पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द हैं। इस समिति के सदस्य गुलाम नबी आजाद, संजय कोठारी, अमित शाह, एन.के. सिंह, सुभाष कश्यप और हरीश साल्वे हैं।

इस समिति ने 'एक देश, एक चुनाव' की सम्भावनाओं को खोजने के लिए रिपोर्ट तैयार करके राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को सौंपी है। इस पैनल ने 18,626 पेजों में अपनी सिफारिशें प्रस्तुत की हैं। अगर सरकार इन सिफारिशों को मानती है, तो वर्ष 2029 में पहली बार लोकसभा और विधानसभा के चुनाव साथ-साथ कराए जा सकते हैं। समिति ने कहा है कि पहले चरण में लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एकसाथ कराए जा सकते हैं। इसके बाद 100 दिनों के अन्दर, दूसरे चरण में स्थानीय निकायों के चुनाव कराए जा सकते हैं।

सरल शब्दों में एक देश, एक चुनाव का अर्थ है कि सभी भारतीय मतदाता, सभी स्तरों के चुनावों में अपने प्रतिनिधियों को चुनने के लिए यदि एक ही समय में मतदान नहीं कर सकते, तो एक वर्ष की समयावधि में मतदान करेंगे।

एक समाचार चैनल के अनुसार, समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा, "समिति की सर्वसम्मत राय है कि एकसाथ चुनाव होने चाहिए।" समिति ने कई संवैधानिक संशोधनों की सिफारिश की है, जिनमें से अधिकांश के लिए राज्य के अनुसमर्थन की आवश्यकता नहीं होगी। समिति ने अपनी सिफारिश में कहा कि भारत के राष्ट्रपति, लोकसभा और विधानसभा चुनाव एकसाथ कराने के उद्देश्य से महासभा के बाद लोकसभा की पहली बैठक की तारीख की अधिसूचना जारी कर सकते हैं।

समिति ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों के साथ-साथ पंचायतों और नगर पालिकाओं में चुनावों के लिए अनुच्छेद-324 (ए) लागू करने की भी सिफारिश की। समिति ने कहा कि संसद यह सुनिश्चित करने के लिए एक कानून पारित कर सकती है कि नगरपालिका और पंचायत चुनाव आम चुनावों के साथ ही हों। समिति ने रिपोर्ट में यह कहा है कि एकसाथ चुनाव कराने से विकास प्रक्रिया और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा मिलेगा, लोकतान्त्रिक परम्परा गहरी होगी और भारत की आकांक्षाओं को साकार करने में मदद मिलेगी। रिपोर्ट में लोकसभा, विधानसभा और स्थानीय निकाय चुनाव कराने के लिए एकल यानी साझा मतदाता सूची तैयार करने की बात कही गई है। इस विचार को समझाने के लिए समिति ने हितधारकों और विशेषज्ञों के साथ व्यापक परामर्श और 191 दिनों के शोध कार्य के बाद रिपोर्ट को तैयार किया।

ओपी रावत ने बताया कि चुनाव आयोग ने केन्द्र सरकार को दोनों चुनाव साथ कराने के लिए संविधान के 5 अनुच्छेदों में संशोधन करने की सलाह दी है। इसके साथ ही उन्होंने निर्वाचन आयोग के द्वारा सुझाए गए विश्वास प्रस्ताव के नियमों में भी बदलाव की बात की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने बताया कि एक देश, एक चुनाव के लिए करीब 15 लाख नए ईवीएम (EVMs) और वीवीपैट (VVPAT) की आवश्यकता होगी।

एक देश, एक चुनाव के लाभ

- **सामाजिक एकजुटता** 'एक देश, एक चुनाव' की प्रक्रिया देश की राजनीतिक एकता और सामाजिक बढ़ावा देती है। मतदाता को एकसाथ चुनाव के लिए मतदान करने का अवसर मिलता है, जिससे वे अपने राजनीतिक अधिकार का सही उपयोग कर सकते हैं।
- **कम चुनाव लागत** एकसाथ चुनाव कराने से चुनाव आयोजन की लागत कम होती है, क्योंकि विभिन्न चुनावों की अलग-अलग प्रणालियों को संचालित करने की आवश्यकता नहीं होती।
- **समय की बचत** अलग-अलग चुनावों के आयोजन के लिए समय की बचत होती है, जिससे सरकार और राजनीतिक पार्टियाँ अधिक समय और उनकी ऊर्जा को विकास कार्यों में लगा सकती हैं।
- **राजनीतिक स्थिरता** एकसाथ चुनाव कराने से राजनीतिक स्थिरता बढ़ती है, क्योंकि नियमित अन्तरालों पर होने वाले चुनावों की तुलना में, उन्हें ज्यादा नियमितता से आयोजित किया जाता है।

हालाँकि, इस उपाय के लाभों के साथ-साथ इसकी कई चुनौतियाँ भी हैं; जैसे- संवैधानिक संशोधन की आवश्यकता, राज्यों के बीच के विवादों का समाधान और चुनाव प्रक्रिया की संगठनशीलता। इन सभी मुद्दों का समाधान करने के लिए ध्यानपूर्वक योजना बनानी और समाधान खोजना आवश्यक होगा।

केन्द्र सरकार श्एक देश, एक चुनावश के पक्ष में हो सकती है, लेकिन इसके विरोध में भी कई मजबूत तर्क हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं

- **राष्ट्रीय-क्षेत्रीय पार्टियों में मतभेद** विरोधी दल कहता है कि एक देश, एक चुनाव की प्रक्रिया से राष्ट्रीय पार्टियों की लाभ हो सकता है, जबकि क्षेत्रीय पार्टियों को नुकसान हो सकता है। यह स्थिति राज्य की स्वतन्त्रता को कम कर सकती है और राज्यों के हित में असमानता पैदा कर सकती है।
- **चुनाव नतीजों में देरी** एक देश, एक चुनाव की प्रक्रिया में चुनाव नतीजों में देरी हो सकती है, जो राजनीतिक अस्थिरता और सार्वजनिक विश्वास में कमी ला सकती है।

- **संवैधानिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ** एक देश, एक चुनाव को लागू करने के लिए संवैधानिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ होंगी; जैसे- संविधान में संशोधन की आवश्यकता और राज्यों के बीच विवादों का समाधान ।

यद्यपि एक देश, एक चुनाव के पक्ष में भी तर्क हैं, लेकिन इस प्रस्ताव के पीछे की भावना लोकतन्त्र को मजबूत करना है, जिससे राजनीतिक प्रक्रिया को अधिक स्वायत्तता, स्थिरता और निष्पक्षता मिल सके। इस प्रस्ताव के लागू होने से पहले सभी सम्भावित प्रभावों को ध्यान में रखकर सरकार को योजना बनानी होगी, जिससे इसका सांविधानिक, संरचनात्मक और राजनीतिक प्रभाव ध्यान में रखा जा सके।

2. समान नागरिक संहिता

भारतीय संविधान के भाग-4 (राज्य के नीति-निदेशक तत्त्व) के अन्तर्गत अनुच्छेद-44 के अनुसार, भारत के समस्त नागरिकों के लिए एकसमान नागरिक संहिता का प्रावधान है। इसका व्यावहारिक अर्थ है-'एक समान निष्पक्ष कानून।' भारत में रहने वाले प्रत्येक नागरिक के लिए एकसमान धर्मनिरपेक्ष कानून होना चाहिए। संविधान के संस्थापकों ने राज्य के नीति-निदेशक तत्त्व के माध्यम से इसको लागू करने की जिम्मेदारी बाद की सरकारों को हस्तान्तरित कर दी थी। समान नागरिक संहिता सम्पूर्ण देश के लिए एक समान कानून के साथ ही सभी धार्मिक समुदायों के लिए व्यक्तिगत कानून, सम्पत्ति सम्बन्धी कानून और विवाह, तलाक तथा गोद लेने से सम्बन्धित कानूनों में एकरूपता प्रदान करने का प्रावधान करती है।

भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है। यहाँ अनेक जातियाँ, धार्मिक सम्प्रदाय, संस्कृतियाँ एवं विभिन्न भाषायी समुदाय कई सौ वर्षों से रहते आए हैं। नागरिकता की दृष्टि से भी यहाँ के सभी नागरिक चाहे वे किसी भी जाति व धर्म के हों, संविधान उनमें कोई विभेद नहीं करता है। यहाँ सभी नागरिकों को एकसमान अधिकार प्राप्त है तथा उन्हें विधि के समक्ष एकसमान माना गया है। इसी प्रकार उन्हें आजीविका इत्यादि के लिए समान अवसर उपलब्ध कराए गए हैं। भारतीय दण्ड संहिता में विभिन्न प्रकार के अपराध एवं उनके लिए दण्ड की व्यवस्था है। यह संहिता किसी व्यक्ति विशेष को उसके धर्म, जाति अथवा सम्प्रदाय के आधार पर कोई छूट प्रदान नहीं करती है।

समान नागरिक संहिता की आवश्यकता क्यों?

विविधता में एकता के अनेक उदाहरणों के बावजूद अब भी हमारे देश में विभिन्न जातियों, धर्मों एवं सम्प्रदायों के लोग सम्पत्ति के स्वामित्व, उत्तराधिकार, नाबालिगों के संरक्षकत्व, बच्चों को गोद लेने, विवाह, तलाक आदि अनेक सामाजिक मामलों में अपने विशिष्ट कानूनों एवं परम्पराओं को ही मानते आ रहे हैं। इस वैविध्यपूर्ण स्थिति को समाप्त करने तथा सभी प्रकार के मामलों को एक प्रकार के कानून में आच्छादित करने के लिए समान नागरिक संहिता की माँग बहुत समय से की जा रही है। समान नागरिक संहिता की अवधारणा है कि इससे सभी के लिए कानून में एक समानता से राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी। देश में प्रत्येक भारतीय पर एकसमान कानून लागू होने से देश की राजनीति में भी सुधार होगा।

संवैधानिक स्थिति

संविधान के निर्माण के समय भारत के राज्य क्षेत्र की वैविध्यपूर्ण स्थिति पर विशेष ध्यान देते हुए संविधान में कई व्यवस्थाएँ की गई थीं। इसी को ध्यान में रखते हुए संविधान के अनुच्छेद-14 से 18 में समानता के मूल अधिकारों को प्रत्याभूत किया गया है। इन अनुच्छेदों में यह भावना निहित है कि राज्य किसी व्यक्ति के साथ धर्म, मूलवंश, लिंग, जाति तथा निवास के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा। इतना ही नहीं भारत में निवास करने वाले धार्मिक तथा भाषायी अल्पसंख्यकों को भी अपने धर्म, भाषा, लिपि एवं संस्कृति के सम्बन्ध में अनुच्छेद-25 से 28 में कई अधिकार दिए गए हैं। संविधान में समानता तथा धार्मिक एवं भाषायी स्वतन्त्रता के अधिकार प्रत्याभूत करने के बावजूद यह अनुभव किया गया था कि भारत के राज्य क्षेत्र के निवासियों के लिए एकसमान कानून हो, तो यह भारत की एकता एवं अखण्डता के लिए और भी उत्तम होगा।

समान नागरिक संहिता के पक्षधर सदस्यों ने इन आशंकाओं को निराधार मानते हुए इसे अमान्य कर दिया गया। पहले आधार के सन्दर्भ में कहा गया कि समान नागरिक संहिता किसी भी तरीके से अनुच्छेद-25 द्वारा प्रत्याभूत धार्मिक स्वतन्त्रता के मूल अधिकार का उल्लंघन नहीं करती, क्योंकि अनुच्छेद-25 का खण्ड (2) विशेष रूप से खण्ड (1) में अन्तर्विष्ट धार्मिक स्वतन्त्रता की प्रत्याभूति से धार्मिक प्रथाओं से सम्बन्धित धर्मनिरपेक्ष क्रियाकलापों को बचाता है।

दूसरे आधार के सम्बन्ध में यह कहा गया कि यह आधार तार्किक नहीं है, क्योंकि धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए जैसा कानून भारत में प्रचलित है, वैसा उसी धर्म विशेष के लोगों के लिए विश्व के किसी देश में नहीं है। संविधान सभा में यह भी तर्क दिया गया था कि भारत में अधिकतर धार्मिक अल्पसंख्यक वे हैं, जो हिन्दू धर्म से सम्परिवर्तित हुए हैं। ऐसे धार्मिक अल्पसंख्यक हिन्दू धर्म की परम्पराओं को ही मानते हैं। ऐसी स्थिति में यह समीचीन होगा कि भारत के राज्य क्षेत्र में निवास करने वाले सभी नागरिकों के लिए एकसमान कानून लागू हो।

समान नागरिक संहिता के पक्ष में तर्क

- संविधान निर्माण के बाद से ही समान नागरिक संहिता को लागू करने की माँग उठती रही है, लेकिन जितनी बार माँग उठी उतनी ही बार इसका विरोध भी हुआ। समान नागरिक संहिता के समर्थकों का यह मानना है कि भारतीय संविधान - में नागरिकों को कुछ मूलभूत अधिकार दिए गए हैं।
- अनुच्छेद-14 के तहत समानता का अधिकार अनुच्छेद में धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग के आधार पर किसी भी नागरिक से भेदभाव की मनाही और अनुच्छेद 21 के अनुसार, जीवन और निजता के संरक्षण का अधिकार लोगों को प्राप्त है।
- महिलाओं के सम्बन्ध में इन अधिकारों का लगातार हनन होता रहा है। चाहे शादी-विवाह हो या महिलाओं की आजादी का प्रश्न हो, उनके मन्दिरों में प्रवेश की बात हो, आज कई मामलों में उनके साथ भेदभाव किया जाता है।
- समान नागरिक संहिता के लागू होने से देश से लैंगिग भेद-भाव को समाप्त करने में मदद मिलेगी, साथ ही राष्ट्रीय अखण्डता को भी बढ़ावा मिलेगा।

समान नागरिक संहिता विपक्ष में तर्क

दूसरी तरफ देश के अल्पसंख्यक समुदाय विशेषकर मुस्लिम समाज द्वारा समान नागरिक संहिता का प्रबल विरोध किया जा रहा है, जिसके प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं

- संविधान के अनुच्छेद-25 में सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार दिया गया है, इसलिए सभी पर समान कानून थोपना, संविधान की मूल भावना को ठेस पहुँचाने जैसा होगा ।
- मुस्लिम समुदाय के अनुसार, उनके निजी कानून धार्मिक आस्था पर आधारित है, इसलिए समान नागरिक संहिता लागू कर उनके धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करना गलत होगा ।
- मुस्लिम विद्वानों का मानना है कि शरिया कानून 1400 वर्ष पुराना है, क्योंकि यह कानून कुरान और पैगम्बर साहब की शिक्षाओं पर आधारित है। अत: इसमें हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।
- मुस्लिम समुदाय को चिन्ता यह भी है कि इस कानून के लागू होने से उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता छिन जाएगी।

समान नागरिक संहिता के समक्ष चुनौतियाँ

वस्तुत: समान नागरिक संहिता को लागू करने की पुरजोर माँग के बावजूद भी इसे अब तक लागू नहीं किया जा सका है। ऐसे कई अवसर आए हैं, जब माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी समान नागरिक संहिता लागू न करने पर आक्रोश प्रकट किया है। वर्ष 1985 में शाहबानो प्रकरण और वर्ष 1995 में सरला मुद्गल प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समान नागरिक संहिता पर टिप्पणी से भी इस मुद्दे ने जोर पकड़ा था, जबकि तीन तलाक पर सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले से इस मुद्दे को हवा मिली, लेकिन अब तक इस मसले पर कोई ठोस पहल नहीं की जा सकी है। वास्तव में, भारत का बहुल संस्कृति का देश होना भी इस रास्ते में एक बड़ी चुनौती है।

वर्ष 1948 में, जब हिन्दू कोड बिल संविधान सभा में लाया गया, तब सम्पूर्ण देश में इस बिल का जबरदस्त विरोध हुआ था। बिल को हिन्दू संस्कृति तथा धर्म पर हमला करार दिया गया था। सरकार इस तरह से दबाव में आ गई कि तत्कालीन कानून मन्त्री डॉ. भीमराव अम्बेडकर को पद से इस्तीफा देना पड़ा। यही कारण है कि कोई भी राजनीतिक दल समान नागरिक संहिता के मुद्दे पर जोखिम नहीं लेना चाहता है।

हिन्दू धर्म में विवाह को जहाँ एक संस्कार माना जाता है, वहीं इस्लाम में इसे एक समझौता माना जाता है। ईसाइयों और पारसियों के रीति-रिवाज भी अलग-अलग हैं। अल्पसंख्यक विशेषकर मुसलमानों की एक बड़ी आबादी समान नागरिक संहिता को उनकी धार्मिक आजादी का उल्लंघन मानती है।

यदि समान नागरिक संहिता को लागू करने का फैसला लिया जाता है, तो इसे समग्र रूप देना आसान नहीं होगा। सरकार के लिए विवाह, तलाक, पुनर्विवाह आदि, जैसे मामलों पर किसी मजहब की भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना कानून बनाना आसान नहीं होगा। सिर्फ शरिया कानून, 1937 ही नहीं, बल्कि हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 (Hindu Marriage Act, 1955) क्रिश्चियन विवाह अधिनियम, 1872 (Christian Marriage Act, 1872) तथा पारसी विवाह और तलाक अधिनियम, 1936 (Parasi Marriage and Divorce Act, 1936) में भी सुधार की आवश्यकता होगी।

वर्तमान में समान नागरिक संहिता

गोवा भारत का पहला राज्य है, जहाँ समान नागरिक संहिता लागू है। गोवा में इस कानून को गोवा सिविल कोड या गोवा फैमिली कोड के नाम से जाना जाता है और यह सभी गोवावासियों पर लागू होता है, चाहे वे किसी भी धार्मिक या जातीय समुदाय के हों। जाहिर है, इसके लिए अनेक प्रयास किए गए होंगे। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दूसरे राज्यों में भी यदि कोशिश की जाती है, तो इसे लागू करना सम्भव हो सकता है। वर्तमान में उत्तराखण्ड ने समान नागरिक संहिता उत्तराखण्ड 2024 विधेयक पारित किया है, जो समान नागरिक संहिता (UCC) लागू करने वाला भारत का पहला राज्य बन गया है। यह विधेयक विवाह, तलाक, सम्पत्ति के उत्तराधिकार आदि जैसे मामलों के लिए एक समान कानून का प्रावधान करता है और अनुसूचित जनजातियों को छोड़कर उत्तराखण्ड के सभी निवासियों पर लागू

होता है।

उपसंहार

भारत जैसे देश में संस्कृति की बहुलता होने से न केवल निजी कानूनों में, बल्कि रहन-सहन से लेकर खान-पान तक में विविधता देखी जाती है और यही इस देश की खूबसूरती भी है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि देश को समान कानून में सँजोने की पहल अधिकतम सर्वसम्मति की राह अपनाकर की जाए। ऐसी कोशिशों से बचने की जरूरत है, जो समाज को ध्रुवीकरण की राह पर ले जाएँ और सामाजिक सौहार्द के लिए चुनौती पेश कर दें।

अत: इसके लिए आवश्यक है कि भारत के सभी धर्मों में सुधारवादी आन्दोलन चलाया जाए और इस दौरान समान नागरिक संहिता के निर्माण पर बल दिया जाए। इससे न केवल समानता; जैसे - संवैधानिक अधिकार को कार्यरूप में लाया जा सकेगा, बल्कि समाज सुधार जैसी पहलों में भी सुधार होगा। इसके साथ ही इससे नागरिकों में एकता तथा बन्धुत्व की भावना का भी विकास किया जा सकेगा।

3. जाति जनगणना : समानता या जातिवाद

भारत में जनगणना की शुरुआत 1881 ई. में हुई । जनगणना का उपयोग सरकार नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और अन्य लोगों द्वारा भारतीय आबादी का आकलन करने, संसाधनों तक पहुँच बनाने, सामाजिक परिवर्तन की रूपरेखा तय करने और परिसीमन अभ्यासों के लिए किया जाता है। हालाँकि इसकी एक अप्रभावी साधन के रूप में आलोचना की जाती है, जो विशेषीकृत आकलन के लिए अनुपयुक्त है।

भारत में जाति आधारित आँकड़ों के संग्रहण का एक लम्बा इतिहास रहा है, जिसमें वर्ष 1931 तक की जातियों की गणना शामिल है। वर्ष 1951 के बाद जातिगत आँकड़ों का संग्रह बन्द करने का निर्णय लिया गया, जिससे इसके जातिगत विभाजनकारी दृष्टिकोण से बचा जा सके और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया जा सके। हालाँकि बदलती सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता और सटीक सूचना की आवश्यकता को देखते हुए जातिगत जनगणना का नए सिरे से आह्वान किया जा रहा है।

जातिगत जनगणना के पक्ष में तर्क

जातीय जनगणना का समर्थन करने वाले व्यक्ति इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क देते हैं

- **सामाजिक असमानता को दूर करने के लिए** भारत के कई हिस्सों में जाति आधारित भेदभाव अभी भी प्रचलित है। जातिगत जनगणना वंचित समूहों की पहचान करने और उन्हें नीति निर्माण की मुख्यधारा में लाने में मदद कर सकती है। विभिन्न जाति समूहों के वितरण को समझकर सामाजिक असमानता को दूर करने और वंचित समुदायों के उत्थान के लिए लक्षित नीतियों को लागू किया जा सकता है।
- **संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करने के लिए** अन्य पिछड़ा वर्ग और अन्य समूहों की जनसंख्या पर सटीक आँकड़ों के बिना संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करना कठिन है। जातिगत जनगणना विभिन्न जाति समूहों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और आवश्यकताओं के बारे में सूचना प्रदान कर इस सम्बन्ध में मदद कर सकती है। यह नीति निर्माताओं को ऐसी नीतियों के निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान कर सकती है, जो प्रत्येक समूह की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करे और इस प्रकार समावेशी विकास को बढ़ावा दे।
- **सकारात्मक कार्रवाई नीतियों की प्रभावशीलता की निगरानी के लिए** अन्य पिछड़ा वर्ग और अन्य समूहों के लिए आरक्षण जैसी सकारात्मक कार्रवाई नीतियों का उद्देश्य सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना है। हालाँकि, जनसंख्या पर उचित आँकड़ों के बिना इन नीतियों के प्रभाव और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। जातिगत जनगणना ऐसी नीतियों के कार्यान्वयन और परिणामों की निगरानी में मदद कर सकती है, जिससे नीति निर्माताओं को उनकी निरन्तरता और संशोधन के सम्बन्ध में सूचना सम्पन्न निर्णय लेने में सक्षम बनाया जा सकता है।
- **भारतीय समाज की एक व्यापक छवि प्रदान करने के लिए** जाति भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग है, जो सामाजिक सम्बन्धों, आर्थिक अवसरों और राजनीतिक गतिशीलता को प्रभावित करती है । जातिगत जनगणना भारतीय समाज की विविधता की एक व्यापक छवि स्पष्ट कर सकती है, जो सामाजिक ढाँचे और विभिन्न जाति समूहों के बीच परस्पर क्रिया पर प्रकाश डाल सकती है। यह आँकड़ा सामाजिक गतिशीलता की बेहतर समझ पाने में योगदान कर सकता है।
- **संवैधानिक अधिदेश** भारत का संविधान भी जातिगत जनगणना आयोजित कराने का पक्षधर है। अनुच्छेद- 340 सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों की दशा की जाँच करने और इस सम्बन्ध में सरकारों द्वारा उठाए जा सकने वाले कदमों के बारे में सिफारिशें करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति का प्रावधान करता है।
- **समान प्रतिनिधित्व** प्रत्येक जाति की वास्तविक जनसंख्या का आकार उन सभी के लिए उचित प्रतिनिधित्व की गारण्टी के

लिए आरक्षण प्रणाली को तैयार करने में सहायता करेगा ।

- **वंचित लोगों की गणना करना** जाति जनगणना उन व्यक्तियों की विशिष्ट संख्या को प्रकाश में लाएगी, जो वंचित हैं या वे किस प्रकार के व्यवसाय अपनाते हैं या जाति जैसी संस्थाओं की उन पर किस तरह की पकड़ है।
- **जातिगत कठोरता को दूर करना** जाति गणना का अर्थ जाति या जाति व्यवस्था को कायम रखना नहीं है। जाति जनगणना जाति अभिजात्यवाद के सम्बन्ध में भ्रम को दूर करने में सहायता करती है। यह इस धारणा को त्यागने में मदद करती है कि जाति विशेष रूप से उन लोगों पर लागू होती है, जो वंचित, निराश्रित या अन्यथा वंचित हैं। नीति निर्माण के लिए डेटा जाति आधारित सकारात्मक कार्रवाई कार्यक्रमों या कल्याणकारी योजनाओं को बनाए रखने के लिए सांख्यिकीय औचित्य प्रदान करना लाभदायक होगा। देश में सभी घरों की व्यापक जनगणना से वंचित परिवारों की पहचान करने और गरीबी-विरोधी कार्यक्रमों को लागू करने में मदद मिलेगी।
- **न्यायिक समर्थन** भारतीय अदालतों ने अक्सर दृढ़ता से कहा है कि आरक्षण पर उचित डेटा की आवश्यकता है। यह एक कानूनी आवश्यकता भी हो सकती है, यह देखते हए कि अदालतें आरक्षण के मौजूदा स्तर का समर्थन करने के लिए मात्रात्मक तथ्यों की तलाश करती हैं।

जातिगत जनगणना के विपक्ष में तर्क

जातिगत जनगणना कराने के विपक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए गए हैं

- **जाति व्यवस्था की पुष्टि** जातिगत जनगणना के विरोधियों का तर्क है कि जाति आधारित भेदभाव अवैध है और जातिगत जनगणना जाति व्यवस्था को मजबूत करेगी। उनका मानना है कि लोगों को उनकी जातिगत पहचान के आधार पर वर्गीकृत करने के बजाए सभी नागरिकों के लिए व्यक्तिगत अधिकारों और समान अवसरों पर ध्यान केन्द्रित करने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- **जातियों को परिभाषित करना कठिन** जातियों को परिभाषित करना एक जटिल मुद्दा है, क्योंकि भारत में हजारों जातियाँ और उपजातियाँ पाई जाती हैं। जाति जनगणना के लिए जातियों की स्पष्ट परिभाषा की आवश्यकता होगी, जो आसान कार्य नहीं है। आलोचकों का तर्क है कि इससे समाज में भ्रम, विवाद और विभाजन की वृद्धि की स्थिति बन सकती है।
- **सामाजिक विभाजन की वृद्धि** कुछ लोगों का तर्क है कि जातिगत जनगणना से सामाजिक विभाजन की वृद्धि हो सकती है, इसलिए इसके अतिरिक्त सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रित करना बेहतर होगा। उनका मानना है कि लोगों में अन्तर या पृथक्कता को उजागर करने के अतिरिक्त उनके बीच समानता पर बल देना राष्ट्रीय एकता के लिए अधिक लाभप्रद होगा।
- **सामाजिक संघर्ष** जाति की पहचान विभिन्न जातियों के बीच संघर्ष का कारण बन सकती है। ऐसी सम्भावना है कि यह कुछ लोगों को परेशान कर सकती है और उच्च या अलग कोटा की माँग को जन्म दे सकती है।
- **समाज में असन्तुलन** डेटा संग्रह एक प्रमुख मुद्दा है, क्योंकि यह अधिकं आक्रामक हो सकता है। हालाँकि हमें व्यक्तियों की सहायता करने और नागरिक समानता को बनाए रखने के बीच सन्तुलन बनाना चाहिए। यह दावा किया गया है कि केवल लोगों को एक जाति से सम्बन्धित करार देना ही व्यवस्था को कायम रखने में योगदान देता है।

जातिगत जनगणना पर सरकार का रुख

सितम्बर, 2021 में केन्द्र सरकार ने सामाजिक-आर्थिक जातिगत जनगणना (SECC) को यह दावा करते खारिज कर दिया कि यह अक्षम्य, 'प्रशासनिक रूप से कठिन और बोझिल' थी। इस मुद्दे पर सरकार का वर्तमान रुख हुए निम्न प्रकार है

- **डेटा उपयोगी नहीं है** केन्द्र ने तर्क दिया कि जब आजादी से पहले जातिगत जनगणना की गई थी, तब भी डेटा पूर्णता और शुद्धता के मामले में खराब हो गया था। औचित्य यह दिया गया कि वर्ष 2011 की सामाजिक-आर्थिक और जातिगत जनगणना में गिना गया जाति डेटा आधिकारिक उद्देश्यों के लिए अनुपयोगी है, क्योंकि यह तकनीकी दोषों से भरा हुआ है।
- **प्रशासनिक रूप से कठिन** सरकार का मानना है कि जनगणना 2021 में जाति को शामिल करने में बहुत देर हो चुकी है, क्योंकि जनगणना की योजना और तैयारी लगभग चार वर्ष पहले शुरू हुई थी और जनगणना 2021 की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है।
- **एक अच्छी नीति उपकरण नहीं** सरकार ने कहा कि जनगणना में जाति आधारित गणना को वर्ष 1951 में शुरू की गई नीति के रूप में बन्द कर दिया गया था, क्योंकि जनसंख्या जनगणना "सही उपकरण नहीं थी, क्योंकि कई व्यक्ति जनगणना में स्वयं को पंजीकृत नहीं कर सकते थे, यदि वे अपनी जाति छिपा रहे हैं।" इससे जनगणना की मौलिक अखण्डता खतरे में पड़ सकती है।

4. इजरायल - फिलिस्तीन विवाद : भविष्य की समस्याएँ

इजरायल और फिलिस्तीन के मध्य विवाद लम्बे समय से चला आ रहा है। यह विवाद इतिहास में अनेक बार उभरा है। इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष 100 वर्ष से भी अधिक पुराना है। यह विवाद उनके इतिहास, संस्कृति, आतंकवाद, भू-भाग और धर्म के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा हुआ है। इसमें युद्ध, शान्ति प्रक्रिया और अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों की भागीदारी भी सम्मिलित है। यह विवाद चुनौतीपूर्ण बना हुआ है और अभी तक इसका समाधान नहीं हो पाया है।

वर्तमान (वर्ष 2023) में इनके बीच विवाद हमास द्वारा इजरायल के गाजापट्टी में हजारों रॉकेट को छोड़ने के पश्चात् उत्पन्न हुआ अर्थात् 7 अक्टूबर, 2023 को फिलीस्तीन समर्थित संगठन हमास के द्वारा इजरायल के गाजापट्टी में 5000 रॉकेट दागे गए और सैकड़ों उग्रवादी विभिन्न स्थानों पर सुरक्षा घेरे को तोड़ने हुए इजरायल में घुस गए तथा सीमा के निकट बसे इजरायली नागरिकों पर अंधाधुंध गोलियाँ बरसाईं। इसके अलावा 100 से अधिक लोगों को बंधक बना लिया।

विवाद का कारण

- इजरायल फिलिस्तीन विवाद का सबसे प्रमुख कारण येरूशलम पर आधिपत्य स्थापित करना रहा है, क्योंकि यह यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम का प्रमुख धार्मिक स्थल है। इसलिए यहाँ दोनों देश अपनी राजधानी बनाना चाहते हैं।
- शहर को विभाजित करने का मूलभूत विवाद का मुद्दा पाया जाता है, जो पूर्व समय से है। दोनों देशों के विवादित प्रमुख स्थलों में येरूशलम के अलावा अल अक्सा मस्जिद, गाजापट्टी, शेख जर्राह तथा वेस्ट बैंक है।
- इजरायल यहूदी बहुल क्षेत्र है, जबकि फिलीस्तीन इस्लाम। इनके विवाद राष्ट्रवादी कम किन्तु धार्मिक राजनीति की उपज मात्र पाई जाती है।

विवाद की पृष्ठभूमि एवं प्रमुख क्षेत्र

प्रथम विश्व युद्ध में ऑटोमन साम्राज्य की हार के बाद ब्रिटेन ने फिलिस्तीन नामक भाग पर अधिकार कर लिया। उस समय इजराइल नाम का कोई देश नहीं था। इजराइल से वेस्ट बैंक तक का क्षेत्र फिलिस्तीनी क्षेत्र के रूप में जाना जाता था। यहाँ फिलिस्तीनी अरब के अल्पसंख्यक यहूदी और बहुसंख्यक अरब के लोग रहते थे, जबकि कहा जाता है कि यहूदी बाहर से आए थे। फिलिस्तीनियों और यहूदियों के बीच विवाद तब शुरू हुआ, जब अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने ब्रिटेन से फिलिस्तीन को यहूदी लोगों के लिए 'राष्ट्रीय घर' के रूप में स्थापित करने के लिए कहा। यहूदी इसे अपने पूर्वजों का घर मानते थे। दूसरी ओर, फिलिस्तीनी अरब यहाँ फिलिस्तीन नामक एक नया देश बनाना चाहते थे। उन्होंने ब्रिटेन के नया देश बनाने के कदम का कड़ा विरोध किया। इस प्रकार फिलिस्तीनी-इजरायल विवाद शुरू हो गया।

इसके बाद यहूदी और फिलिस्तीनी आपसी संघर्ष शुरू हुआ। वर्ष 1948 में इजरायल को स्वतन्त्र घोषित करने के बाद फिलिस्तीनी अरबों द्वारा इसका विरोध किया गया और युद्ध हुआ। इसके परिणामस्वरूप इजरायल ने कई भूमि क्षेत्रों पर अधिकार जमा लिया। फिलिस्तीनियों को अपनी जमीन का अधिकांश हिस्सा छोड़ना पड़ा। वर्ष 1967 में फिर एक युद्ध हुआ और इजरायल ने पूर्वी येरूशलम के साथ-साथ वेस्ट बैंक और अन्य क्षेत्रों पर भी अधिकार जमा लिया।

जब द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ, तो दुनिया यहूदियों के साथ दुर्व्यवहार की पूरी कहानी से अवगत हुई। हिटलर के द्वारा लाखों यहूदियों की हत्या का आँकड़ा सामने आया। इसके परिणामस्वरूप, यहूदियों ने एक नए देश की माँग शुरू की। 14 मई, 1948 को यह दिन यहूदियों के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण था, जब दुनिया को एक नया देश मिला, जिसका नाम इजराइल रखा गया। इस दौरान संयुक्त राष्ट्र ने यहूदियों को मध्य पूर्व का वह स्थान दिया, जहाँ इस्लाम, ईसाई और यहूदियों का पवित्र स्थल येरूशलम स्थित है। इजराइल की स्थापना के बाद से ही यह विवाद शुरू हो गया, क्योंकि इजराइल मिडिल ईस्ट में एक इस्लामिक देश के बीच में स्थित है। इसके पूर्वी हिस्से में वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी मौजूद हैं, जहाँ फिलिस्तीन नेशनल अथॉरिटी फिलिस्तीनियों के लिए सरकार चलाती है। इसका परिणाम है कि दोनों देशों के बीच संघर्ष जारी है, जिसमें विभिन्न उद्देश्यों और दावों को लेकर विवाद होता रहता है। इस विवाद का इतिहास 100 साल से अधिक पुराना है और इसमें कई बार युद्ध और समझौते हुए हैं, लेकिन स्थिरता का अभाव रहा। इजराइल के निर्माण के समय, उसके पाँच पड़ोसी इस्लामिक देशों ने एकजुट होकर इजराइल के अधिकारों पर सवाल उठाते हुए वर्ष 1967 में उस पर हमला कर दिया। इजराइल ने कठोर प्रतिक्रिया दी और उन सभी को एकसाथ युद्ध में हरा दिया। इस युद्ध को '6 दिवसीय युद्ध' के नाम से भी जाना जाता है। इससे दुनिया को यह पता चल गया कि इजराइल भले ही आकार में बहुत छोटा-सा देश है, परन्तु उसका साहस किसी से कम नहीं है। युद्ध का परिणाम यह हुआ कि सिनाई प्रायद्वीप, गाजा, पूर्वी येरूशलम, वेस्ट बैंक और गोलान हाइट्स पर इजराइल का अधिकार हो गया।

फिलिस्तीनियों और यहूदियों के बीच विवाद का एक कारण अल अक्सा मस्जिद भी है। यहूदी, इस्लाम और ईसाई धर्म को मानने वालों के लिए येरूशलम सबसे पवित्र शहरों में से एक है। अल अक्सा मस्जिद को मक्का और मदीना के बाद इस्लाम में तीसरा सबसे पवित्र

स्थान माना जाता है। 35 एकड़ के परिसर को मुस्लिम अल-हरम अल-शरीफ कहा जाता है। यहूदी इसे टेम्पल टाउन कहते हैं। ईसाइयों का मानना है कि यहीं पर ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था। बाद में वह यहाँ अवतरित हुए थे। इसके अन्दर ईसा मसीह की कब्र है। तबसे यहूदी स्थल डोम ऑफ द रॉक भी यहीं स्थित है। इस प्रकार, यह स्थल वर्षों से यहूदियों और फिलिस्तीनियों के बीच विवाद में रहा है। इसे अल-अक्सा विवाद भी कहते हैं।

विवाद की स्थिति एवं प्रतिक्रिया

हमास फिलिस्तीन का एक इस्लामी चरमपन्थी संगठन है, जिसके कारण इजराइल और फिलिस्तीनियों के बीच युद्ध हुआ। हमास ने 7 अक्टूबर को 5,000 रॉकेट दागे और इजराइल में घुसपैठ कर इजराइली नागरिकों पर हमला किया। इसके परिणामस्वरूप इजराइल ने हमास के विरुद्ध ऑपरेशन ऑयरन स्वॉर्ड शुरू किया गया। हमास की स्थापना शेख अहम यासीन द्वारा वर्ष 1987 में की गई थी और तब से हमास फिलिस्तीनी क्षेत्रों से इजरायल को हटाने के लिए संघर्ष कर रहा है। हमास गाजा पट्टी से संचालित होता है। हमास इजराइल को एक देश के रूप में मान्यता नहीं देता है और पूरे क्षेत्र में एक इस्लामिक राष्ट्र स्थापित करना चाहता है। इस संगठन ने इजराइल और यहूदियों को लेकर कहा था कि हमास यहूदी समुदाय और इजराइल को पूरी तरह से समाप्त कर देगा।

हमास के पास लड़ाकों की संख्या के मुताबिक, करीब 50,000 लड़ाकों की फौज है, जिसमें नौजवानों की संख्या काफी अधिक है। हमास की संख्या इजराइल की सेना से कम हो सकती है, लेकिन उसके पास हथियारों का बड़ा जखीरा है; जैसे- रॉकेट, मोर्टार और ड्रोन। इसके अतिरिक्त, हमास की एक एलीट यूनिट को कोर्नेट गाइडेड एण्टी-टैंक मिसाइल का प्रयोग करते हुए भी देखा गया है। यह विवाद अब भी जारी है और इसका कोई स्थायी समाधान अभी तक नहीं हुआ है।

आगे की राह

इजरायल-फिलिस्तीन विवाद एक बहुत ही जटिल और भारी संघर्ष है, जिसमें बहुत-से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहलू हैं। यह विवाद लम्बे समय से चल रहा है और अब तक कोई समाधान नहीं हुआ है। इसमें युद्ध, शान्ति प्रक्रिया और अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों की भागीदारी भी है। इस विवाद के समाधान के लिए आवश्यक है कि सभी के बीच संवाद और समझौता हो। शान्ति और सहयोग के माध्यम से ही इस विवाद का समाधान सम्भव है। दोनों पक्षों को सहमति के माध्यम से साथ मिलकर आम लोगों की सुरक्षा और कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस विवाद के समाधान में अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों का भी सक्रिय योगदान होना चाहिए।

5. डिजिटल इण्डिया : भारतीय प्रौद्योगिकी का बदलता स्वरूप

बदलते वैश्विक एवं सामाजिक परिवेश तथा समय की माँग को देखते हुए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में डिजिटल इण्डिया अभियान का शुभारम्भ किया गया। इसका उद्देश्य भारत के नागरिकों को आसान ऑनलाइन सरकारी सेवाएँ प्रदान करना तथा देश में इण्टरनेट को सशक्त करके भारत के तकनीकी पहलू में सुधार करना है। डिजिटल बुनियादी ढाँचे में सुधार, डिजिटल रूप में सेवाएँ प्रदान करना और डिजिटल साक्षरता, इस अभियान के तीन प्रमुख पहलू हैं। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता का अभाव, इण्टरनेट कनेक्टिविटी तथा डिजिटल अवसंरचना के रूप में इसके सामने कई चुनौतियाँ हैं तथापि सरकार द्वारा इस क्षेत्र में राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन, भारत नेट आदि कार्यक्रम के द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाया जा सके।

डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम का विजन

भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज व ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था को परिवर्तित करने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन प्रमुख क्षेत्र केन्द्रित हैं

- प्रत्येक नागरिक तक एक मूल सुविधा के रूप में डिजिटल अवसंरचना की पहुँच अर्थात् उच्च गति की इण्टरनेट सुविधा, सुरक्षित साइबर स्पेस इत्यादि की सुविधा प्रदान करना।
- प्रशासन एवं उसकी सेवाओं को जनता की माँग पर उसके घर तक पहुँचाना अर्थात् डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराकर लोगों को नकद रहित वित्तीय लेन-देन आदि सेवाओं को उपलब्ध कराना।
- नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण अर्थात् सभी नागरिकों को डिजिटल साक्षरता प्रदान करना, नागरिकों को सरकारी दस्तावेजों को डिजिटल माध्यम से जमा करवाने की सुविधा उपलब्ध कराना।

डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम की प्रमुख पहलें

- **प्रत्यक्ष लाभ अन्तरण** इसके अन्तर्गत सरकार की ओर से मिलने वाले लाभों / सहायता को सीधे लाभार्थियों के बैंक खाते में अन्तरित कर दिया जाता है। इसमें लगभग 440 कार्यक्रमों को शामिल किया गया है, जिससे आज करोड़ों की बचत होती है।
- **डिजिलॉकर** यह नागरिकों को उनके सार्वजनिक और निजी दस्तावेज को पब्लिक क्लाउड में सुरक्षित रखने के लिए निजी

जगह उपलब्ध कराकर कागजविहीन अभिशासन उपलब्ध कराता है।

- उमंग यह अनेक सरकारी सेवाओं को उपलब्ध कराने वाला सम्पूर्ण मोबाइल ऐप है।
- **मेरी सरकार (MY GOV)** यह साझा डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराता है, जिसमें नागरिक सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में अपने विचार साझा करते हैं। यह विदेशों में भी लोगों को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने को प्रोत्साहित करता है।
- **डिजिटल भुगतान** इस कार्यक्रम के अन्तर्गत डिजिटल भुगतान केन्द्र, जैसे- भीम ऐप, भीम आधार, भारत क्यूआर कोड आदि शुरू किए गए हैं, जिससे समय की भी बचत होती है।
- **जीवन प्रमाण** इसमें पेन्शन भोगियों को अपना जीवन प्रमाण-पत्र किसी भी समय और किसी भी स्थान पर डिजिटल तरीके से भेजने या प्रस्तुत करने में मदद मिलती है।
- **जीईएम** यह आम प्रयोग की वस्तुओं और सेवाओं की सरकारी खरीद का ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म है।
- **राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल** इस एकल ऑनलाइन पोर्टल के द्वारा अनेक छात्रवृत्ति योजनाओं की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।
- **ई-कोर्ट्स मिशन मोड परियोजना** इसके अन्तर्गत उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय, जिला न्यायालय में केस स्टेटस, कोर्ट ऑर्डर आदि कई सेवाएँ शामिल हैं। इसके अन्तर्गत नेशनल ज्यूडिशियल डेटा ग्रिड भी प्रारम्भ किया गया है, जिसमें कई अदालतों से एकत्र किए गए आँकड़ों का विश्लेषण किया जाता है और डैशबोर्ड के माध्यम से अखिल भारतीय आँकड़ों को प्रदर्शित किया जाता है।
- **ई-मेल सेवाएँ** डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकार सभी आधिकारिक संवाद के लिए सुरक्षित ई-मेल सेवा उपलब्ध कराती है।
- **ई-हॉस्पिटल** यह ऑनलाइन पंजीकरण फ्रेमवर्क मरीजों को सरकारी अस्पतालों के साथ ऑनलाइन ओपीडी जाँच कराने की सुविधा प्रदान करने की एक पहल है।
- **ई-साइन** ई-केवाईसी सेवा के माध्यम से आधार धारक के प्रमाणीकरण का उपयोग करके ऑनलाइन इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर सेवा की सुविधा प्रदान करता है।
- **डिजिटल शिक्षा** इसके अन्तर्गत स्वयं (SWAYAM), स्वयंप्रभा तथा राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी प्रमुख हैं, जो शिक्षा के प्रमुख पाठ्यक्रम उपलब्ध कराते हैं।

इसी प्रकार डिजिटल इण्डिया के अन्तर्गत ई- पुलिस, वर्चुअल लैब, ई-यन्त्र, ई-गवर्नेंस जैसे प्रमुख कार्यक्रम संचालित हैं। कोविड-19 के दौरान भी सरकार द्वारा कई डिजिटल प्रोग्राम अपनाए गए हैं; जैसे-

- आरोग्य सेतु ऐप यह एक कोरोना वायरस ट्रैकिंग ऐप है, जो जीपीएस एवं ब्लूटूथ के माध्यम से ट्रैक करता है।
- चैटबोट प्रधानमन्त्री ने लोगों के कोरोना सम्बन्धी प्रश्नों के समाधान हेतु व्हाट्सएप चौटबोट से जुड़ने की घोषणा की थी।
- **GOK Direct** यह ऐप केरल सरकार द्वारा लोगों को कोरोना वायरस महामारी से जागरूक करने हेतु लॉन्च किया गया।
- **आपूर्ति सुविधा ऐप** नोएडा प्राधिकरण ने लोगों तक आवश्यक वस्तुओं को पहुँचाने के लिए आपूर्ति सुविधा ऐप लॉन्च किया था।
- **लोकेटर व COVA** गोवा सरकार ने कोविड-19 लोकेटर ऐप तथा पंजाब सरकार ने COVA ऐप लॉन्च किया था।

कोरोना वायरस से बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में लोगों को जागरूक करने हेतु कोरोना महामारी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में नवीन क्रान्ति आई। बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। वीडियो क्लासेज, प्री रिकॉर्डेड वीडियो क्लासेज, स्लाइड्स, ऑनलाइन टेस्ट, पीडीएफ आधारित ऑनलाइन शिक्षा का वृहत स्तर पर प्रयोग किया जाने लगा।

कोरोना के दौरान इस रोग के प्रसार को रोकने तथा इससे बचने हेतु तरह-तरह के उपाय डिजिटल माध्यमों की मदद से लोगों तक पहुँचाए गए। देश भर से डाटा एकत्रीकरण में डिजिटलाइजेशन का बड़े स्तर पर उपयोग किया गया। कोरोना के दौर में लेन-देन एवं क्रय-विक्रय में नकदी के प्रयोग पर रोक लगी तथा लोगों द्वारा ऑनलाइन पेमेण्ट को व्यापक पैमाने पर अपनाया गया।

डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम का परिणाम

डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम के माध्यम से आज डिजिटली तरीके से सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं। आज भारत नवाचार का केन्द्र बन चुका है। श्आधारश् के कारण भारत की लगभग 99% आबादी को डिजिटल पहचान उपलब्ध हुई है। डिजिटल लॉकर, ई-साइन, डिजिटल भुगतान आदि के कारण लोगों को सरकारी सेवा घर बैठे अपने फोन पर उपलब्ध रही है, जिस कारण इन्हें विभिन्न सरकारी कार्यालयों का चक्कर नहीं काटना पड़ता है अर्थात् समय व ऊर्जा दोनों की चचत हो रही है। डिजिटल अर्थव्यवस्था से आम लोगों का जीवन सरल हो रहा है, साथ ही इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को भी बल मिल रहा है, क्योंकि डिजिटल अर्थव्यवस्था अपनाने से रोजगार सृजन को बढ़ावा मिला है।

डिजिटल इण्डिया अधिनियम, 2023

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा डिजिटल इण्डिया अधिनियम, 2023 पारित किया गया है, जो देश के बढ़ते डिजिटल पारिस्थितिकी तन्त्र के लिए एक भविष्योनमुखी कानूनी ढाँचा स्थापित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मन्त्रालय का यह सक्रिय कदम भारत की महत्त्वाकांक्षी डिजिटल पहल के अनुरूप है।

इस अधिनियम का उद्देश्य ऐसे विकास योग्य नियम तैयार करना है, जो प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बदलते या सुझावों के अनुरूप हों और देश के डिजिटल अवसंरचना की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप अद्यतन किए जा सकें। इसके अतिरिक्त इसका उद्देश्य नागरिकों को समय पर उपचार प्रदान करना, साइबर विवादों को हल करना और इण्टरनेट पर विधि का शासन लागू करना है।

डिजिटल इण्डिया अधिनियम की विशेषताएँ

1. यह अधिनियम दो दशक पुराने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 को प्रतिस्थापित करेगा (जो अब इण्टरनेट और उभरती प्रौद्योगिकियों के गतिशील विकास द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों एवं अवसरों को पर्याप्त रूप से सम्बोधित नहीं कर पाता है)।
2. इस अधिनियम का ढाँचा ऑनलाइन सुरक्षा, विश्वास एवं जवाबदेही, खुला इण्टरनेट सुनिश्चित करने और कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं ब्लॉकचेन जैसी नई प्रौद्योगिकियों को विनियमित करने जैसे प्रमुख तत्त्वों पर ध्यान केन्द्रित करेगा।
3. यह अधिनियम डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, डिजिटल अधिनियम नियमावली, राष्ट्रीय डेटा गवर्नेंस नीति और साइबर अपराधों के लिए भारतीय दण्ड संहिता में किए गए संशोधन सहित अन्य सम्बन्धित कानूनों एवं नीतियों के साथ मिलकर कार्य करेगा।
4. यह अधिनियम 'सेफ हार्बर' सिद्धान्त की समीक्षा करेगा, जो फेसबुक जैसे ऑनलाइन प्लेटफार्मों के उपयोगकर्ता जनित सामग्री के लिए जवाबदेही से बचाता है।
5. यह अधिनियम वर्ष 2006 के 'डिजिटल इण्डिया लक्ष्य' के साथ संरक्षित है, जिसका उद्देश्य 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की डिजिटल अर्थव्यवस्था का निर्माण करना और वैश्विक प्रौद्योगिकी आकार देना है।

चुनौतियाँ

विश्व बैंक के अनुसार, "यदि डिजिटल तकनीक का लाभ विश्वभर के लोगों तक पहुँचाना है, तो जहाँ कहीं भी डिजिटल डिवाइड है, उसे समाप्त करना होगा अर्थात् जिन लोगों के पास यह तकनीक उपलब्ध नहीं है, उन्हें भी इसका लाभ पहुँचाना होगा। यह कथन भारत पर भी लागू होता है, क्योंकि भारत में भी डिजिटल डिवाइड काफी अधिक है, जिस कारण इसका पूर्ण अपेक्षित लाभ नहीं मिल रहा है।ष संक्षेप में, भारत में डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम के मार्ग में निम्नलिखित चुनौतियाँ हैं

- डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम की सफलता के मार्ग में आज सबसे बड़ी चुनौती आवश्यक अवसंरचना का अभाव है। आज भी भारत में बिजली, इण्टरनेट आदि बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत को बेहतर इण्टरनेट कनेक्टिविटी के लिए 80 लाख से अधिक वाई-फाई, हॉट-स्पॉट की आवश्यकता है, जबकि वर्तमान में इसकी उपलब्धता काफी कम है।
- डिजिटल इण्डिया का मूल आधार सूचना संचार एवं प्रौद्योगिकी है, लेकिन सूचना संचार प्रौद्योगिकी क्रान्ति का प्रभाव मुख्यत: भारत के शहरों में पड़ा, जबकि भारत के ग्रामीण निर्धन परिवार पर इसका व्यापक प्रभाव नहीं देखा जा सकता है। फिर शैक्षणिक पिछड़ापन व जागरूकता में कमी भी इस मार्ग में बाधा है। इन सब कारणों से भारत में डिजिटल विभाजन की उपस्थिति बनी हुई है, जो एक प्रमुख चुनौती है।
- नीतिगत बाधाएँ भी डिजिटल इण्डिया को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं। कर सम्बन्धी व अन्य नियामकीय दिशा-निर्देश, एफडीआई नीतियों में अस्पष्टता आदि इसके मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं।
- एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में इण्टरनेट की गति अन्य प्रमुख देशों की तुलना में काफी कम है। यहाँ तक कि श्रीलंका एवं पाकिस्तान में भी 4G की औसत स्पीड भारत से अधिक है।
- डिजिटल इण्डिया की सफलता में साइबर सुरक्षा व डेटा सुरक्षा का मुद्दा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, लेकिन भारत में साइबर खतरा व डेटा लीक की समस्या अधिक देखी जा रही है तथा इस सन्दर्भ में अभी कोई ठोस कानून नहीं है, जिस कारण डिजिटल इण्डिया को अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही है।

सरकारी प्रयास

भारत सरकार डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम की चुनौतियों से निपटने हेतु निम्न प्रयास कर रही है

- **राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन** इसके माध्यम से पूरे देश में 52.5 लाख लोगों को डिजिटल प्रशिक्षण देने के लिए कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत सभी राज्यों/केन्द्रशासित क्षेत्रों में अधिकृत राशन डीलरों सहित आँगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं को सामान्य सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान और प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे ये लोग सरकार की ई-सेवाओं से जुड़कर

स्वयं लाभ उठाते हैं, साथ ही अन्य लोगों को भी इससे जोड़ते हैं। प्रधानमन्त्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता मिशन इस मिशन का मुख्य उद्देश्य समस्त राज्यों / केन्द्रशासित प्रदेशों में 6 करोड़ व्यक्तियों को डिजिटल साक्षर बनाना तथा प्रत्येक उपयुक्त परिवार के एक व्यक्ति को डिजिटल साक्षर कर 40% ग्रामीण परिवारों को इस योजना से जोड़ना है, जो वर्तमान में भी जारी है।

- **भारतनेट** इस योजना में वर्ष 2018 तक देश में 2.5 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को 100 Mbps की स्पीड पर ब्रॉडबैण्ड कनेक्टिविटी कराने का लक्ष्य रखा गया था। इसे वर्ष 2024 तक विस्तारित किया गया है। यह विश्व की सबसे बड़ी डिजिटल कनेक्टिविटी परियोजना है, जो वर्तमान में भी जारी है।
- **इलेक्ट्रॉनिक डेवलपमेण्ट फण्ड** वर्ष 2020 तक नेट जीरो आयात प्राप्त करने के उद्देश्य से फण्ड ऑफ फण्ड के रूप में इस फण्ड की स्थापना की गई है। यह वर्तमान में भी कार्यरत है।
- **डिजिटाइज इण्डिया प्लेटफॉर्म** यह किसी भी संगठन के लिए स्केन किए गए दस्तावेज छवियों के लिए डिजिटलीकरण की सेवाएँ प्रदान करता है।

इस प्रकार, सरकार के सफल प्रयास से डिजिटल क्षेत्र की चुनौतियों के विद्यमान होते हुए भी कार्यों में पारदर्शिता, सरलता, गुणवत्ता में सुधार हुआ है। इससे दूर-दराज के गाँव में भी विभिन्न सेवाओं से लोग लाभान्वित हुए हैं। साथ ही सरकार अब छोटे शहरों में बीपीओ उद्योग स्थापित करने पर बल दे रही है। इससे एक तरफ रोजगार के अवसर सृजित होंगे, दूसरी तरफ सूचना प्रौद्योगिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवा उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा।

6. रोबोट या यन्त्र मानव: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ

आधुनिक समय में विभिन्न उद्योगों व क्षेत्रों में दक्षता, उत्पादकता और अनुकूलन को बढ़ावा देने के लिए ऑटोमेशन की आवश्यकता बढ़ गई है। यह माँग ही यन्त्र मानव रोबोट की उपयोगिता को उजागर करती है, जिसका अध्ययन रोबोटिक्स विज्ञान में किया जाता है। जब किसी देश की युवा और कामकाजी आबादी में कमी आती है, तो ऐसी परिस्थिति में रोबोट जैसे यन्त्र मानव का सहारा लिया जाता है। यह सत्य है कि पश्चिमी देशों ने इन परिस्थितियों में ऐसी तकनीकी और प्रौद्योगिकी को अपनाया, जिससे इन देशों में रोबोटिक्स का अधिक विकास हुआ है। भारत जैसे देश युवाओं की जनसंख्या सर्वाधिक है, इसके बावजूद ऑटोमेशन की प्रवृत्ति को अपनाया जा रहा है। अत: इसके लाभों व सम्भावनाओं के साथ इसकी कमियों व चुनौतियों से इनकार नहीं किया जा सकता है।

रोबोटिक्स क्या है ?

सामान्यत: यन्त्र मानव या मशीनी मानव रोबोट कहलाता है और रोबोट की अभिकल्पना, निर्माण और अभिप्रयोग के विज्ञान और तकनीकों को रोबोटिक्स कहा जाता है। यह ऐसी तकनीक है, जिसमें मशीनें मानव को विस्थापित कर अधिकतर कार्य करती हैं। वर्तमान में, यह गहरी और खतरनाक खानों में खुदाई करने, समुद्र की तलहटी में कार्य करने से लेकर चाँद पर भेजने व औद्योगिक क्षेत्रों में वरदान साबित हो रही है। जापान के गाकू तेनसोकी ने वर्ष 1928 में पहला रोबोट बनाया था, जिन्हें रोबोटिक्स का पिता कहा जाता है। वर्ष 2000 में असिमोव (Asimov) महोदय द्वारा पहला मानव रोबोट बनाया गया, जो इनोवेटिव मोबिलिटी पर एडवांस स्टेप में कार्य करता है। वर्ष 2017 में सोशल रोबोट सोफिया को सऊदी अरब की नागरिकता दी गई। इस प्रकार, यह किसी देश द्वारा वैधानिक रूप से नागरिकता प्राप्त करने वाला विश्व का यह पहला रोबोट है।

इसी प्रकार, ऐडा पहली मानव सदृश बहु यथार्थवादी रोबोटिक कलाकार हैं, जो समस्त कलात्मक गतिविधियों को इनबिल्ट आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स तकनीक के माध्यम से प्रदर्शित करती हैं। वर्ष 2019 में इन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पेण्टिंग की कलात्मक गतिविधियों को प्रदर्शित किया था।

रोबोट के प्रकार

रोबोट कई प्रकार के होते हैं, जो अलग-अलग प्रकार के कार्यों को करते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभाते हैं। ऐसे कुछ रोबोट निम्नलिखित हैं

- **घरेलू रोबोट** घरेलू कार्यों में उपयोग होने वाले रोबोट घरेलू रोबोट कहलाते हैं। यह घरेलू कार्यों की गतिविधियों को निर्देशानुसार सरल तथा सहज रूप में करते हैं। विदेशों के होटलों में ऐसे रोबोट को देखा जा सकता है।
- **औद्योगिक रोबोट** यह रोबोट स्वत: नियन्त्रित, रिप्रोग्रामिंग तथा बहुउद्देशीय रोबोट होते हैं। यह औद्योगिक गतिविधियों व जटिल कार्यों को भी दक्षतापूर्ण एवं तीव्र गति से सरलतापूर्वक करते हैं। यह उद्योगों में जोखिम भरे कार्यों को बेहतर तरीके से करने में दक्ष होते हैं।
- **ह्यूमेनोइड रोबोट** यह रोबोट का सबसे उन्नत व महत्त्वपूर्ण प्रकार है, क्योंकि यह न सिर्फ देखने में मानव के समान होते हैं,

बल्कि दो ऐसी क्षमताएँ रखते हैं, जिसे अन्य किसी रोबोट में नहीं देखा जा सकता है। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर मानव सम्बन्धी गतिविधियों को शीघ्रता से कर पाते हैं। इस प्रकार इसके प्रमुख घटकों में स्वत: चार्जिंग, स्वत: अधिगम तथा कृत्रिम बुद्धि शामिल है।

इसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक महत्त्वपूर्ण घटक है, जिसकी सहायता से ह्यूमेनोइड रोबोट को नई दिशा और दशा प्रदान की जा सकती है। इसने रोबोटिक्स में क्रान्ति का नया पहलू जोड़ा है, जो रोबोट को कार्य कुशल बनाकर मानवीय गतिविधियों के समय में बचत करता है। वर्तमान में यह वरदान साबित हो रहा है।

रोबोटिक्स के अनुप्रयोग / सम्भावनाएँ

रोबोटिक्स की उपयोगिता कई क्षेत्रों में बढ़ी है और इसके अनुप्रयोग भी किए जा रहे हैं। साथ ही अनेक नई सम्भावनाओं को खोजा जा रहा है, जिसे अनुप्रयोगों के माध्यमों से देखा जा सकता है

- सैन्य, सुरक्षा एवं निगरानी के क्षेत्रों में रोबोट की उपयोगिता महत्त्वपूर्ण साबित हुई है। इसका प्रयोग ऐसे युद्ध क्षेत्रों में सम्भव होता है, जहाँ दुश्मन के बारे में जानकारी सीमित होती है। पेकबोट (Packbet) तथा टेलान (Talon) दो ऐसे रोबोट हैं, जिन्हें इराक एवं अफगानिस्तान में अमेरिका द्वारा प्रयोग किया गया। सीकुर रोबोट सुरक्षा एवं निगरानी व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध रोबोट हैं।
- यह औद्योगिक क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक रूप में अधिक शुद्धता, वेरी लॉर्ज स्केल इण्टीग्रिटी एवं ई-कचरा प्रबन्धन में सहायक होता है। परिवहन कार्यों में समय की बचत एवं कार्य कुशल रोबोट मुख्य रूप से कार्य करते हैं।
- रोबोटिक्स का स्वास्थ्य एवं चिकित्सा क्षेत्र में व्यापक प्रयोग सर्जरी, रोगों की पहचान आदि में हो रहा है। इससे 3 - क चित्रांकन सम्भव होता है। इस क्षेत्र में टेलीमेडिसिन जैसे विकल्पों में काफी लाभ हुआ है। इसका सबसे अधिक लाभ यह होता है कि इससे कम रक्त स्राव, कम दवाइयों का प्रयोग तथा सर्जरी रिकवरी शीघ्र सम्भव होती है।
- नैनो प्रौद्योगिकी के विकास से नैनोरोबोट का प्रयोग समुद्रों में तेल प्रदूषण को समाप्त करने में परमाणु संयन्त्रों में हानिकारक नाभिकीय कचरे के प्रबन्धन में तथा निस्तारण एवं भविष्य में मौसम परिवर्तन एवं ओजोन छिद्र जैसी समस्याओं के समाधान में महत्त्वपूर्ण साबित हो रहा है अर्थात् इसकी पर्यावरणीय संरक्षण में उपयोगिता बढ़ रही है।
- अन्तरिक्ष अनुसन्धान एवं खोजों में रोबोटिक्स की व्यापक सम्भावनाएँ देखी जा रही हैं। यह एक विकल्प बनकर उभरा है, जिसे लेण्डर या रोवर्स के रूप में देखा जाता है, जिसे चन्द्रयान-2 मिशन के साथ भेजा गया था। प्रसान इसरो द्वारा विकसित एक चन्द्ररोवर है। चन्द्रयान -3 चन्द्र मिशन का हिस्सा, यह 23 अगस्त, 2023 को चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सफलतापूर्वक उतरा। हालाँकि इससे पूर्व भी श्पाथ फाइण्डरश तथा श्सोजोर्नरश जैसे रोबोट को मंगल ग्रह पर भेजा जा चुका है, जिसने मंगल की सतह पर घूमकर इसकी चट्टानों आदि की संरचना के बारे में पता लगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। इस प्रकार इसने अपार सम्भावनाओं को जन्म दिया है।
- खेल एवं मनोरंजन के क्षेत्र में भी रोबोट का महत्त्वपूर्ण योगदान देखा गया है। शतरंज खेलने वाले 'डीप ब्लू जूनियर' नामक रोबोट द्वारा कम्प्यूटर के रूप में अपनी कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करते हुए पाया गया है। ब्रिटेन के ब्रिस्टल विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गोल्फ खेलने वाले रोबोट को तैयार किया है तथा स्नूकर खेलने वाले रोबोट की तैयारियाँ की जा रही हैं। विश्व का पहला बोलने वाला रोबोट जापान द्वारा बनाया गया है। इसी प्रकार, बच्चों के मनोरंजन के लिए खिलौनों के रूप में रोबोट बच्चों का मनोरंजन करते हैं।
- विश्वभर में जटिल प्राकृतिक एवं मानवे निर्मित आपदाओं से लड़ने में रोबोटिक्स ने बड़ी भूमिका निभानी शुरू कर दी है। 'स्नेक रोबोट्स' प्राकृतिक आपदा जैसे सुनामी आदि के पश्चात् खोज और लोगों की जान बचाने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त यह गहरी खानों में मिथेन के रिसाव से मानव बचाव में सहायक होता है।

कोरोना काल में रोबोट की उपयोगिता

कोरोना महामारी के दौरान छोटी-बड़ी सभी कम्पनियाँ सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करने के लिए रोबोट्स का प्रयोग कर रही थी। दक्षिण कोरिया में तापमान लेने और सैनिटाइजर बाँटने के लिए भी रोबोट का प्रयोग किया गया है। चीन के चुहान में होंगशान स्पोर्ट सेण्टर में खोले गए एक फील्ड हॉस्पिटल में 14 रोबोट की तैनाती की गई थी। दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग स्थित एक अस्पताल में भी केन्द्र को विषाणुमुक्त करने के लिए एक अल्ट्रावॉयलेट रोबोट का प्रयोग किया गया था।

भारत में जयपुर स्थित सवाई मानसिंह सरकारी अस्पताल में मानव आकृति वाले रोबोट पर परीक्षण चल रहा है, जिससे यह पता लगाया जा सके कि क्या इसे वहाँ भर्ती कोविड-19 पीड़ित व्यक्तियों को दवा और भोजन पहुँचाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। फोर्टिस अस्पताल ने भी कोरोना महामारी से स्वास्थ्य कर्मियों को सुरक्षित रखने और जाँच तेज करने की कोशिश के तहत इस वायरस की जाँच के लिए मित्र रोबोट बनाया। इसी प्रकार आईआईटीबीएचयू ने सैनिटाइज रोबोट का निर्माण किया। केरल की स्टार्ट-अप कम्पनी एसिमोव रोबोटिक्स

ने भी तीन पहियो वाला रोबोट तैयार किया है, जो आइसोलेशन वार्ड में संक्रमितों के सहायक की तरह कार्य करेगा।

इस प्रकार, रोबोट बिना मानव को क्षति पहुचाएँ जोखिमपूर्ण कार्यों को करने में सफल होता है, जो भविष्य की सम्भावनाओं को प्रकट करता है।

भारत में रोबोटिक्स

भारत में रोबोट की सफलता स्कूली स्तर के रूप में देखी जा सकती है, जो बंगलुरू स्थित सेण्टर फॉर आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स रिसर्च डीआरडीओ द्वारा संचालित है। भारत के एक्सीलैन्स सेण्टर आईआईटी कानपुर एवं मद्रास इस दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रहे हैं।

भारत में सर्वप्रथम भारत इलेक्ट्रॉनिक लिमिटेड (भेल) द्वारा पहले देशज रोबोट का निर्माण किया गया। ऑटोमेशन क्रियाओं एवं भारतीय रोबोटिक्स की उन्नति करने के उद्देश्य से वर्ष 2011 में रोबोटिक्स सोसायटी ऑफ इण्डिया का गठन किया गया है। भारत ने भी रोबोट की उपयोगिता को महत्त्व देते हुए विभिन्न क्षेत्रों में सहायक होने वाले रोबोट को बनाया है। भारत विश्व में रोबोट बनाने वाला 18वाँ देश है।

भारत का पहला बैंकिंग रोबोट लक्ष्मी रोबोट है, जिसे कुँबाकोनम स्थित सिटी यूनियन बैंक ने लॉन्च किया है। वर्ष 2018 में ह्यूमोनॉड रोबोट रश्मि भी बनाया गया, हालाँकि यह अभी अन्तिम दौर में है। गगनयान मिशन के लिए जनवरी, 2020 में 'व्योममित्र' नामक एक महिला रोबोर्ट विकसित किया गया है। इसे अर्द्ध-मानव रोबोट कहा जाता है, क्योंकि इसके पैर नहीं है। भारत में रोबोटिक्स एवं ऑटोमेशन के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने और उसके निर्माण के लिए ऑल इंडिया काउंसिल फॉर रोबोटिक्स एण्ड ऑटोमेशन (AICRA) ने कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। यह एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो रोबोटिक्स एवं ऑटोमशन और शिक्षा उद्योग में मानक निर्धारित करता है, संगठनों और पेशेवरों को कठिन तकनीकी समस्याओं के समाधान में मदद करता है। इस प्रकार, से भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रोबोट के अनुप्रयोग व सम्भावनाओं को तलाश रहा है, साथ ही रोबोटिक्स प्रोसेस ऑटोमेशन की सम्भावनाओं को लेकर इसके विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

भारत में बने सात उल्लेखनीय ह्यूमनॉइड रोबोट हैं-मानव, मित्रा, रोबोकॉप, केम्पा, राडा, आई.आर. ए. इन्द्रो। इसके अतिरिक्त निओन, जिवाका (मेडीबोट), C - अस्त्र, KP - रोबो आदि हैं।

भारत में रोबोटिक्स प्रोसेस ऑटोमेशन की सम्भावनाएँ

- भारत ने वर्तमान में इस प्रक्रिया को अपनाना शुरू कर दिया है। भारत के विनिर्माण उद्योग, मोटर वाहन उद्योग, दवा कम्पनियों ने ऑटोमेशन को अपनाया है।
- विनिर्माण इकाइयों के श्रमबल में कटौती किए बिना उनकी उत्पादकता को लगभग 30-40% बढ़ाने में सहायक साबित होता है। इनमें श्रमिकों को स्वचालित प्रक्रियाओं को करने के लिए प्रशिक्षित भी किया जाता है।
- ऑटोमेशन की सहायता से भारत में फास्ट इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग सिस्टम का विकास किया जा रहा है। टाटा और महिन्द्रा द्वारा फास्ट चार्जिंग फोर व्हीलर पेश किए गए हैं, किन्तु उन फोर व्हीलर को चार्ज करने में 3-7 घण्टे का समय लगता है।

अत: बाजार की आवश्यकता की पूर्ति के लिए कम्पनियों को गतिमान एवं अनुकूलित प्रक्रियाओं की आवश्यकता है, जिस पर कार्य किया जा रहा है, जो छात्रों की प्रौद्योगिकी को समझने में सहायक होगा।

रोबोटिक्स की चुनौतियाँ

- रोबोटिक्स की अनेक सम्भावनाएँ एवं अनुप्रयोग हैं, इसके बावजूद इसकी कुछ चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं, जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता है
- रोबोटिक्स का प्रयोग विनिर्माण उद्योग क्षेत्र में कर्मचारियों के लिए चुनौतिपूर्ण साबित होता है। कर्मचारियों द्वारा यह आरोप लगाया जाता है कि उन्हें रोजगार से बाहर कर दिया जाएगा।
- आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स एवं मशीन लर्निंग शब्द का उपयोग शायद ही कहीं किया जाता है, जहाँ इसका उपयोग होता भी है, वहाँ न्यूनतम ज्ञान की चुनौतियाँ विद्यमान हैं। भारत में जागरूकता की कमी भी प्रमुख चुनौती है। प्रौद्योगिकी संस्थानों में विशेषज्ञों की कमी तथा वित्तीय भार भी प्रमुख चुनौती के रूप में विद्यमान है। यह प्रौद्योगिकी के निम्न ज्ञान से भी प्रभावित है। यही कारण है कि भारत जैसे देशों में यह आरम्भिक चरण में ही पाया जाता है।

उपसंहार

विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों में दक्षता, उत्पादकता और अनुकूलन को बढ़ावा देने के लिए रोबोटिक्स तथा ऑटोमेशन वर्तमान समय की आवश्यकता है। ऐसे में पारिस्थितिकी तन्त्र का विकास करना होगा, जो ज्ञान और सूचना, वित्तपोषण तथा एक समर्पित टीम की तकनीकी और कानूनी सहायता से समर्पित हो, जो सभी पहलुओं को अपने दायरे में लेता हो। तभी उद्यमशीलता की भावना और स्टार्ट-अप को आगे के लिए और प्रेरणा प्राप्त होगी। इसके साथ ही रोबोटों के संदर्भ में इससे उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

7. साइबर क्राइम : एक जटिल समस्या

प्रौद्योगिकी के सदुपयोग से मानव समाज सभ्य बनते हुए निरन्तर विकास कर रहा है, तो कुछ आपराधिक प्रवृत्ति के लोग इसका दुरुपयोग कर समाज को क्षति पहुँचा रहे हैं। ऐसा ही एक अपराध साइबर क्राइम है, जो इण्टरनेट प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित है। इण्टरनेट का सदुपयोग कर जहाँ आज पूरा विश्व एक गाँव के रूप में परिवर्तित हो गया है, वहीं इसका गलत प्रयोग कर साइबर अपराध जैसी जटिल व वैश्विक समस्या को जन्म दे दिया है, जिस पर नियन्त्रण पाना बहुत कठिन है, क्योंकि इण्टरनेट का जाल पूरी दुनिया में फैला हुआ है। इस विश्वव्यापी समस्या के निदान के लिए पूरे विश्व को सामूहिक रूप से पहल करने की आवश्यकता है। इस दिशा में भारत सहित कई देशों ने सकारात्मक पहल करने का प्रयास किया है।

सामान्य रूप में कोई भी ऐसा काम, जिससे कम्प्यूटर प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है, साइबर क्राइम कहलाता है। साइबर अपराध ऐसे गैर-कानूनी कार्य हैं, जिनमें कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट का प्रयोग एक साधन अथवा लक्ष्य दोनों रूपों में किया जाता है। द ऑर्गेनाइजेशन फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एण्ड डेवलपमेण्ट (ओईसीडी) के अनुसार, "बिना पूर्व अनुमति के आँकड़ों के संसाधन और संचरण से सम्बन्धित कोई भी गैर-कानूनी, अनैतिक अनाधिकृत कार्य साइबर अपराध की श्रेणी में आता है।" ऐसे अपराधों में हैकिंग, चाइल्ड पॉर्नोग्राफी, साइबर स्टॉकिंग, सॉफ्टवेयर पाइरेसी, क्रेडिट कार्ड फ्रॉड, फिशिंग आदि को शामिल किया जाता है।

साइबर क्राइम का वर्गीकरण

साइबर क्राइम को निम्नलिखित रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है

- **हैकिंग** हैकिंग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें हैकिंग करने वाला किसी अन्य व्यक्ति की जानकारी को बिना उसकी अनुमति के चोरी करता है। किसी भी कम्प्यूटर, नेटवर्क, वेबसाइट या सॉफ्टवेयर में मौजूद खामियों की सहायता से गोपनीय जानकारी को बिना अनुमति के एकत्र करने की प्रक्रिया हैकिंग कहलाती है।
- **स्पैम ई-मेल** इसमें अनेक प्रकार के ई-मेल आते हैं, जिसमें ऐसे ई-मेल भी होते हैं, जो सिर्फ कम्प्यूटर को नुकसान पहुँचाते हैं। उन ई-मेल से सभी कम्प्यूटरों में खराबी आ जाती है।
- **फिशिंग** इसे हिन्दी में ऑनलाइन जालसाजी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत अपराधी फिशिंग के माध्यम से नकली ई-मेल या सन्देश भेजता है, जो किसी प्रतिष्ठित कम्पनी, बैंक, क्रेडिट, ऑनलाइन शॉपिंग की तरह मिलते-जुलते होते हैं। इसका उद्देश्य लोगों की निजी पहचान से जुड़ी जानकारियाँ एकत्र करना होता है। निजी जानकारियों में नाम, ई-मेल, यूजर आई डी, पासवर्ड, मोबाइल नम्बर, पता, बैंक खाता संख्या,ज्ड पिन, डेबिट या क्रेडिट कार्ड नम्बर, सीवीवी पिन, जन्मतिथि इत्यादि शामिल होते हैं।
- **रैनसमवेयर** यह एक प्रकार का फिरौती माँगने वाला सॉफ्टवेयर है। इसे इस प्रकार से बनाया जाता है कि वह किसी भी कम्प्यूटर सिस्टम की सभी फाइलों को एनक्रिप्ट कर देता है तथा उसके बाद फिरौती की माँग करता है और नहीं देने पर कम्प्यूटर की सभी फाइलों को नष्ट कर देता है।
- **साइबर स्टॉकिंग** इसके अन्तर्गत कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह किसी दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह का इण्टरनेट के माध्यम से पीछा करता है और उसे प्रत्येक तरह से हानि पहुँचाने और प्रताड़ित करने का प्रयास करता है। इसके अन्तर्गत इण्टरनेट पर झूठे आरोप लगाना, गाली देना, यौन शोषण, डेटा उपकरण की छेड़छाड़ इत्यादि को शामिल किया जाता है।
- **चाइल्ड पॉर्नोग्राफी** बच्चों को सेक्सुअल एक्ट में या नग्न दिखाते हुए इलेक्ट्रॉनिक फॉर्मेट में कोई चीज प्रकाशित करना या दूसरों को भेजना चाइल्ड पॉर्नोग्राफी कहलाता है।

साइबर क्राइम का बढ़ता दायरा

साइबर अपराध का सबसे जटिल पक्ष यह है कि विश्व के किसी भी कोने में बैठकर इस अपराध को अंजाम दिया जा सकता है। वर्तमान में ऑनलाइन धोखाधड़ी, हैकिंग, फिशिंग बुलिंग इत्यादि जैसी समस्या से पूरा विश्व पीड़ित है। यहाँ तक कि विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली देश अमेरिका भी इससे अछूता नहीं है। हैकिंग को लोगों ने आज रुचि व व्यवसाय बना लिया है। विश्व के सभी देशों के सरकारी संस्थानों की साइट को कभी-कभी हैक करने का प्रयास किया जाता है। भारत में प्रधानमन्त्री कार्यालय से लेकर रक्षा व विदेश मन्त्रालय, भारतीय दूतावासों, मिसाइल प्रणालियों आदि के कम्प्यूटरों पर साइबर हमला हो चुका है।

आज विभिन्न वायरसों के माध्यम से साइबर सुरक्षा कवच को नुकसान पहुँचाया जा रहा है। वर्तमान में किसी का चेहरा और किसी का धड़ जोड़कर मोफिंग के माध्यम से पोर्नोग्राफी, पेडो-फाइल (बाल यौन शोषण) से लेकर लिंग निर्धारण के अपराध भी साइबर जगत के प्रमुख अपराध बन चुके हैं। अश्लील साइट्स भी साइबर अपराध के अन्तर्गत आती हैं। युवा वर्ग तेजी से इसकी गिरफ्त में आ जाता है। इस प्रकार की साइटें सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से समाज में गन्दगी फैला रही है। साइबर क्राइम के माध्यम से आज धार्मिक-राजनीतिक

उन्माद भी पैदा कर दिया जाता है। आज आतंकवादी भी साइबर क्राइम के माध्यम से विश्व में दहशत फैला रहे हैं। आतंकवादी अपनी योजना व अन्य गोपनीय सन्देश को चौटरूम, अश्लील वेबसाइटों के बुलेटिन बोर्ड और अन्य ऐसी वेबसाइटों पर रख रहे हैं, जिन पर आसानी से सन्देह नहीं किया जा सकता है। इण्टरनेट आज आतंकवादियों के लिए गुप्त सन्देशों के आदान-प्रदान का त्वरित माध्यम बना हुआ है।

फिर इण्टरनेट बैंकिंग में भी साइबर अपराध के घातक प्रभाव देखे जाते हैं। खातों से रकम का निकलना आज आम समस्या बन गई है, जिसके शिकार पढ़े-लिखे लोग भी हो रहे हैं, साथ ही साइबर अपराध के कारण देश की अर्थव्यवस्था को भी नुकसान पहुँचता है। एक तरफ हैकिंग आदि का खतरा रहता है, तो दूसरी तरफ इसे रोकने हेतु बड़ी मात्रा में राशि खर्च हो रही है। भारत में प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये की क्षति साइबर अपराधों के कारण होती है तथा सुरक्षा के इंतजाम में भी करोड़ों रुपये खर्च करने पड़ते हैं। अमेरिका में तो प्रतिवर्ष इन अपराध ों के कारण 10 बिलियन डॉलर का नुकसान होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय पहल की आवश्यकता

साइबर क्राइम आज एक विश्वव्यापी समस्या बन चुका है। इससे निपटने के लिए एक मजबूत अन्तर्राष्ट्रीय कानून की आवश्यकता है, साथ ही वैश्विक स्तर पर सुरक्षा का एक मजबूत तन्त्र भी विकसित किए जाने की आवश्यकता है, लेकिन इस सन्दर्भ में आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि प्रत्येक देश का आईटी एक्ट अलग होता है। विदेशों में सरकारें किसी वेबसाइट को ब्लॉक करने के स्थान पर उसे सुधारने में विश्वास करती हैं, जबकि भारत में वेबसाइट को ही बन्द करने की माँग शुरू हो जाती है। भारतीय आईटी एक्ट के अनुसार, किसी वेबसाइट को तब तक बन्द नहीं किया जा सकता, जब तक कि उस पर डाली जा रही सामग्री या सूचना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा न हो। वैसे भी किसी वेबसाइट को बन्द कर देने से समस्या का समाधान नहीं होता है, लेकिन यह भी सही है कि वेबसाइट समस्या के प्रचार का साधन है।

बुडापेस्ट कन्वेंशन साइबर क्राइम पर एक कन्वेंशन है। यह इस सन्दर्भ में पहली ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि है, जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय कानूनों को सुव्यवस्थित करके, जाँच-पड़ताल की तकनीकों में सुधार करके तथा इस सम्बन्ध में विश्व के अन्य देशों के बीच सहयोग को बढ़ाने हेतु इण्टरनेट और कम्प्यूटर अपराधों पर रोक लगाने की माँग की गई है। इस कन्वेंशन में कुल 56 सदस्य हैं। भारत ने अभी तक इस पर हस्ताक्षर नहीं किया है। राष्ट्रीय सम्प्रभुता के मुद्दे पर रूस तथा चीन भी इसका विरोध करते रहे हैं।

रूस ने बुडापेस्ट अभिसमय के समकक्ष अन्तर्राष्ट्रीय साइबर अपराध से निपटने के लिए अपना प्रस्ताव पेश किया है। इस प्रस्ताव को दिसम्बर, 2019 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्वीकृति दे दी गई। इस नए ड्राफ्ट के अन्तर्गत एक विशेषज्ञ समिति में विश्व के सभी क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इसके लिए अगस्त, 2020 में न्यूयॉर्क में एक नई सन्धि के अन्तर्गत सभी सदस्यों ने राष्ट्र साइबर अपराध से जुड़े आँकड़ों को साझा किया।

साइबर अपराध पर नियन्त्रण हेतु भारत के प्रयास

भारत विश्व में चीन के पश्चात् दूसरा सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है। साथ ही यहाँ साइबर क्राइम की घटनाएँ निरन्तर देखी जाती रही हैं। इसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना भारत सरकार का प्रमुख दायित्व है। अत: भारत सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 पारित किया है, जिसके प्रावधानों के साथ-साथ भारतीय दण्ड संहिता के प्रावधान सम्मिलित रूप से साइबर अपराध से निपटने के लिए पर्याप्त हैं। आईटी एक्ट 2000 की धाराएँ 43, 43 ए, 66, 66 बी, 66 सी, 66 डी, 66 ई, 66 एफ, 67, 67 ए, 67 बी, 70, 72, 72 ए और 74 हैकिंग और साइबर अपराधों से सम्बन्धित हैं। सरकार ने सुरक्षा से सम्बन्धित फ्रेमवर्क का अनुमोदन किया है और इसके लिए राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् सचिवालय को नोडल एजेंसी बनाया गया है।

सरकार द्वारा श्राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति - 2013श जारी की गई, जिसके तहत् सरकार द्वारा अति संवेदनशील सूचनाओं के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय अति संवेदनशील सूचना अवसंरचना संरक्षण केन्द्र (National Critical Information Infrastructure Protection Centre] NCIIPC) का गठन किया गया है। इसके अन्तर्गत 2 वर्ष से लेकर उम्रकैद तथा दण्ड अथवा जुर्माने का भी प्रावधान है। सरकार द्वारा कम्प्यूटर इमरजेन्सी रिस्पांस टीम की स्थापना की गई, जो कम्प्यूटर सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय एजेन्सी है। जनवरी, 2020 में गृह मन्त्रालय द्वारा साइबर क्राइम से निपटने के लिए 'भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र' का उद्घाटन किया गया। इस योजना के 7 घटक हैं।

साइबर सुरक्षा की रणनीतियों पर विशेष ध्यान देते हुए अगस्त, 2019 में श्नई राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीतिश को लेकर भारतीय सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसको लेकर राज्यों द्वारा भी महत्त्वपूर्ण पहल की गई है, जैसे केरल पुलिस विभाग द्वारा विकसित किया गया श्साइबर डोम परियोजनाश। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न विभाग व नोडल एजेन्सियों के साथ मिलकर एक पारिस्थितिकी तन्त्र विकसित कर बढ़ते साइबर हमलों के खतरे व अपराधों को रोकना है। इस प्रकार से राज्य भी इसके खतरों से बचाव हेतु प्रयासरत है।

इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा कम्प्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केन्द्र, साइबर स्वच्छता केन्द्र आदि स्थापित किए गए हैं, साथ ही सूचना, सुरक्षा, शिक्षा और जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। साथ ही भारत, अमेरिका, ब्रिटेन और चीन जैसे देशों के साथ इस सन्दर्भ में समन्वय स्थापित कर रहा है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, कहा जा सकता है कि साइबर क्राइम आज एक जटिल वैश्विक समस्या का रूप धारण कर चुका है, जिसका सामना सभी को मिलकर करना होगा। आज इसे गम्भीरता से लेते हुए राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नियन्त्रण हेतु ठोस कदम बढ़ाने के प्रयास भी हो रहे हैं। साथ ही आम आदमी भी यह ध्यान रखे कि इससे बचने के लिए इण्टरनेट पर सावधानी ही सबसे बड़ी सुरक्षा है अर्थात् अपनी निजी जानकारी इण्टरनेट व अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामग्री पर शेयर करने से बचना चाहिए और कम्प्यूटर व इण्टरनेट जैसी प्रौद्योगिकी का प्रयोग मानव कल्याण के लिए करना चाहिए।

8. आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स (एआई) मशीनों द्वारा मानव बुद्धि का अनुकरण है। यह वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी और नवाचार की दुनिया में सबसे तीव्र विकास कर रहा है। इसीलिए आज के युग को आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का युग कहा जाता है। यह विभिन्न प्रकार की चुनौतियों व संकट को हल कर सकता है, लेकिन साथ ही मानव समाज के लिए संकट भी बन सकता है, जिस कारण इसके प्रयोग को लेकर सावधानी भी बरतने की आवश्यकता है।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का शाब्दिक अर्थ कृत्रिम बुद्धिमता होता है अर्थात् कृत्रिम तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता है, यह एक ऐसी तकनीक है, जिसमें एक कम्प्यूटर अपने प्रोग्राम में दिए जा रहे निर्देशों को समझने के बाद उन्हें संरक्षित करता है और उसके आधार पर भविष्य की आवश्यकताओं को समझते हुए निर्णय लेता है तथा उसके अनुसार कार्य करता है। इसके माध्यम से अब मशीनों के बीच संवाद करना सम्भव हो गया है। इस तकनीक के अन्तर्गत स्पीच रिकग्निशन, विजुअल परसेप्शन, लैंगवेज आइडेण्टिफिकेशन और डिसिजन मेकिंग आदि का वर्णन किया जा सकता है।

इस तकनीक के जनक जॉन मैकार्थी हैं। इस तकनीक ने रोबोटिक्स क्षेत्र में क्रान्ति ला दी। इसके माध्यम से कम्प्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर संचालित करने की कोशिश की जाती है, जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क कार्य करता है। यह पूर्णत: प्रतिक्रियात्मक, सीमित स्मृति, आत्म- चेतन एवं मस्तिष्क सिद्धान्त पर कार्य करता है।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का विकास

यद्यपि आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का जनक जॉन मैकार्थी को कहा जाता है, लेकिन इनके दोस्तों मार्विन मिंस्की, हर्बर्ट साइमन, ऐलेन नेवेल आदि ने भी इस शोध कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इस तकनीक का विकास 1950 के दशक में ही प्रारम्भ हो गया था, लेकिन इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। जब जापान ने सर्वप्रथम इसकी पहल की और वर्ष 1981 में फिफ्थ जनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर-कम्प्यूटर के विकास के लिए 10 वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।

ब्रिटेन ने इसके लिए श्एल्वीश नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ ने भी इस सन्दर्भ में श्एस्प्रिटश नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की। वर्ष 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों, जैसे वेरी लार्ज स्केल इण्टीग्रेटेड सर्किट का विकास करने के लिए एक माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी की स्थापना की।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के प्रकार

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के प्रकार निम्नलिखित हैं

- **टाइप 1 :** रिएक्टिव मशीन यह मशीन स्थितियों पर प्रतिक्रिया कर सकती है। ऐसी मशीनों में मेमोरी की कमी होती है। यह सभी सम्भावित विकल्पों का विश्लेषण करती है और सर्वश्रेष्ठ को चुनती है।
- **टाइप 2 :** सीमित मेमोरी यह भविष्य के लोगों को सूचित करने के लिए पिछले अनुभवों का उपयोग करने में सक्षम होती है। इसका उदाहरण सेल्फ ड्राइविंग कार हो सकता है। ऐसी कारों में निर्णय लेने की प्रणाली होती है।
- **टाइप 3 :** मन का सिद्धान्त यह दूसरों को समझने के लिए सन्दर्भित करता है। इस प्रकार का आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स अभी तक उपलब्ध नहीं है।
- **टाइप 4 :** सेल्फ- अवेयरनेस यह आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का उच्चतम और सबसे परिष्कृत स्तर है। ऐसी प्रणालियों में स्वयं की भावना होती है। इसके अतिरिक्त उनके पास जागरूकता, चेतना आदि होती है।

  इस प्रकार की तकनीक वर्तमान में नहीं है, परन्तु इस क्षेत्र में शोध चल रहा है। यह तकनीक निश्चित रूप से एक क्रान्ति होगी। इस प्रकार, कहा जा सकता है किं जैसे-जैसे कम्प्यूटर साइंस और तकनीक का विकास हो रहा है, वैसे-वैसे आर्टिफिशयल इण्टेलिजेन्स के क्षेत्र में भी नवीन प्रयोग हो रहा है।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के लाभ/अनुप्रयोग

- इस तकनीक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपयोग स्वास्थ्य क्षेत्र में हो सकता है। इस तकनीक से सर्जरी, पर्यवेक्षण आदि में मदद मिल सकती है, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी इसकी मदद से इलाज किया जा सकता है। इसके द्वारा कीटनाशकों तथा उर्वरकों

के दुरुपयोग को रोका जा सकता है। इसके माध्यम से विनिर्माण उद्योग में क्रान्ति आने की सम्भावना है।

- रक्षा की दृष्टि से भी इस तकनीक का काफी महत्त्व है। उदाहरण के लिए, युद्ध में या सीमा पर सेना के जवानों की जगह रोबोट का प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में धोखाधड़ी का पता लगाना, ऑनलाइन फ्रॉड आदि पर नियन्त्रण किया जा सकता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में यह महत्त्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह शिक्षण प्रबन्धन जैसे कार्यों को सुलभ बना सकता है, यह ग्रेडिंग प्रणाली के संचालन में सहायक होकर समय की बचत करा सकती है।
- यह मनुष्यों की तुलना में जोखिमपूर्ण कार्यों को आसानी से कर सकती है। इसके कार्यों में गलती की सम्भावना कम होगी। जटिल सॉफ्टवेयर को समझकर सरल बनाया जा सकता है, जिससे संसाधन तथा समय के व्यय को कम किया जा सकेगा।
- रोबोटिक्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों के प्रयोग से कार्य करने के तरीकों में बदलाव आता है, जिससे उत्पादन एवं निर्माण के तरीकों में क्रान्तिकारी परिवर्तन देखने को मिलता है।
- वर्तमान में वित्तीय संस्थानों और बैंकिंग संस्थानों द्वारा डेटा को व्यवस्थित और प्रबन्धित करने के लिए दस तकनीक का उपयोग किया जाता है। आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स खनिज संसाधनों की खोज में भी मदद करता है। साथ ही ऊर्जा क्षेत्र में इसके सम्भावित उपयोग से बिजली सन्तुलन एवं उपयोग दक्षता में वृद्धि होती है।
- आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रयोग स्वचालित ड्राइवर ऑटोनोमस ट्रैकिंग, डिलीवरी व बेहतर यातायात प्रबन्धन में होता है। साथ ही स्मार्ट शहरों और आधारभूत ढांचे के विकास में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। पूर्व मुख्य न्यायाधीश बोबडे ने भी इसकी वकालत की है और कहा कि इसको अपनाने से न्याय मिलने में देरी नहीं होगी।

आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स के नकारात्मक पक्ष

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स को अपनाने से बेरोजगारी बढ़ने की सम्भावना अधिक होती है। विशेषकर डेटा एण्टी क्लर्क, अकाउण्ट क्लर्क जैसे व्हाइट कॉलर जॉब इसमें शामिल हैं। भारत में भी बैंकों द्वारा आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स मशीन के प्रयोग के कारण बैंकिंग क्षेत्र में 7% नौकरी की कमी हुई है।

यदि हम इस तकनीकी पर अधिक निर्भर हो गए, तो हम अपनी रचनात्मकता को खो देंगे। यह तकनीकी बहुत ही खर्चीली होती है। किसी भी मशीन में भावना या नैतिक मूल्य नहीं होता है, जिस कारण वह सही और गलत में अन्तर नहीं कर पाती है। यही बात इस मशीन पर भी लागू होती है। इस बात की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता है कि ये मशीनें स्वचालित हथियार बना लें और मानव जाति का विनाश कर दें। आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स से निजता का खतरा बढ़ जाता है।

भारत में आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स की स्थिति

वर्तमान में भारत में लगभग 40-42 हजार आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स प्रोफेशनल्स कार्य कर रहे हैं। भारत में बंगलुरु शहर आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रमुख केन्द्र बन गया है। भारत में लगभग एक हजार कम्पनियाँ आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रयोग अपने प्रतिदिन के कार्यों में कर रही हैं। नैसकॉम तथा फिक्की की एक रिपोर्ट के अनुसार, आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के कारण भारत के कुछ प्रमुख औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में तकनीकी विस्तार होगा तथा इससे रोजगार सृजन में बढ़ोत्तरी होगी। भारत की कई ई-कॉमर्स कम्पनियाँ उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स का प्रयोग कर रही हैं।

आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के क्षेत्र में भारत सरकार के प्रयास

- भारत सरकार आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, बिग डेटा इण्टेलिजेन्स, रोबोटिक्स, रियल टाइम डेटा और क्वाण्टम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, कौशल, विकास आदि को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।
- G-20 के सम्मेलन में भारत के प्रधानमन्त्री ने डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के महत्त्व को रेखांकित किया। आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स प्रौद्योगिकी का लाभ आम जनता तक पहुँचाने के उद्देश्य से नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है, जिसमें सरकार के प्रतिनिधि के अतिरिक्त शिक्षाविद व उद्योग जगत के प्रतिनिधि भी शामिल हैं।
- नीति आयोग राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमता कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर रहा है। साथ ही नीति आयोग आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स द्वारा देश में व्यवसाय करने के तरीके को बदलने एवं गूगल कम्पनी के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है। केन्द्र सरकार ने उद्योग जगत से भी आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स के लिए एक मॉडल बनाने हेतु सहयोग की अपील की है।
- आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने 7 सूत्री रणनीति तैयार की है, जिसमें इस तकनीकी के सन्दर्भ में शोध व विकास को बढ़ावा, सुरक्षा, नैतिक, विधिक व सामाजिक पहलुओं का ध्यान आदि को प्रमुख स्थान दिया गया है।

निष्कर्ष

वर्तमान युग में आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स एक महत्त्वपूर्ण विषय है, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं। विकास के लिए आज इसकी आवश्यकता है, परन्तु इसको लेकर हमें सावधान भी रहना होगा, क्योंकि यह मानव समाज के लिए खतरा भी हो सकता है। अत: इस प्रौद्योगिकी को अपनाने से पहले इस पर पर्याप्त शोध किया जाना चाहिए, साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रम पर भी बल दिया जाना चाहिए, जिससे इससे शत-प्रतिशत लाभ उठाया जा सके और राष्ट्र के विकास को गति प्रदान की जा सके।

9. मोबाइल : बदलती जीवन शैली का परिचायक

जब मोबाइल का आविष्कार हुआ था, तब किसी भी व्यक्ति ने कल्पना भी नहीं की होगी कि मानव सभ्यता में इतना अधिक परिवर्तन हो जाएंगा तथा मानव जीवन मोबाइल के इर्द-गिर्द घूमता रहेगा। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि मोबाइल के बिना व्यक्ति स्वयं को दिव्यांग महसूस करता है। मोबाइल फोन के कारण मानव जीवन सहज और सुखमय हो गया है। यह आज के मानव की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। कहा जा सकता है कि एक छोटा-सा मोबाइल, जो व्यक्ति के शर्ट के पॉकेट में भी आ जाता है, ने मानव जीवन में इतना अधिक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है, जितना किसी अन्य आविष्कार ने नहीं किया। इस मोबाइल ने दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति से लेकर सबसे गरीब व्यक्ति के जीवन की प्रभावित किया है।

मोबाइल ने साधारण लोगों की जीवन-शैली में किस सीमा तक प्रवेश कर लिया है, इसका अनुमान हम व्यक्ति के दैनिक जीवन को देख कर लगा सकते हैं। आज व्यक्ति जब सुबह सोकर उठता है, तो सबसे पहले अपने मोबाइल में आए हुए कॉल तथा मैसेज आदि को देखता है। लोग कान में मोबाइल लगाकर ब्रश करते हैं, तो कोई एक हाथ से खाना बनाता है और दूसरे हाथ से मोबाइल का प्रयोग करता रहता है। सड़क पर रिक्शा वाला हो, साइकिल चलाने वाला ही या मोटर साइकिल अथवा कार चलाने वाला, सभी एक हाथ से अपनी गाड़ी के हैण्डिल (स्टीयरिंग) को पकड़े रहते हैं, तो दूसरे हाथ से अपने कान में मोबाइल लगाकर बात करते रहते हैं। आज हम घर में हों या सड़क, बस, रेल, मॉल, सिनेमा हॉल, अस्पताल या कहीं भी, सभी जगह मोबाइल लोगों के पास रहता है। हमारी जिन्दगी मोबाइलमय हो चुकी है। यह कहा जा सकता है कि आज का मानव पूर्णत: मोबाइल की गिरफ्त में आ चुका है।

सकारात्मक पहलू

आज मनुष्य के लिए मोबाइल इतना उपयोगी हो गया है कि मोबाइल द्वारा प्रदत्त, वे सुविधाएँ, जिन्होंने न केवल जीवन को आसान बनाया है, बल्कि दूरियों को भी मिटाया है। मोबाइल के माध्यम से लोग किसी भी स्थान से कहीं भी बात कर सकते हैं। आज स्मार्टफोन का जमाना आ गया है, जिसमें बहुत सारे फंक्शन होते हैं, जो हमारे दैनिक जीवन में अत्यधिक सहायक होते हैं।

मोबाइल में टॉर्च, रेडियो, गेम्स, कैमरा, गाने, घड़ी, अलार्म, कैलकुलेटर, रिमाइण्डर, इण्टरनेट तथा मूवी आदि जैसी सुविधाएँ होती हैं। इन सभी सुविधाओं के एक ही प्लेटफॉर्म पर मिलने से हमारे जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। आज लोगों ने हाथों में घड़ी पहनना कम कर दिया है, कैगरे की बिक्री में भी कमी आई है। उसी प्रकार टॉर्च, कैलकुलेटर आदि भी कम खरीदे जाने लगे हैं। आज मोबाइल जीवन का अपरिहार्य अंग बन चुका है। आज की संस्कृति को यदि मोबाइल संस्कृति भी कहा जाए, तो गलत नहीं होगा।

मोबाइल की बढ़ती उपयोगिता के कारण ही एम प्रशासन अर्थात् एम गवर्नेंस की अवधारणा का जन्म हुआ। बहुत ही कम समय में लोक जीवन से जुड़े कार्यों व प्रशासनिक कार्यों में आज मोबाइल का प्रयोग होने लगा है। आज बैंकिंग क्षेत्र में लोग सबसे अधिक मोबाइल का उपयोग करते हैं। वित्तीय लेन-देन, मोबाइल, डीटीएच रिचार्ज, बीमा भरना इत्यादि सभी कार्य अधिकांश लोग अपने मोबाइल से ही (विशेषकर शहरी क्षेत्र में) करने लगे हैं। रेलवे, बस की टिकट बुकिंग से लेकर गैस कनेक्शन की सुविधा भी मोबाइल पर उपलब्ध है। अस्पताल में डॉक्टर से मिलने का समय लेना, रिपोर्ट प्रेषित करना इत्यादि सुविधा भी मोबाइल पर उपलब्ध है।

आज राजनीतिक पार्टी भी अपने चुनाव प्रचार के लिए मोबाइल का सहारा लेकर करोड़ों लोगों तक पहुँचने का प्रयास करती है। मोबाइल के माध्यम से आज लोग अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का खुलकर प्रयोग कर रहे हैं।

मोबाइल में वीडियो कॉल की सुविधा ने लोगों के बीच की दूरी मिटा दी है। मोबाइल में वीडियो कॉल के माध्यम से लोग प्रत्यक्ष रूप से एक-दूसरे को देखते हुए बात कर सकते हैं। आपस में बात करना, विचारों का आदान-प्रदान आज इतना आसान हो गया है कि लोग पत्र लिखना भूल गए हैं, जबकि पत्र-लेखन (पोस्टकार्ड और अन्तर्देशीय) हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रह चुका है।

छात्रों के जीवन में भी मोबाइल अत्यधिक सकारात्मक परिवर्तन लाया है। यदि किसी प्रश्न का उत्तर ढूँढना हो, तो तुरन्त स्मार्टफोन में इण्टरनेट पर सर्च किया जा सकता है। यदि कोई रास्ता भटक जाए, तो मोबाइल में उपलब्ध गूगल मैप से सही पते तक पहुँचा जा सकता है। उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति विपत्ति में हो, तो मोबाइल के माध्यम से कॉल आदि कर सकता है। उदाहरण के लिए, पुलिस, एम्बुलेंस, फायर ब्रिगेड आदि को तुरन्त सूचित किया जा सकता है।

आज जब हम बाजार जाते हैं तो बाजार में भी मोबाइल की प्रभुता देखने को मिलती है। फुटपाथों पर कैम्प लगाकर सिम बेचना,

मोबाइल से सम्बन्धित विभिन्न उपकरण, मोबाइल सेल आदि देखने को मिलती है। प्रतिदिन नए-नए मोबाइल का प्रचार टीवी, समाचार-पत्र आदि में देखने को मिल रहा है। लोग आज किसी को कुछ उपहार देना चाहते हैं, तो सबसे अच्छा विकल्प मोबाइल ही लगता है। इस प्रकार मोबाइल उद्योग आज पूरी दुनिया में फैल चुका है।

भारत में भी टेलीकम्पनियों के बीच काफी प्रतिस्पर्द्धा बढ़ गई है, टेलीडेंसिटी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। अतः यह कहा जा सकता है कि बाजार से लेकर जीवन शैली तक मोबाइल ने लोगों के जीवन पर क्रान्तिकारी प्रभाव डाला है। निश्चित रूप से मोबाइल ने संचार क्रान्ति को सफल बना दिया है।

नकारात्मक पहलू

वर्तमान समय में अपराधों को बढ़ावा देने में मोबाइल की मुख्य भूमिका है। मोबाइल के माध्यम से तीव्र रूप से सूचना के आदान-प्रदान की सुविधा ने अपराधियों का मनोबल बढ़ा दिया है। कानून और पुलिस से बचने के लिए अपराधियों द्वारा सिम बदल-बदल कर मोबाइल का उपयोग किया जा रहा है, जिस कारण अपराधियों को पकड़ने में समय लग जाता है।

ऐसा भी देखा जाता है कि जेल में बन्द अपराधी मोबाइल के माध्यम से अपराध को निर्देशित करते रहते हैं। यद्यपि यह एक गम्भीर विषय है, जो हमें यह सोचने के लिए बाध्य करता है कि जेल में अपराधियों को मोबाइल कैसे मिल जाता है, निश्चित रूप से यह प्रशासन व्यवस्था की असफलता व कमजोरी है। मोबाइल के माध्यम से हो रहे अपराधों पर नियन्त्रण हेतु आज इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस और ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम पर सरकार को अपने बजट का बड़ा हिस्सा खर्च करना पड़ता है।

मोबाइल के माध्यम से लड़कियों के एमएमएस बनाना, गन्दी गन्दी बातें करना आदि जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं, जो हमारी संस्कृति का क्षरण कर रही हैं। मोबाइल आज वैचारिक प्रदूषण का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है। मोबाइल फोन में उपलब्ध सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाह फैलाना, महापुरुषों के बारे में भ्रांतियाँ फैलाना, सामाजिक सौहार्द बिगाड़ना, दूसरे को परेशान करना, धमकाना आदि सामान्य बातें हो गई हैं। इसके माध्यम से लोगों को अधूरा ज्ञान मिलता है, जो समाज के लिए अत्यधिक घातक सिद्ध हो रहा है।

मोबाइल के बढ़ते प्रयोग के कारण आज हमारी संस्कृति पतन की ओर अग्रसर है। लोग अपने संस्कार भूल गए हैं और एक ही घर में रहकर भी साथ नहीं रह रहे हैं, क्योंकि सब अपने-अपने मोबाइल में वयस्त रहते हैं। घर के बड़े-बुजुर्ग स्वयं को अकेला महसूस करते हैं। मोबाइल के बढ़ते प्रयोग के कारण आज के समाज में रचनात्मकता कम होती जा रही है,

साथ ही मोबाइल ने लोगों की चिन्तनशीलता और ध्यान शक्ति को भी कम कर दिया है। मोबाइल ने सबसे अधिक छात्र जीवन को दुष्प्रभावित किया है, क्योंकि ध्यान और चिन्तन छात्र के लिए सबसे अधिक आवश्यक है तथा मोबाइल इसके मार्ग में सबसे बड़ा बाधक है।

मोबाइल के कारण छात्रों में एकाग्रता नहीं बन पाती है, जिस कारण उनकी पढ़ाई बाधित होती है तथा छात्र पोर्नोग्राफी भी देखने लगते हैं, जिससे उनकी मानसिक क्षमता भी प्रभावित होती है। साथ ही छात्रों के द्वारा महँगे मोबाइल की माँग करने के कारण घर का बजट भी बिगड़ जाता है ।

मोबाइल हमारे स्वास्थ्य को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाता है। मोबाइल से निकलने वाली तरंगें हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी घातक होती हैं। मोबाइल फोन पर सिनेमा देखने से आँखों के खराब होने की सम्भावना बढ़ जाती है । उसी प्रकार इयरफोन के माध्यम से गाना सुनकर लोग अपने कानों पर कुप्रभाव डालते हैं। इसके अतिरिक्त सिरदर्द, थकान, चक्कर आना, रक्तचाप, हृदय रोग आदि जैसी समस्याएँ उत्पन्न करने में मोबाइल की अहम् भूमिका होती है ।

लोग मोबाइल में इतने व्यस्त हो चुके हैं कि वे सड़क व रेल दुर्घटना आदि के शिकार हो रहे हैं, क्योंकि लोग कानों में इयरफोन लगाकर रेलवे लाइन या सड़क को पार करने की कोशिश करते हैं। मोबाइल के कारण लोग अपना कीमती समय व धन दोनों व्यर्थ कर देते हैं। लोग अनावश्यक कॉल, मैसेज, सोशल मीडिया आदि में व्यस्त रहते हैं। साथ ही मोबाइल कम्पनी व ऐप व्यक्ति के निजी जीवन पर निगरानी रखते हैं, जिससे निजता के अधिकार के उल्लंघन होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

उपसंहार

इस प्रकार हम देखते हैं कि मोबाइल हमारे जीवन को काफी सहज करते हुए हमारी जीवन-शैली में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया है, लेकिन साथ ही कुछ नकारात्मक पहलुओं को भी जन्म दिया है, जिस कारण हम अपनी संस्कृति, रचनात्मकता आदि से दूर हो रहे हैं। निश्चित रूप से मोबाइल आज हमारे जीवन का सबसे अनिवार्य अंग बन गया है अर्थात् मोबाइल के बिना आज जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है, लेकिन मोबाइल के दुष्प्रभावों को देखते हुए हमें सचेत होकर इसका प्रयोग करने की आवश्यकता है।

ZONE TECH

10. धर्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है और विज्ञान के बिना धर्म अन्धा है

उपर्युक्त कथन "धर्म के बिना बिज्ञान लंगड़ा है और विज्ञान के बिना धर्म अन्धा हैष महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन के द्वारा कहा गया है। हमारे देश में कुछ प्रान्तों में भी इससे सम्बन्धित प्रसिद्ध लोकोक्ति हैं

''धर्म के बिना विज्ञान न '''''''''''' ज्ञान के बिना धर्म आन्हर छै।''

अर्थात् धर्म और विज्ञान एक-दूसरे के बिना अधूरे है।

धर्म और विज्ञान मानव सभ्यता के दो मूल आधार हैं। अत: दोनों ही मनुष्य के लिए आवश्यक हैं। धर्म के बिना विज्ञान और विज्ञानकेबिना धर्म अधूरा है। धर्म और विज्ञान तभी पूर्ण हो सकते हैं, जब वे एक-दूसरे से जुड़े हुए हो। यदि दोनों को एक-दूसरे का पूरक कहें, तो अतिशयोक्ति होगी।

प्राचीन समय से लेकर आज के युग तक, धर्म और विज्ञान दोनों ही मानव समाज के विकास में अहम भूमिका निभाते रहे हैं। ध र्म मानवता को नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो हमें अच्छे कार्यों की ओर प्रेरित करता है और विज्ञान से हमें विचारशीलता, अनुसन्ध ान और प्रगति की दिशा मिलती है। जहाँ धर्म से मनुष्य अन्दर की सुन्दरता प्राप्त करता है, वहाँ विज्ञान मनुष्य को बाहर से सुन्दर बनाता है। धर्म मानवीय जीवन को एक सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक आधार पर स्थापित करता है, जबकि विज्ञान तथ्यों, प्रमाणों और अनुभवों के माध्यम से ज्ञान को बढ़ाता है। इन दोनों के बिना, मानव समाज की उन्नति और समृद्धि सम्भव नहीं है।

यदि धर्म की बात करें, तो धर्म शब्द की उत्पत्ति श्घृश धातु से हुई है, जिसका अर्थ होता है - धारण करना अर्थात् ऐसे सत्कर्म या गुण (जैसे-सत्य, अहिंसा, दया, न्याय, सदाचार, परोपकार आदि) जो धारण करने योग्य हो तथा जिसके द्वारा समाजोपयोगी तथा आत्मोपयोगी कार्य कर सके वह धर्म है।

धर्म समाज में नैतिकता, सद्भावना, शान्ति और सहयोग को बढ़ावा देता है। धर्म मानवता के मूल्यों को कायम रखता है और लोगों को पारस्परिक सम्बन्धों में सद्भाव और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है। धर्म लोगों को अपने कर्त्तव्यों का पालन करने, समाज को एक सूत्र में बाँधने और समृद्धि की ओर ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

धर्म के अभाव में हमारी जीवनशैली अधूरी है, क्योंकि धर्म हमें अच्छे और सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे हमारा जीवन सार्थक और सन्तुलित बनता है। धर्म हमें नैतिक मूल्यों और मानवता के महत्त्व को समझने में मदद करता है। धर्मविहिन मनुष्य का जीवन अन्धकारमय होता है। आधुनिक समय में कुछ लोग धर्म को केवल पूजा-पाठ और भक्ति से जोड़ते हैं, परन्तु वास्तविकता में धर्म केवल पूजा-पाठ और भक्ति करना ही नहीं, अपितु मानव-कल्याण करना भी है।

विज्ञान शब्द उपसर्ग और ज्ञान शब्द से मिलकर बना है, जिसका अर्थ विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करना है अर्थात् विज्ञान एक विशेष क्षेत्र है, जो तथ्यों, तत्त्वों, नियमों और प्रक्रियाओं के अध्ययन और अन्वेषण या जाँच के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति करता है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक और सामाजिक घटनाओं को समझना, उनके कारणों को खोजना और उनके परिणामों को समझना है।

विज्ञान समाज के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यह तथ्यों और साक्ष्यों पर आधारित ज्ञान को बढ़ाता है, जिससे मानव समाज की प्रगति होती है। विज्ञान ने चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, जलवायु विज्ञान, जीव विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में अद्वितीय विकास किया है। यह हमें विकास के मार्ग पर ले जाता है और समस्याओं के समाधान के लिए नई दिशाओं को प्रस्तुत करता है। विज्ञान के बिना, हमारा आध ुनिक जीवन सम्भव नहीं है।

अत: धर्म और विज्ञान दोनों ही हमारे लिए बहुत आवश्यक हैं, क्योंकि धर्म और विज्ञान दोनों ही मानवता की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। धर्म और विज्ञान का संयोजन हमें सामाजिक, मानविकी और प्राकृतिक समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है। यदि धर्म हमें त्याग, आत्म-ज्ञान और आत्म-विकास की ओर ले जाता है, तो विज्ञान हमें आस्था के साथ सत्य की खोज के लिए प्रेरित करता है और सत्य से अवगत कराता है। यदि कोई समाज या व्यक्ति केवल धर्म पर ध्यान केन्द्रित करता है, तो उसमें ज्ञान का अभाव होता है और वह अत्यधिक आध्यात्मिक हो जाता है। वह संसार से परे हो जाता है और यदि कोई समाज केवल विज्ञान पर ध्यान केन्द्रित करता है, तो उसमें मानकता, नैतिकता और आध्यात्मिकता का अभाव हो जाएगा। इससे मनुष्यत्व का ह्रास होगा। अत: दोनों में से किसी भी एक के अभाव में समाज असन्तुलित हो जाएगा।

विज्ञान और धर्म दोनों का सहयोग हमें विश्वास, नैतिकता और विकास की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करता है। विज्ञान की जटिलता और धर्म की साधना, ये दोनों ही हमारे समाज के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि धर्म और विज्ञान का मूल उद्देश्य मानवता का कल्याण है और दोनों का सहयोग ही हमें इस मार्ग पर आगे बढ़ने में मदद कर सकता है।

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने विज्ञान को अपनी धार्मिक आध्यात्मिकता के साथ जोड़ा और लोगों को इसके व्यावहारिक ज्ञान के बारे में भी शिक्षा दी। उन्होंने समझाया कि विज्ञान को सुव्यवस्थित ढंग से प्रयोग करके मनुष्य के कल्याण में लगाया जाए, तो यह धर्म बन जाता है। इसलिए हमारे वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि धार्मिक ग्रन्थों में विज्ञान पाया गया है। हालाँकि, आज के समय में कुछ लोग विज्ञान को

चमत्कार और धर्म को आडम्बर समझते हैं। इससे उन्हें यह लगता है कि विज्ञान और धर्म साथ-साथ नहीं रह सकते, लेकिन सच्चाई यह है कि विज्ञान और धर्म दोनों ही मानव जाति के कल्याण के लिए हैं और यदि सही सन्दर्भ में इनका उपयोग किया जाए, तो ये मानव के लिए कल्याणकारी होते हैं।

धर्म और विज्ञान को लेकर स्वामी विवेकानन्द के विचार हैं कि धर्म और विज्ञान दोनों दर्शन से निकलते हैं। विज्ञान की उपयोगिता, पृथ्वी पर जीवन की श्रेष्ठता के लिए प्रकृति की शक्तियों का उपयोग करने और ज्ञान के रास्ते ब्रह्माण्ड की वास्तविकता से परिचित होने में है। उनका मानना था कि विज्ञान धर्म का दूत है। धर्म जहाँ सत्य की खोज के लिए अध्यात्म का मार्ग अपनाता है, वहीं विज्ञान जाँच या अन्वेषण और तकनीकी औपचारिकता के माध्यम से सत्य की खोज करता है। उनकी दृष्टि में, धर्म जीवन की सार्थकता और आध्यात्मिक अनुभव की खोज करने का मार्ग है, जबकि विज्ञान यह साबित करता है कि उस सार्थकता और आध्यात्मिकता का आधार क्या है? इस प्रकार, उनके विचारों में धर्म और विज्ञान दोनों का महत्त्व था और वे एक-दूसरे के सम्पूरक हैं।

स्वामी विवेकानन्द का ये मानना था कि अन्तर्ज्ञान ज्ञान का एक वैध रूप है। यह अन्तर्ज्ञान ही हमें सत्य के स्वरूप को समझाता है और हमें जीवन की वास्तविकता के साथ जोड़ता है। इस रूप में, विज्ञान और धर्म का संयोजन हमें एक समृद्ध और उत्कृष्ट जीवन की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करता है।

इस प्रकार, धर्म और विज्ञान दोनों ही हमारे जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। ये दोनों सही और सन्तुलित जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। धर्म और विज्ञान का संयोजन हमारे समाज की प्रगति और विकास में मदद करता है। इसलिए हमें धर्म और विज्ञान के बीच सन्तुलन बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए और सही सन्दर्भ के साथ इसका प्रयोग करना चाहिए।

ZONE TECH